Dedicated Respectfully

to

Our beloved **Amiji,**

the noble lady whose life of **Sadhan** *and service has been a living example of the vitality and the vigour of the faith of* **Nava-Vidhan** *in Sind.*

(ब्रह्मानंद केशव चंद्र सेन)

Keshub Chunder Sen

The Founder of Nava Vidhan (Harmony of Religions)

प्रस्तावना.

एक साधक का वचन है के, "संगीत द्वारा ही मनुष्य प्रभु के चरण सहज से छू सकता है." यह वचन यथार्थ है; क्योंके मन प्रभुको खोजना में इधर उधर भटकता है, लेकिन प्रभुकी तरफ जो रस्ता जाता है उस पर चलने के लिये पहिला कदम येही है के अपने आप को भुल जाना.

और जब हम संगीत गाते या सुनते है तो अपने आप की सुध बुध नहीं रहती. इस कारण से ही भारत वर्ष में हमेशा कीर्तन पर ज्यादा जोर दिया गया है.

यह "प्रेम माला" जिसके संगीत बहुत सारे साधु और साधकाओं के भजनों से संग्रह किये गये हैं: सो हृदय भरे प्रेम से पाठक गणों की सेवा में भेटा की जाती है.

इस "प्रेम माला" का एक विशेष गुण यह है के, इसमें कुछ बंगाली भजनों का अनुवाद हिन्दी में दिया गया है, और जिन्होने बंगाली भजन कभी सुने हैं उन को मालूम है के वह कैसे रस भरे सुर से गाये जाते

हैं. इस लिये उन भजनें का सुर और ताल बंगाली भजनें का ही रखा है. जिस तरह से पाठकगण उस रस को भी लाभ कर सकें

आशा है के इस "प्रेम माला" को पाठकगण प्रेम और आदर से स्वीकार करके, साधन का उपाय बनावेंगे और अपने जीवन की उन्नति करेंगे.

अब ईश्वर से प्रार्थना है के पाठकगणें के दिलों में अपना प्रेम प्रकाश करके उसी भाव को प्रसिद्ध करें जिससे भरकर साधक गणों ने यह भजन उच्चारण किये थे.

प्रकाशक
प्रेमदास

नवविधान ब्रह्म समाज
मीशन रोड, कराची (सिंध)
२–अक्टोबर १९२७

अनुक्रमणिका.

ब्रह्मोत्सव निकट आगया था और सारा पुस्तक उस समय तक नहीं छप सका, इसलिये एक भाग पहिले छपवाके सज्जनों की भेट किया गया था, और दूसरा भाग पीछे छापा गया, इस लिये अनुक्रमणिका भी दो भाग में लिखी गई है.

☞ *This book can be had from :—*

1. PREMDAS (Dr. Reuben), N D BRAHMO SAMAJ, Mission Road, KARACHI.
2. Messrs. N. H. Punjabi & Co. BUNDER ROAD, KARACHI.

☞ *This book can be had from —*

1. PREMDAS (Dr. Reuben), N D BRAHMO SAMAJ, Mission Road, KARACHI.
2. Messrs N. B. Punjabi & Co. BUNDER ROAD, KARACHI

द्वितीय अनुक्रमणिका.

श्लोक

सुविशालमिदं विश्वं पवित्रं ब्रह्ममन्दिरम् ।
चेतः सुनिर्म्मलस्तीर्थं सत्यं शास्त्रमनश्वरम् ॥
विश्वासो धर्म्ममूलंहि प्रीतिः परमसाधनम् ।
स्वार्थनाशस्तु वैराग्यं ब्राह्मैरेवं प्रकीर्त्यते ॥

Pandit Gour Govind Roy

ये विशाल विश्व पावन ब्रह्म निकेतन ।
नित्य शास्त्र सत्य, तीर्थ निर्मल ही मन ॥
है विश्वास धर्म मूल, प्रीति ही साधन ।
स्वार्थ नाश है वैराग, कहें ब्राह्मगण ॥

प्रेम माला

प्रथम अध्याय

उद्बोधन

१. वरहंस ताल धमाल (तर्ज—नाथ तेरी रचना)

चलो मन हरि संग वास करो रे ॥ टेक ॥
सुंदर जगमें व्यापी रह्यो प्रभु, वामें आश धरो रे ।
सरल भावसें हरिगुण गाओ, पल पल शांति भरो रे ॥ १ ॥
दृढ विश्वास श्रोर प्रेम उनपर, हर प्रसंग धरो रे ।
अटल रहो हरि के चरणन में, कबहुँ न उनसे टरो रे ॥ २ ॥
प्रभु राज में आय के प्योर, क्यों न आनंद करो रे ।
सबही आत्मा प्यासी इसी का, क्यों नहीं पान करो रे ॥ ३ ॥

२. भैरवी—ठुमरी

धन्य होगा मानव जनम, गाओ रे ब्रह्म नाम ।
गाओ नाम उथलेगा सुधासिंधु, पियो रे भाई अविराम ॥गाओ॥टेक॥
नाम करो ध्यान, नाम करो गान, नाम से ही होगा परित्राण ।
नाम प्रभाव से ही हृदय मे, देखोगे तुम स्वर्गधाम ॥ गाओ ॥ १ ॥
दुखी का है संबल ये नाम, पापी तापी का प्राणाराम ।
ये नाम देवों को है प्यारा, बोलो रे मन अविराम ॥ गाओ ॥ २ ॥

३. खमाच, ताल दादरा

आओ बहिनो भाईयों मिलके, करें हरि भजन को ॥ टेक ॥
हरि तात मात भाई, और सखा बंधु सहाई ।
करें वो सदा भलाई, भूलो नहीं उनको ॥ १ ॥
महिमा उसकी देख, जरा तो करो विचार ।
ज्योति देके सूर्यको, दूर कियो अंधार को ॥ २ ॥
चंद्र तारे किस तरहें, रहते हैं गगन मे ।
पशु पची फूलों में, देखो उसके दीदार को ॥ ३ ॥
अन्न जल देके, रखता है हमको अदिन ।
ऐसे हरिको छोडके, क्या ढुंढें हम और को ॥ ४ ॥

---

४. विभास. (तर्ज—आनंदे गान करो)

प्रभु तेरा सखा, प्रेम जाका भरा, आज देखो यहा, आख खोलो खोलो।
सब पाले वही, पूर्ण जाकी दया, देख सारी भया, प्राण मेरो मेरो ॥टेक॥
विधाता हरि, सृष्टि सारी करी, ध्याव याही घडी नींद तोडो तोडो ।
नर नारी सभी, आज आओ अभी, देर लावो नहीं ध्यान जोडो जोडो ॥१॥
भवसिंधु तरी एक वोही हरि, और नाहीं कोई साथ जानो जानो ।
जग याके बिना शांति देगाहि ना, क्यों तुं भूला मना बात मानो मानो ॥२॥
अब आओ हरि देर कोइ करी, नाव टूटी पडी सिंधु माहीं माहीं ।
प्रभु तारो अभी, नहिं तो डुबे सभी, एक तुंही गति, और नाहीं नाहीं ॥३॥

---

५. कालंगडा. (तर्ज—अब हरि की धूम)

मन पांखी चलो चले घरकों रे, अब त्यागें यह देह पिंजरको रे ॥टेक॥
विष खाया सदा यहां रहके रे, नहीं भोगा कभी सुधारस को रे ॥१॥
बहु पाखी सुखी रहे जिसमें रे, चल जावें उसी हरिपुरको रे ॥२॥
चल खावें वहा भमि फल को रे, जल पीवेहि प्रेम सागरको रे ॥३॥
अब कुंडी खुले ही पिंजरकी रे, हम भागे तजें अडम्बरको रे ॥४॥

६. पीलु. ताल पोस्त (तर्ज—हमन आशक दिवाने)

हमें उद्धार करने का, प्रभुही एक आला है ।
दिया जिसने हमें जीवन, जगत से जो निराला है ॥टेक॥
न लाके ध्यान में कुछ भी, हमारे इन गुनाहों को ।
हमें जिसने हमेशा हि, मुसीबत से निकाला है ॥१॥
रहा करता है जो हरदम, हमारे साथ दुनियां मे ।
रहम जिसका सभीने हि, हमेशा देखा भाला है ॥२॥
हमारे और उसके ही, न कोई बीच मे आता ।
हमारी जान की है जान, गो जाहिर निराला है ॥३॥
इसीसे छोड दो सारे, दुनियावी वसीलो को ।
चलो सीधे दरेहक को, खुला देखोहि ताला है ॥४॥
लगती है कुंजी प्रेम की, खोलो तुम वह अभी चाहो ।
सभी हादी पैगम्बर ने, इसीसे खोला ताला है ॥५॥

७. झींट खयरा.

नित्य नए सुर मधुर मधुर, नूतन विधान गान ।
विविध राग रागिनी मिलके, अनंत मिलन तान ॥टेक॥
दर्शन विज्ञान, आगम्य पुराण, गाओ सब सम स्वरे ।
गाओ सभी मिलि भक्तों की संग ले, हरे नाम हरे हरे (हिंदु मुसलमान)॥१॥
सुन के यह गीत, होएगा मोहित, गलके कठोर प्राण ।
उठेंगे बजके हृदय यंत्र, नाम सुधा कर पान ॥२॥
कहत है केशव, नहीं सुना ये कब ओर नहीं था अनुमान ।
(यह न दूसरे मुख से सुनी हुई कथा)
ब्रह्म कृपा से ही देखा हुं जाना हुं, करता हुं यह साक्ष दान ।
जीवने मरने करता हुं यह साक्ष दान ॥३॥

---

८. भैरवी. (तर्ज—मिल मिलके प्रभू तव)

राम बिना को नाही रे साधो, राम बिना को नाही ।
आगे रामा पाछे रामा, रामा बोले मांही ॥टेक॥
उत्तर रामा दखन रामा, पूरब पछन रामा ।
स्वर्ग पाताल महियल रामा, राम सगल बिसरामा ॥१॥
ऊठत रामा बैठत रामा, सोवत जागत रामा ।
राम बिना को ओर न दीसे, सगल राम को कामा ॥२॥
कहत कबीरा रामके परसे, आपा ठहर न पावे ।
एक राम मिल भजे निरंतर, एक राम मिल गावे ॥३॥

---

९ गजल. ताल धमाल (तर्ज—शरण में आ पड़ा)

प्रभु सबको बुलाते है, यही संवाद पाया है ।
सभी को प्रेम रस देंगे, इसीका न्योता आया है ॥ टेक ॥
चलो सब देवगण जल्दी, काहे को देर लाई है ।
प्रभु ने द्वार खोला है तभी डंका बजाया है ॥१॥
पिपासा दूर हो सारी, मिले जब प्रेम की बारी ।
यही तो जान कर प्रभु ने, हमें सबको बुलाया है ॥२॥
अभागी कौन है ऐसा, रहे इस दम भी जो प्यासा ।
भला ऐसा समय फिर घोर, जग में कौन आया है ॥३॥
हुए हैं मग्न देखो सभी, प्याले ही हरि रस के ।
तभी तो नाचना गाना, हरि यश का सुहाया है ॥४॥

१०. खमाच. दादरा (तर्ज—आओ बहिनो भाईयो)

आओ प्राण खोलें, प्राणपति को पुकारें जी ।
आवेंगे हमारे प्रभु, प्राण के मझारे जी ॥ टेक ॥
सारी त्याग चिंता आज, प्रभुको धियावे जी ।
पावें शांति सारे जन, जाय दुःख सारे जी ॥ १ ॥
पावें प्रेम बारी आज, सब एक बारी जी ।
होवें पाप ज्वाला सब, शांत ही हमारे जी ॥ २ ॥
जावें दुःख जीना हो, सुफल ही हमारे जी ।
प्राणों में बसावें प्रभुको हि, आज हम सारे जी ॥ ३ ॥
कैसा जिया जावे कहो, प्रभु को बिसारें जी ।
ताही को पुकारें भर, प्राण आज प्यारे जी ॥ ४ ॥

११ वेहाग. त्रिताल.

प्राणी हरि शरणाई आरे ।
सद् चित् आनन्द रूप है जिनका, सकल जीवन आधारे ॥ टेक ॥
जाकी महिमा कीर्त्ति श्रवण से, उतरे नर भव पारे ।
माया मोह अंधार जगत् में, ज्योतिर्मय उजियारे ॥ १ ॥
सर्व ज्ञानमय अन्तर्यामी, परिपूरण जग सारे ।
दीनदयाल परम करुणामय, कभी किसे न विसारे ॥ २ ॥
हे सब भ्रात और भगिनीगण, चलो हरि दरबारे ।
छोड वासना सकल जगत् की, करो भक्ति उपहारे ॥ ३ ॥

१२. तोडी.

प्रीति प्रभु से जोड रे मन, प्रीति प्रभु से जोड ॥ टेक ॥
कोई बिना हरि मीत नहीं है, ना मुख उनसे मोड ॥ १ ॥
सुफलित जीवन पूर्ण मनोरथ, होवत कहां है और ॥ २ ॥
अमृतरूप जगत बिहारी, संकट काटे तोर ॥ ३ ॥
आय बसे प्रभु भीतर तेरे, पकड उन के गोड ॥ ४ ॥

१३. सोरठ. (तर्ज—अंतर्यामी प्रभु प्रकृ)

हरि नाम सिमर दम दम से, तेरा काम नहीं चिंता गम से ॥ टेक ॥
जो हरदम हृदय हर ध्यावे, उस का काम नहि कभि जम से ॥ १ ॥
तूं हरि का तो हरि है तेरा, तेरा काम नहि आलम से ॥ २ ॥
हरि का प्यारा तो कुल का प्यारा, जिस पे करम किया है रहम से ॥ ३ ॥
सुरत भज ले बिहारी को हर दम, हर श्वास श्वास दम दम से ॥ ४ ॥

—— o ——

१४. गजल—ताल धमाल.

अगर है पेम मिलने का, तो दुनिया से क्युं शरमावे ॥ टेक ॥
पिता प्रल्हाद को मारा नाम हरि का न छोडा है ।
प्रभु रक्षा करे जिनकी, तो मन में कौन डर पावे ॥ १ ॥
चला बन में तपस्या को, मना ध्रुव का किया राजा ।
लगन जिस को लगी पूर्ण, उसे फिर कौन अटकावे ॥ २ ॥
सभा के बीच द्रुपदी ने, पुकारा नाम माधव का ।
भरोसा है जिसे हरि का, क्यों दूजे की शरण जावे ॥ ३ ॥
सदा सत्संग में जाकर, करो हरि का भजन प्यारे ।
वो ब्रम्हानंद आता है, वकत फिर हाथ ना आवे ॥ ४ ॥

१५. ठुमरी

ब्रम्हध्यान ब्रम्हज्ञान, ब्रम्हानंद रस पान, ब्रम्हनाम करो यह सार (भाई रे)।
ब्रम्हकृपा ही केवल, जीवन का सबल, नाम बिना गति नाहिं ओर ॥ टेक ॥
बर्से ब्रम्हकृपाबिंदु, उच्छले आनंदसिंधु, हावे नव जीवन रो पार (भाई रे)।
पाषाण हृदय गले, मरुभूमी जल से भरे, नाश होत वासना बिकार ।
सारे जनम लिये नाश होत वासना बिकार ॥ १ ॥
मुक जन संगीत गाये, बाहिरा सुनत पाये, अंधा देखे पंगुल गेडा जाय।
मृत होय संजीवित, शुष्क तरु प्रफुल्लित, निमिष पतित तारा जाय ।
हरि हरि बोले निमिष पतित तारा जाय ॥ २ ॥
प्रेमदाता प्रेमचखे, देखे स्वर्ग ब्रम्हबचे, आशावाणी कहे बारम्बार ।
नाहिं रहे भेदा भेद, सुर नर मिले अभेद, एक ही में हागे एकाकार ।
परिनामें एक ही में हाग एकाकार ॥ ३ ॥

१६. कसूरी त्रिताल (तर्ज—सुकृत करले राम)

भक्त मिलि आज आनंद रोही, गाओ हरिगुण गान ॥ टेक ॥
शुद्ध करो चित्त आय सबही, पाके कृपा रसपान रे ।
दर्शन लो आज धाय हरि का, लेओ जड़ा सब प्राण रे ॥ १ ॥
ताप हरें प्राण शांति कराबे, भक्ति भरे करें ध्यान ।
आय हरि आज ज्योति प्रकाशे, दीसें प्रभु मुख भान ॥ २ ॥

---

१७. बाहार. झांपताल.

अचल, घन, गहन गुण गावे तुम्हारे ।
गावे आनंदे रवि शशि चन्द्र तारे ॥ टेक ॥
सकल तरुराजि साजी फुल फल गावे रे ।
विहंग कुल गावें आजि मधुर तान सारे ॥ १ ॥
गावे जीव जंतु आजि जो जिस ठिकाने ।
जगत पुरवासी सब गावें अनुरागे ॥ २ ॥
मेरे हृदय गाले तू भी सबके साथ पुकारे ।
बोलो नाथ नाथ बोलो नाथ प्राण हमारे ॥ ३ ॥

---

१८. सोरठ. (तर्ज—तेरी शरण में आयके)

गाओ रे जगपति जगवन्दन, पूर्ण पुरुष निरंजन रे ॥ टेक॥
जगत विषय चिन्ता सब त्यागो, प्रेम करो अवलम्बन रे ।
अन्तर बाहर इस मन्दिर के, देखो मूर्ति मोहन रे ॥ १॥
स्नेहमयी जगजननी है प्रस्तुत, करने को आलिङ्गन रे ।
प्रेम से पुलकित हो नरनारी, करो सब आत्म समर्पण रे ॥ २॥
शोभा राशि पुष्प लता तुम, गाओ भृग पक्षीगण रे ।
साधु भक्त ऋषि मुनि सकले, गाओ राजा त्रिभुवन रे ॥ ३॥
सकल संग हम भी सब मिल करें, भक्ति प्रीति निवेदन रे ।
जाके नाम दयामय गुण से, पाप ताप होवें भञ्जन रे ॥ ४॥

---

१९. मुल्तानमल्लार—एकताल.

चलो भाई चलो मा के पास जाई ।
नींद में माया रखे, मा का मुख देखे, सुने मिष्ट रूप कथा उस ठाई ॥ टेक॥
कितनी मिट्ठी कथा जाने जननी, सुनत सुनत बीत जाय रजनी ।
सुधामाखा है यह श्रीमुख बाणी, देवगण होत मोहित सदाई ॥ १॥
देखो कोई नींद में न पड़ा रहे, जाग रहके चित्त में हु हुं दीजिये ।
संसार विमाता भले मेरे पुकारे, कौन सुने उसकी कथा दुखदाई ॥ २॥
सुनेंगे हम सब जाग के यामिनी, अपरूप नवविधान कहानी ।
प्रेमदास बोले अमृत भाषिणी, मां बिना हमारा और नहीं कोई ॥ ३॥

---

२०. झिंझिट. ठुमरी.

रखो रे मन हरि चरणन में ध्यान, जो है प्राणों का प्राण ॥ टेक॥

इस देही के मंगल कारण, अन्न जल दीनो दान ।
ओर जीव के मंगल कारण, आप प्रभु देत ज्ञान ॥ १ ॥
अपना बोझा प्रभु पर डालो, आज्ञा प्रभु की मान ।
भक्ति भाव से विश्वास धारो, प्राण करो कुर्बान ॥ २ ॥
बालक होय के परम पिता का, सदा रहो सावधान ।
उठत बैठत सोवत जागत, करो आनंदे गान ॥ ३ ॥

---

२१. झिंझिट—एकताल.

दयामय हरि दयामय हरि, जपो रे मन रसना ।
हरि नाम अमृत पान करिले, घुचिबे पाप यातना ॥ टेक ॥
हृदय करो हरि रूप ध्यान, चिदानन्द प्राणाराम ।
हरि पाद पद्मे शरण लईले, थाकिबे रहे भय भावना ॥ १ ॥
शयने सुपने बोलो रे नित्य, एकत्र असार हरि नाम सत्य ।
होवे नामे गति, नामे मुक्ति, नामे पूर्ण कामना ॥ २ ॥
असार वासन सब परिहरि, दिवानिशी मुखे बोलो हरिहरि ।
विपदे संपदे हरि नाम मंत्र, भुलोना कभू भुलोन ॥ ३ ॥

---

२२. गजल. (तर्ज़—तुं चातक क्यों समझे)

प्रभु प्रेमानंद धारा, जग में जाती है बही ।
आओ सभी नरनारी, नैन जुड़ावे तो सही ॥ टेक ॥
आनंद से सब बन, फूल रहा घन घन ।
आनंद से बाहें नदी, हरि गुण गाया कहीं ॥ १ ॥
हरि केरे प्रेम स्रोत, भरे विश्व पोत पोत ।

आओ यह अमृत धारा, रखो तो हृदय माहीं ॥ २ ॥
करो आनंद रस पान, प्रेम मग्न होवे प्राण ।
जलावें न जग ताप, सुखसवाद है यहीं ॥ ३ ॥

२३. कीर्तन (घघरा).

हरिरस मदिरा पिये मन मानस मातें रे ।
(एक बार लुटह अवनितल, हरि हरि बोले कांदे रे
गति कर कर बोजे, कांदे रे ॥ टेक ॥
गभीर निनादे हरि-नामे गगन छाओ रे ।
नाचो हरि बोले,-दु बाहु तुले, हरिनाम विलाओ रे ॥ (लोकेर द्वारे द्वारे)
हरि प्रेमानंद रसे, अनुदिन भासें रे ।
गाओ हरिनाम, हँओ पूर्ण काम, नीच वासना नाश रे ॥ १ ॥

२४. सोरठ. (तर्ज—भज मन प्राण)

शरण गहो प्रभु केरी प्यारे ॥ टेक ॥
जो प्रभु सब जग प्रति पालक, पापीन अधमोद्धारे ॥ १ ॥
जो प्रभु सब का दुख हरता, सबहीके दुख टारे ॥ २ ॥
जो प्रभु देत अनन्त पदार्थ, अगनित डूबत तारे ॥ ३ ॥
जो प्रभु नितही रहत साथ हि, देत है अमिट सहारे ॥ ४ ॥
जो प्रभु हि शक्ति युक्त है जाके, धर्मीन में सब हारे ॥ ५ ॥
जो प्रभु एक अकेला न्यारा, रचन करत जग सारे ॥ ६ ॥
जिस प्रभु के जग भीतर, शोभित अद्भुत ज्ञान हैं न्यारे ॥ ७ ॥

२५. देस—एकताल.

राम भजो नरी नारी (रे भाई) ॥ टेक ॥
जो है सब का प्राण आधारा, सकल जीवन सुखकारी ।
प्रेम का जिसके अन्त न आवे, थकित बुद्धि हमारी ॥ १ ॥
हरि भजन बिन कठन है तरना, यह भवसागर भारी ।
एक प्रभु का सिमरण करके, तर गई गनका नारी ॥ २ ॥
तुम भी उससे प्रीति करके, लेओ जन्म सुधारी ।
घट घट में जो व्यापक सब के, हौं दास पर बलिहारी ॥ ३ ॥

२६. रागिनी खमाच—चौताल.

गाओ रे प्रभु ही का नाम, रचा जिसने विश्व धाम ।
दया का जांके नहीं विराम, झरे अविरत धारे ॥ टेक ॥
ज्योति जांकी गगने गगने, कीर्त्ति भांति अतुल भुवने ।
प्रीति जांकी पुष्पित बने, कुसुमित बन सारे ॥ १ ॥
जाका नाम पारस रत्न, पापी हृदय ताप हरण ।
प्रसाद जाका शान्ति रूप, भक्त मन में आवे ॥ २ ॥
अन्त हीन निर्विकार, महिमा जांकी है अपार ।
जिसकी शक्ति वर्णन से, बुद्धि वचन हारे ॥ ३ ॥

२७. कालंगड़ा. (तर्ज़—प्रभु तुम बिना)

चलो चलो नर नारी हरि के निकट चलो रे चलो ।
वह देन सुख है तुमको अतिहि भलो रे भलो ॥ टेक ॥
दुख पावे हि तुम जितही विपद पड़े रे पड़े ।

तज आसा तुम क्यों रे अब हस्त मलो रे मलो ॥ १ ॥
नहिं त्यागे प्रभु उसे रे, जो उसकी शरण गहे रे ।
तब द्वारे उनके पड़न, नहिं टला रे टलो ॥ २ ॥
यदि तुम चाहो, भवसिंधु तरन को ।
तब उसमें प्रभु के बिन, कदहुं न हलो रे हलो ॥ ३ ॥
प्रभु देखो अब तुमरे पास हि है खड़े ।
करुणा से जग पालत वही सकलो रे सकलो ॥ ४ ॥

---

२८ प्रभात. (तर्ज—जाग जाग मन)

हरि महिमा गुण गाओ रे साधो, सब मंगल जासे हावे रे ।
त्रिभुवन पालन ब्रह्मसनातन, सच्चिदघन पद ध्याओ रे ॥टेक॥
प्रेम भक्ति से पुन्य तीर्थ में, तन मन सेही नहाओ रे ।
परमामृत पद प्राप्त करन को, हरि शरणों में आओ रे ॥ १ ॥
नीच कर्म को त्यागन करके, मंगल मार्ग हि जाओ रे ।
परमात्म परब्रह्म पदाब्जे, प्रीति पुष्प हि चढाओ रे ॥ २ ॥

---

२९. पीलू.

शरण गहो उस प्रभु की भाई, जासु दया वरणी नहिं जाई ॥ टेक ॥
एक वही सब को प्रतिपालक, महिमा जासु रही जग छाई ॥ १ ॥
राम कृष्ण जाकी स्तुति कीनी, नानक ने वरणी प्रभुताई ॥ २ ॥
जाहि उपास्य महम्मद मान्यो, ईसा भक्ति करि चितलाई ॥ ३ ॥
जासु विशुद्ध भक्ति के कीने, पापी भवसागर तरजाई ॥ ४ ॥

---

३०. आलेया—कवाली.

अंदर के अंदर जो है, वह भूलो ना रे भाई ।
संग उसी के रहने से, पाप ताप दूर हो जाई ॥ अंदर ॥ टेक॥
हृदय का वह प्रिय धन, समान कोन सहाई ।
इस प्राण सखा बिना, सुख शान्ति देगे कोन भाई ॥अंदर॥ १॥
इतनी जिसकी है करुणा, उसे हम कैसे भूला जाई ।
उसको छोडके, भवसागर में केसे थाग पाई ॥ अंदर॥ २॥

३१. सिंधुखमाच एकताल.

गाओरे आनंदे सबे "जय ब्रह्म जय" ॥टेक॥
अनंत ब्रह्मांड ओरे, गाईछे अनंत स्वरे ।
गा'य कोटी चन्द्रतारा "जय ब्रह्म जय" ॥१॥
जय सत्य सनातन, जय जगत कारण ।
ज्ञानमय विश्वाधार विश्वपति जय ॥२॥
अच्युत आनंदधाम, प्रेमसिंधु प्राणाराम ।
जय शिव सिद्धिदाता मंगल आलय ॥३॥
भुवन विजयी नामे, च'ले जावो शांतिधामे ।
"ब्रह्मकृपा हि केवलं' कि भय कि भय ॥४॥
हे प्रभु दीन-शरण, पाप-संताप-हरण ।
अधम सताने नाथ, देओ पदाश्रय ॥५॥

३२. कस्तूरी. (तर्ज—सुकृत करले राम)

अमृत धारा बहे रे प्यारे ।

पीला तात प्यास भर अपनी, आनंद जीव लह रे ॥ टेक ॥
शीतल ज्ञान गात जिय केरे, पापाग्नि न दहे रे ।
जग तृष्णा बिन प्रेम प्याला, कैसे तात सहे रे ॥ १ ॥
अमरराज जगनाथ रैन दिन, लोक परलोक करे रे ।
अगनित रूप प्रकाशित सबही, हरि कृपा दरस रहे रे ॥ २ ॥
हृदय राज में प्रेम सहित प्रभु, शान वचन ही कहे रे ।
अतुल भक्ति के श्रोत उघारो, कृपा शब्द भये रे ॥ ३ ॥

३३ तिलंग

करो ध्यान सदा शुभ भाई होवे जीवन सुफल सदाई ॥ टेक ॥
भव भव भावे प्रेम अनुरागे, गाओ यश प्रभु का सुजागे ।
परम सुंदर चरणों में लागे, करो जतन तन मन लाई ॥ १ ॥
हृदय भूषण हे परमेश्वर, हृदाधार है हृदेश्वर ।
सदानंद हैं जगत गुरु रहो वाके शरणाई ॥ २ ॥
मिले शांति सरोवर याहि, अब पी लो प्राण लगाई ।
भक्ति भावे प्रेम से गाई, रहे प्यास सदा तृपताई ॥ ३ ॥

३४. गज़ल (तर्ज़—खुदा के सिवा)

ऐ दिल तेरी बुराई को, कब तक सहा करूं ।
मर्ज़ी खुदा की छोड के, किस का कहा करूं ॥ टेक ॥
हुक्मे खुदा को तोड़ के, दुनिया में बिस्मिला ।
बाहिरी फ़ना के मौज में, कब तक बहा करूं ॥ १ ॥
अब चाहता हूं छोड़के दुनियवी ख्वाहिशात ।

याद इलाही में ही, मैं हरदम रहा करूं ॥ २ ॥
बन के मैं अन्दलीब हि, बागे अरम में आ ।
हर शाखे गुल पे बैठके, मैं चहचहा करूं ॥ ३ ॥

---

३५. ख़यरा.

दे देयो यह प्राण, प्राणनाथ के चरण में ।
विवेक वैराग्य होंगे, सहाय साधन में ॥ टेक ॥
छोड़ो जाहिरी धर्म करो, आत्म बलिदान रे ।
रखो नहिं पाप छुपा के, अपने हृदय में ॥ १ ॥
पवित्र हृदय लेके, प्राण में प्राण मिलाके ।
चलो भाई आये सभी, शांति निकेतन में ॥ (उसी अमर भवन में) ॥ २ ॥
जहां है अमर वृंद, देवेंद्र केशवचंद्र ।
है वहां सदा आनंद में, अनंत के ही संग में (चिर प्रेम सम्मिलन में) ॥ ३ ॥

---

३६. सोरठ. (तर्ज—शरण में आ पड़ा)

प्रभु कृपाल सुमर लो प्यारे, संकट क्लेश हरैया हरैया ॥ टेक ॥
पाप दुखित हो हरि हि पुकारो, वहि मन शांत धरैया धरैया ।
दुःख सुख माही वही एक साथी, वही तेरो काम बनैया बनैया ॥ १ ॥
वाही पर तुम राखो भरोसा, तन मन दोष मिटैया मिटैया ।
दुखहारक सुख दाता रे प्यारे, वही है मुक्ति देवैया देवैया ॥ २ ॥
तन मन शांति वही से मिली है, निज बल कुछ न होवैया होवैया ।
वही सब का आश्रय प्रिय मेरे, वही तेरी आस पुरैया पुरैया ॥ ३ ॥

---

३७. धनाश्री. त्रिताल.

जननी जननी अविराम, पुकारो मन ॥ टेक ॥
जननी बिना मुझे आश्रय नाहीं, पाऊं कहां विश्राम ॥ १ ॥
जननी गोद परम सुख शांति, जननी पद स्वर्ग धाम ॥ २ ॥
जननी बिना मेरी को सुध लेवे, जननी है पूर्ण काम ॥ ३ ॥
जननी प्रभु आनंद जननी, जननी है प्राण आराम ॥ ४ ॥
जननी नाम से प्रेम है जागे, मत भूलो यह नाम ॥ ५ ॥

---

३८. आसा. (तर्ज—अंतर्यामी प्रभु एक)

तेरे मात पिता औ सहाई, वही एक जगत में है भाई ।
वही जगद्गुरु जगत्राता, वही अधमोद्धारक दाता ॥ टेक ॥
वही अलख निरंजन देवा, वही जानत सबका भेवा ।
वही नर्ककुंड से तारे, वही पापीन को उद्धारे ॥ १ ॥
वही जगत का है उत्पादक, वही सारी सृष्टि का पालक ।
वही पालत है जग सारा, वही एक जगत आधारा ॥ २ ॥
वही अक्षय अपार कहावे, कोई वाही का पार न पावे ।
करो भक्ति उसीकी प्यारे, भवसागर पार उतारे ॥ ३ ॥

---

३९. कालंगड़ा. (तर्ज—अब हरि की धूम)

किस सोच विचार में बैठे हो, मन शुद्ध करो भाई इक छिन को ॥ टेक ॥
जग चिंता को तुम दूर करो, अरु त्यागो ध्यान विषय धन को ॥ १ ॥
प्रभु पूजा में अनुराग करो, चलो नित शांति निकेतन को ॥ २ ॥
परिवार के भक्ति सब व्याकुल हो, तुम व्याकुल हो हरि दर्शन को ॥ ३ ॥

भक्ति और प्रेम के फूलों से, भरपूर करो हृदय कानन को ॥ ४ ॥
एकांत सुधा रस पान करो, और शांत करो अपने मन को ॥ ५ ॥

४०. जिल्हा काफी. (तर्ज—लगन है प्रेम का)

भजो रे भज भज भगवंत, जांको आदि नहीं अंत ॥ टेक ॥
ध्यावत जो नरनारी प्रभु को, चित होते उनका शांत ॥ १ ॥
निवारें आर्त्त जनोंका ताप, नित्य जो है दयावंत ॥ २ ॥
शरण आय भजो हरि नाम, पावो सुख वह बेअंत ॥ ३ ॥

४१. गजल. (तर्ज—ऐ दिल तेरी बुराई)

खुदा के सिवाय किससे भला मैं विनती करूं ।
ऐसा तबीब छोड़के किसकी दवा करूं ॥ टेक ॥
भावों से मेरे दिल के जब वाकिफ है वह खुदा ।
क्यों फिर न अपने भेद को मैं उससे कहा करूं ॥ १ ॥
ज़ाहिर है कुल जहां पै है करना रहम खुदा ।
मेरी जबां कहां है कि उसका बयां करूं ॥ २ ॥
ख्वाहिश न मालोजर कि इच्छा है बस यही ।
दिन रात दर पर उसके सेवा किया करूं ॥ ३ ॥
मरता है उस बगैर हमेशा यह दिल मेरा ।
क्या खाक ज़िंदगी है जो उस बिन जिया करूं ॥ ४ ॥
पक्का इमान देवे मुझे रहम कर खुदा ।
नामे खुदा को दिल से मैं हरदम जपा करूं ॥ ५ ॥

४२. गज़ल. (तर्ज—या रब तेरी जनाब)

हृदय में बस रहा है तुझे दिखता नहीं ।
फिरता है क्या रे मन तूं मेरे बैठता नहीं ॥ टेक ॥
यत्ने सहस्र कीं है किन्तु क्या हुआ भला ।
हरि प्रेमरस पिये बिना कुछ सिद्धता नहीं ॥ १ ॥
अंधा बना हुआ है जगत धंधों में पड़ा ।
क्यों ज्ञान नेत्र को है प्यारे तूं खोलता नहीं ॥ २ ॥
हरि ज्योति का प्रकाश तुझ में है हरा भरा ।
क्यों पाप ओट आगे से हैं टालता नहीं ॥ ३ ॥
हरि कृपा वाटिका है तुझ अंदर बनी हुई ।
क्यों पुष्प अतुल भक्ति के तूं सूंघता नहीं ॥ ४ ॥

---

४३. भैरवी

तूं काहे मन अब बौराना रे ? तूं काहे मन अब बौराना रे ?
प्रभु है तुझ में तूं है प्रभु में, तूं काहे मन अब बौराना रे ॥ टेक ॥
जो प्रभु है रे विश्व विधाता, दीन दुःखी पापी जन त्राता ।
जल भोजन के एक हि दाता, ऐसे प्रभु को भुलाना रे ॥ १ ॥
जो है सर्व विश्व को राजा, प्रेम भरा जिन का है काजा ।
जिस ने तन मन तेरा साजा, तूं ने उनकों न जाना रे ॥ २ ॥
ज्ञान शक्ति तुझ को जो देवें, हर पल तेरी सुध प्रभु लेवें ।
अब तो शरण प्रभू की ले रे, योही है एक ठिकाना रे ॥ ३ ॥

---

४४. गजल काफी. (तर्ज—सफल यह विश्व है)

दयामय नाम भूलो ना मन, यही चिरकाल शान्ति का धन ॥टेक॥
करे परित्राण पापी का नित, यदि हरिनाम जानो रे जन ।
रहे नाहि भार पापों का जब, करे हरि नाम उच्चारण ॥१॥
पियो नरनारी आशा का जल, करो हरि भक्ति आस्वादन ।
नर स्नेह देखें सदा प्रभु हि, करे निज क्रोड़ मे आलिंगन ॥२॥

४५. भजन, राग सोरठ.

भज मन प्राण-नाथ विमल को ॥टेक॥
जो प्रभु सब जन की सुध लेवे, पाले है सृष्टि सकल को ॥१॥
जो प्रभु संकट क्लेश निवारे, देत है शान्ति विकल को ॥२॥
निर्धन के धन जो प्रभु प्यारे, धीरज बल निरबल को ॥३॥
जो प्रभु सब की आश पुजावे, देवे आनंद सकल को ॥४॥
जो हरि विश्व विधाता कहिये, त्राता अधम अखिल को ॥५॥

४६. सारंग विंद्रावनी (तर्ज—आओ जगवासी हरि)

अब तुम शरण प्रभु की आओ ॥टेक॥
धीरज मन मे अपने धारो, मन चंचल ठहराओ रे ।
सारे जग का जो है स्वामी, उससे प्रीति लगाओ ॥१॥
एक उसी पर निश्चय राखो, क्यों मन को भरमाओ ।
हृदय नगर में करो खोजना, मत कहीं आवो जावो ॥२॥
काम क्रोध और लोभ मोह में, चित मत कभी फसाओ ।
सच्चे भक्त बनो ईश्वर के, ब्रह्मतत्व को पाओ ॥३॥

वैर भाव को मन से त्यागो, सबको मित्र बनाओ ।
केवल सुख को पाया चाहो, गुण ईश्वर के गाओ ॥४॥

४७ झिंझिट ठूमरी. (तर्ज—रखो रे मन हरि)

लगाओ मन हरि चरनन में ध्यान ।
परम पिता का सिमरन करले जो हैं प्राणके प्राण ॥टेक॥
उठत बैठत सोवत जागत, राख उसी का ध्यान ॥
प्रेम पियाला पीकर निश दिन कर हरि के गुण गान ॥१॥
ज्ञान ध्यान की धूनी रमाले, प्रेम के तम्बू तान ।
विश्वासी परम देव से ही तेरा असल कल्यान ॥२॥

४८. जंगला (तर्ज—मन मोहन ने मोह)

हरि नाम भजो मन बारंबारा, जो सब का है प्राण आधारा ॥टेक॥
जो कर्ता सृष्टि का स्वामी, सब के संग सदा रखवारा ।
महिमा जिसकी वर्णन कर के, वेद पुराण कहत हैं अपारा ॥१॥
घट घट बासी है अविनाशी, सब में चमक रहा एक तारा ।
जिस की करुणा पतित उधारे, पापी तारे लाख हजारा ॥२॥
जिस के ध्यान और ज्ञान भजन से होय जन्म सफल हमारा ।
प्रेम भक्ति और भजन से जिस के, होत जगत का मंगल चारा ॥३॥

४९ भैरवी. तिताल (तर्ज—संगत संतन की कर)

चलत मना वहीं चलत, अब ही कर जीवन सुफल रे ।
प्रेमिक जन प्रीतम के प्यारे, जहां रहत रल मिल रे ॥टेक॥
प्रेम ही का जहां अमृत बरसे, रहत सदा मंगल रे ।

तू भी मंगल भाव से भर अब प्रभु पद कर हासिल रे ॥ १ ॥
रूह को भूल ना जिस्म के कारण, सोच विचार संभल रे ।
सच मुच अब विश्वासी बनकर हो इन में दाखिल रे ॥ २ ॥

५०. दोहे

श्वास खजाना जात है, साकी साधी नाहिं ।
सहजू खर्चों कहा रह्यो, कर हिसाब घर माहीं ॥ १ ॥

कबीर तासूं प्रीति कर, जाको ठाकुर राम ।
पंडित राजे भूपति आव कौने काम ॥ २ ॥

दरिया दुजे धर्म से, संशय मिटे न मूल ।
सत्त नाम रटत रहे, सर्व धर्म का मूल ॥ ३ ॥

साथ न चाले बिन भजन, बिखिया सगली छार ।
हरि हरि नाम कमावना, नानक इह धन सार ॥ ४ ॥

घट घट में हरजू बसे, संतन कह्यो पुकार ।
कहु नानक तहि भज मना, भवनिधि उतरे पार ॥ ५ ॥

एक घडी का मोल ना, दिन का कहा बखान ।
सहजू ताहि ना खोइये, बिन भजन भगवान ॥ ६ ॥

पतित उद्धारण भव भय हरण हरि अनाथ के नाथ ।
कहु नानक तेही जानिये सदा बसत तुम साथ ॥ ७ ॥
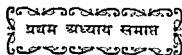
प्रथम अध्याय समाप्त

आराधना.

मंत्र.

सत्य ज्ञानमनंतं ब्रह्म, आनंदरूपममृत यद्विभाति ।
शांतं शिवमद्वैतम्, शुद्धमपाप विद्धम् ॥

१. झिंझिट. दादरा. (तर्ज—हरि समान दाता)

तुमहीं तो हो सच दिल, आराम हमारे ॥ टेक ॥
बाल अवस्था जसे माके सहारे ।
आत्म विश्वास धारे, तुमहिं को निहारे ॥ १ ॥
अब हृदय एक क्षण, तुम्हें न बिसारे ।
झूठे दिल आराम और, दृष्टि भी न मारें ॥ २ ॥
प्रेम सहित नित्य श्रम, सदाय निसारे ।
जीवन व्यतीत करें, संग ही तुम्हारे ॥ ३ ॥
सूना दिल रहता नहीं, कबहु बे सहारे ।
प्रेम दे पवित्र करो, परम प्रभु प्यारे ॥ ४ ॥

२. कसूरी. (तर्ज—सुरत करले)

तूं मेरा है प्राण प्रभु जी, तू मेरा है प्राण ॥ टक ॥
तुम ही सब कुछ हमरे स्वामी, तुम ही हो धन मान जी ।
प्राणाधार तुम्हीं त्रिभुवन में, तुम से लागी मेरी तान ॥ १ ॥

सुख शांति धन संपद तुम हीं, बुद्धि बल और ज्ञान जी ।
तुम्हीं गुरु मेरे प्रिय स्वामी, तुम ही देवो मोहे प्राण ॥२॥
करते हो हे विश्व विधाता, मंगल नित्य विधान जी ।
हम सब तुम को ही आराधें, प्रेम सुधा कर पान ॥३॥

---

३. मद्दीसूरी भजन—एकताल.

आनंदलोके मंगलालोके, बिराजे सत्य सुंदर ॥टेक॥
महिमा तब उद्भासित महा गगन माझे ।
विश्व जगत मणिभूषण वेष्टित चरणे ॥१॥
ग्रह तारक चंद्र तपन व्याकुल द्रुत वेगे ।
करिछे पान् करिछे स्नान् अक्षय किरणे ॥२॥
धरणी पर झरे निर्झर मोहन मधुर शोभा ।
फूल पल्लव गीत गंध सुंदर वरणे ॥३॥
वहे जीवन रजनी दिन चिर नूतन धारा ।
करूणा तब अविश्राम जनमे मरणे ॥४॥
स्नेह प्रेम दया भक्ति, कोमल करे प्राण ।
कत सान्त्वना करे वर्षण संताप हरणे ॥५॥
जगते तब कि महोत्सव वंदन करे विश्व ।
श्री संपद भूमास्पद निर्भय शरणे ॥६॥

---

४. झिंझिट—पोस्त

कौन हो तुम साथ बैठे, रहते हो संग हमार ।
स्वभाव प्रकृति रीति अति मिठि, क्या है नाम बोलो तुम्हार ॥टेक॥

प्रति दिन जो इतना प्यार करत हो हमार ।
दया में ही तुम मस्त होके, करत केवल उपकार ॥१॥
रूप गुण में अनुपम, ऐसा कोई देखा न हम ।
मधुर है यह आकर्षन, प्राण लाये, तुम्हारी ओर बार बार ॥२॥
नाहि अलाप न परिचय, देखते ही मन मोहित होय ।
अब देखूं तोभी नहीं पहचानूं, कोन है यह चमतकार ॥३॥
कोन सबंध है तुम्हारे साथ, हो तुम पिता या जननी ।
जो तुम होवे सो होवो किन्तु, हम तुम्हारे तुम हमार ॥४॥

---

५. काफी.

जय जय हरि प्रेमसिंधु, लीलारस बीहारी हो ।
हृदय रमण भकत जीवन, दीनन हितकारी हो ॥टेक॥
दीनन के गहो हाथ, ले चलो प्रभु अपने साथ ।
शरण गहे की राखो लाज, मुझे तो आशा तुम्हारी हो ॥१॥
विमल चरण कमल छाया, प्रभु हारो मोह माया ।
विश्वास बल से सबल करो, हरो ईस्यदर सारो हो ॥२॥
हम तो नाथ तुम्हरे चेरो, तुम हमारो हम तुम्हारो ।
जय जय हरि शांति सदन, पूर्ण इच्छा तुम्हारी हो ॥३॥

---

६. शाम कल्याण. (तर्ज—आनंद दाता आनंद)

प्राणों के साथ पे जिया करूं, प्राण तजूं प्रभु तुम्हें न बिसारूं ॥ टेक ॥
मेरे तो प्राणों के प्राण तुम्हीं हो, प्राणों के स्वामी मैं कैसे बिसारूं ॥१॥
तुम्हारे दर्श नयन हों शीतल, हृदय दृष्टि से तुम्हें ही निहारूं ॥२॥

तुम्हरी प्रेम अग्नि के द्वारे, नीच मलीन भावों को जारूं ॥ ३ ॥
दृढ़ विश्वास और प्रेम के द्वारे, जीवन दाता मैं तुम्हें ही पुकारूं ॥ ४ ॥

७. रेखता, दादरा.

ईश्वर तेरी दयालुता जगत में छा रही ।
हर बात में मुझको तेरा परचा दिखा रही ॥ टेक ॥
भूमी में बीज डालते होता है सौ गुणा ।
रस चाद से पड़ता है सूर्य से पका रही ॥ १ ॥
पानी अधार जीव का मिलता है सब जगह ।
गले न कोई वस्तु पवन से सुका रही ॥ २ ॥
भूतल में जीव जो बसे जल में अकाश में ।
सब को हिसाब से सदा भोजन खिला रही ॥ ३ ॥
पापी वा नीच जीव जो तुझ शरण में पड़े ।
ब्रह्मानंद तिनको मोक्ष का मारग बता रही ॥ ४ ॥

८. सोरठ. (तर्ज—भज मन प्राण)

तूहीं प्रभु मेरा पूरण धन है ॥ टेक ॥
प्राण का प्राण तुही परमेश्वर, तुही मन का मन है ।
आखों की ज्योति तुही प्रभु मेरी, कानों का तू श्रवण है ॥ १ ॥
बुद्धि बल ज्ञान में तुमहिं विराजो, तू सब का जीवन है ।
अन्तर बहार देश देशान्तर, तूहीं परिपूरण है ॥ २ ॥
सत्य तुही शिव सुन्दर तूही, तू एक मेवाद्वितायं है ।
अधम उधारण पातकी तारण, तूही तूही तूही तू है ॥ ३ ॥

९. भैरवी, दादरा.

हमारे तो हरिजी एक तुमहि मान के पाति ।
यह चित्तवृत्ति पाए कहा ? बिना तुम्हारे निवृत्ति ॥ टेक ॥
मातू के तुल्य चहाते हो, ले गोद में बिठाते हो ।
आनंद में नचाते ज्ञ, प्रेरी हो शुद्ध सन्मति ॥ १ ॥
कुमार्ग से हटाते हो, सुमार्ग पे चलाते हो ।
शिक्षा वचन सुनाते हो, करी हो आत्म उन्नति ॥ २ ॥
हो सपद बिपद माहीं, तुमहीं एक मात्र सहाई ।
तुम हीं मात, तात, भाइ, तुम हीं सर्व सम्पति ॥ ३ ॥
इसी लिये तुम्हें पुकार, जीवनधन ! प्रानाधार ! ।
कहते हैं जगत के उद्धार ! ऋषि मुनि यति सति ॥ ४ ॥

---

१०. भैरवी. (तर्ज—अब किस पै)

प्रभु मे राखों तिहारी ही आसा ॥ टेक ॥
तुम हो स्वामी मित्र हमारे, मात पिता अरु भ्राता ।
तुम बिन नाहीं सखा सहाई, अधमोद्धारक दाता ॥ १ ॥
तुमहीं रामचंद्र सग दीन्हों, कीन्हों बन में बासा ।
नानक और कबीर हि प्रभु जी, कीन्हों प्रेम अनुराता ॥ २ ॥
ऐसे हि और और भक्तों को, करत रहे निज ज्ञाता ।
बाध पाप से अब प्रभु खींचो, प्रीति रसन से हाथा ॥ ३ ॥

---

११. शाम कल्याण. (तर्ज—आनंद दाता अनंद)

ज्ञान तुम्हीं प्रभु प्राण तुम्हीं हो, मय तुम्हीं अरु त्राण तुम्हीं हो ॥ टेक ॥

आदि नहीं तब अन्त नहीं है, व्याप्य सभी तुम विभु मही हो ॥ १
नित्य अपार आधार तुम्हीं हो एक कृपाल दयाल तुम्हीं हो ॥ २॥
अमृत सेतु सुहेतु सभी के, मंगल हो तुम नित्य सुखी हो ॥ ३॥
ज्योति स्वरुप अनुप अपार, अनंतकारण एक तुम्हीं हो ॥ ४॥
मूल आधार प्रभु सब ही के, विश्व सभी रचना तुमरी हो ॥ ५॥

---

१२. बनजारा-त्रिताल.

प्रभु कैसा है अपरंपारा, जग बनाया सुख भंडारा ॥ टेक॥
जिनके गुन रवी सकारे, शशि वायु अग्नि सितारे ।
षट ऋतु और बन सारे, गा गाके नेति पुकारे ।
गए सुभर अनन्त महंत, योगि सुर संत अन्त न निकारा ॥ १॥
जल थोर जमीन बनाके, आस्मान अधर लटकाके ।
विश्व विश्व में सारे लगाके, सब नियमित रहे चलाके ।
कई कोटि कोससे दूर, चमक रहा सुर, हुकुम के द्वारा ॥ २॥
क्या अद्भुत खेल बनाया, पथ्थर से पानी बहाया ।
काटोंमें फूल समाया, लकड़ी से फल उपजाया ।
कुदरत से मानव जैसे, पुतले कैसे, बनाये हजारा ॥ ३॥
पुतले के देखा तनको, क्या दी ताकत नैननको ।
जिव्हा नासिका श्रवण को, दी विचार शक्ति मनको ।
चल रहे अमित नार, बलुन लख पार, जिनके आधारा ॥ ४॥
पृथ्वी यदि पत्र बनावें, सागर दवात हो जावें ।
बन वृक्षकी कलम चलावें, गुन लिखते पार न पावें ।
सब हो कर रोम जबान, करें यदि गान, न लगे शुमारा ॥ ५॥

---

१३. आसा. (तर्ज़—तेरो मात पिता)

अंतर्यामी प्रभु एक तू है, मेरा स्वामी प्रभु एक तू है ॥ टेक ॥
तुझ बिन किस से मैं दिल को लगाऊं, जीवन लक्ष जिसे मैं बनाऊं ।
तेरे सिवा किस के दर जाऊं, मेरा स्वामी प्रभु एक तू है ॥ १ ॥
तुझ बिन और नहीं कोई मेरा, करे दूर जो दिल का अंधेरा ।
आश तूं ही केवल एक मेरा, मेरा स्वामी प्रभु एक तू है ॥ २ ॥
तुझ से जूं ही दिल को लगाया, हाजरां हजूर नजर तूं आया ।
तुझ को ही मैंने अपना पाया, मेरा स्वामी प्रभु एक तू है ॥ ३ ॥

१४. श्यामटा.

आनन्द रूपमनूनम मूरति मोहन, प्राणाराम शान्तिदाता हृदय रञ्जन ॥ टेक ॥
तुम्हीं सुख शान्ति सुधासिन्धु प्रेमघन, ऐसा कौन है रे रूप गुण में (ऐसा)
आनन्द धामें, मस्त हो तव नामें, भक्तगण सदानन्द रहते हैं मगन ॥
क्या यह शोभा बलहारी रे, भक्तगण सदानन्द रहते हैं मगन (क्या यह) ॥ १ ॥

१५ सारग—एकताल.

योगी जन वन्दन अलख निरञ्जन, भक्त हृदय विहारी ।
प्रेम घनरूप आनन्द स्वरूप, मोहन मूर्ती धारी ॥ टेक ॥
अनादि अशेष पुराण महेश, सर्व जन हितकारी ।
एक तेरी शरण कीये अवलम्बन, सब दु ख ताप विसारी ॥ १ ॥
तात मात धाता गुरु ज्ञान दाता, तुमही त्रिताप हारी ।
जगत जननी पतित पावनी, देखो देखो शांति की बारी ॥ २ ॥

१६. रेखता ताल—दादरा

ईश्वर तेरे दरबार की महिमा अपार है।
बन्दा न सके जान तेरा क्या विचार है ॥ टेक ॥
धरती आकाश बीच में किस आसरे खड़ी।
तारा वा चाँद घूमते किसके आधार है ॥ १ ॥
सागर न तीर लाघते सूरज देह नहीं।
चलती हवा मर्याद से किस के करार है ॥ २ ॥
कुदरत से पैदा किया यह देह जीव का।
खाता है बोलता फिरे किस के सहार है ॥ ३ ॥
पंडित हकीम ज्योतिषी करते बड़े जतन।
ब्रह्मानन्द तेरी शक्ति का पाया न पार है ॥ ४ ॥

---

१७ पहाड़ी. (तर्ज—मैंने प्रभु से नेह)

प्रभु दयाकी अजल धारा, बहे रही है आठों जाम।
जग सारा मरेही लिये, कर रहा है गोया काम ॥ टेक ॥
सोनेको बिस्तर हराई का, धरती बिछा रही है।
चांद की चांदनी ऊपर उजली, चदर उड़हा रही है ॥ १ ॥
सूर्य किरन प्रत्येक पकाके, अन्न हमें खिलाता है।
भर भर शीतल प्याला जलका, मेघ हमें पिलाता है ॥ २ ॥
दम दम वायुका लहेरा, नव नव जीवन लाता है।
कुदरत नक्शा खोल जहाकी, राह हमें बताता है ॥ ३ ॥
कितनेही सन्त महन्त और, कितनेही तत्त्व ज्ञानी है।

मेरे लिये बरसा रहे हैं, अपनी अमृत बानी है ॥ ४ ॥
एक एक चींटी बिन तिनकों, भी वो रहा सभारा है ।
तू तो है प्रिय पुत्र आत्मा, दे क्यों तुझे बिसारा रे ॥ ५ ॥
निश्चिन्त होकर नाच कर तूं नाच तक ले मत आफत का ।
शुकर बजाता रह तूं हर पल, उनके ही रहमत का रे ॥ ६ ॥

---

१८ बरहंस, धमाल. (तर्ज—चलो मन हरि संग)

नाथ तेरी रचना अचरज भारी, जाको दर्शन कर सब हारी ॥ टेक ॥
कुदरत से यह देह बनाई, तामें नर अरु नारी ।
हाथ पांव सब अंग मनोहर, भीतर प्राण संचारी ॥ १ ॥
नभमें नभचर जीव बनाये, जलमें रचे जलचारी ।
वृन्त लता बन पर्वत सुन्दर, सागर की छबी न्यारी ॥ २ ॥
चांद सुर्ज दोउ दीपक कीने, रात दिवस उजियारी ।
तारागण सब फिरत निरन्तर, चहुंदिश पवन सवारी ॥ ३ ॥
ऋषि मुनि निशदिन ध्यान लगावें, लख न सके गति सारी ।
ब्रह्मानन्द अनन्त महाबल, ईश्वर शक्ति तुम्हारी ॥ ४ ॥

---

१६. झिंझिट खाम्बाज—ठुमरी

तुम आत्मा के हो ऐसा परमात्मा, तुम जैसा कवन संसार में है ॥ टेक ॥
पिता माता जाया करे सब ही दया, तुम जैसी दया कौन करत है ॥ १ ॥
करुणा का निधान प्रभु तुमही है, पापी पर करुणा तुम्हारी कितनी है ॥ २ ॥
सुरत साधन और शरीर मन, तुमरे करुणा का निदर्शन है ॥ ३ ॥
गृह तारक मण्डल नील नभ, धन्य धान्य भरा रमणीय धरा है ॥ ४ ॥

सुगम्भीर तरङ्ग की नीर निधि, हिम रंजित शोभन ऊँच गिरी है ॥ ५ ॥
सगल पुलकित समतान धरि, सब करे करुणा का तब कीर्तन है ॥ ६ ॥

२०. भैरव—ठुमरी.

हे जग माता विश्व विधाता, हे सुख शान्ति निकेतन हे ॥ टेक ॥
प्रेम के सिंधु दीन के बन्धु, दुःख दरिद्र विनाशन हे ॥ १ ॥
नित्य अखण्ड अनन्त अनादि, पूरण ब्रह्म सनातन हे ॥ २ ॥
जग आश्रय जग पति जग वन्दन, अनुपम अलख निरंजन हे ॥ ३ ॥
माता सखा त्रिभुवन प्रति पालक, जीवन के अवलम्बन हे ॥ ४ ॥

२१. काफी. (तर्ज़—प्रभु शरणों में लागो.)

तूंहे तूहे तूंहे तेरा, मैं नहीं मैं नहीं मैं नहीं मेरा ।
तूंहे तेरा जगत उपाया, मैं मैं मेरा धन्धे लाया ॥ टेक ॥
तूंहे तेरा खेल पसारा, मैं मैं मेरा कंद मरारा ।
तूंहे तेरा सब संसारा, मैं मैं मेरा तिन सिर भारा ॥ १ ॥
तूहे तेरा काल न खाई, मैं मैं मेरा मरी मरी जाई ।
तूंहे तेरा रहा समाई, मैं मैं मेरा गया बिलाई ॥ २ ॥
तूंहे तेरा तुमहीं माहीं, मैं मैं मेरा मैं कुछ नाहीं ।
तूंहे तेरा तूंही दाई, मैं मैं मेरा मिला न कोई ॥ ३ ॥

२२ आलेया—एकताला.

नाथ! तुम्हीं सर्वस्य हमार, प्राणाधार सारात्सार ।
नहिं तुम बिना, कोई भी त्रिभुवने, नहीं है हमार ॥ नाथ ॥ टेक ॥

तुम्हीं सुख शान्ति सगाई सबल, संपद ऐश्वर्य ज्ञान बुद्धि बल ।
तुम्हीं वासगृह आसन का स्थान, आत्मीय बन्धु परिवार ॥ नाथ ॥ १ ॥
तुम्हीं इहकाल तुम्हीं परित्राण, तुम्हीं परकाल तुम्हीं स्वर्गधाम ।
तुम्हीं शास्त्र विधि गुरु कल्पतरु, अनन्त सुख के तुम आगार ॥ नाथ ॥ २ ॥
तुम्हीं हो उपाय तुम्हीं हो उद्देश्य, तुम्हीं सृष्टा पाता, तुम्हीं हो उपास्य ।
दण्ड दाता पिता, स्नेहमयी माता, भवार्णव कर्णधार ॥ ३ ॥

---

२३. सारंग बिन्द्राबनी. (तर्ज—आओ जगवासी हरि)

प्रभु तेरा पूर्ण भरा भंडारा ॥टेक॥
अगणित वस्तु देत नितही प्रभु, दान तेरा का नहीं पारा ॥ १ ॥
क्या क्या वर्णन कहूँ मैं प्रभु जी, ज्ञान तेरा है सारा ॥ २ ॥
तव भंडार शक्ति से पूर्ण, सारे जगत पसारा ॥ ३ ॥
धर्म ज्ञान पूर्ण है प्रभु जी, अद्भुत रूप है न्यारा ॥ ४ ॥

---

२४. बिहाग (तर्ज—हे जगपति संकट)

हे विश्वपति ! तव महिमा अपार ॥टेक॥
जड़ चेतन अनन्त तव सृष्टि, गावें यश तेरा अनिवार ॥ १ ॥
असंख्य चन्द्र असंख्य सूरज, सब के तुमहीं हो आधार ॥ २ ॥
अतुल धन पूर्ण विस्तीर्ण वसुंधरा, करे तेरी जय जयकार ॥ ३ ॥
हे मंगलनिधी धन्य तव करुणा विधी, धर्म के तुम्हीं हो अवतार ॥ ३ ॥
पुण्य प्रेम धन करो सभी अर्पण, हे प्रभु अनन्त गुणाधार ॥ ५ ॥

---

२५. विभास-एकताल.

तुम ही मे जिस छिन, रमे मेरा मन, तबही यह भुवन, लागे सुधामय ।
प्राण में कितना हीत, स्नेह समागत, सबही दूर हो जाय, दुख और भय ॥ टेक ॥
तुमसे हम दूर होय, रहते जिस समय, कुछ भी आनंद नहीं पावें हृदय ।
सकल समय जो यातना होय, जानो हे अंतर्यामी अंतर का विषय ॥ १ ॥
येही भिक्षा नाथ, मेरी सर्वक्षण, सदा रहे मेरा मन, तुम ही में मगन ।
धन मान सुख से नहीं है प्रयोजन, तुम ही धन को लेके, जुड़ावें हृदय ॥ २ ॥

२६. भैरवी. (तर्ज—प्रीतम तुमहीं प्रीत के)

हरि तुम रहते हो हमरे पास (सदा) ॥ टेक ॥
प्राणों के प्राण तुहीं मेरा जीवन, देत हो तुम सहवास ॥ १ ॥
प्रेम का प्याला प्राण को दे कर, करावत अपना अभ्यास ॥ २ ॥
सुध बुध हमरे प्राणों को देकर, देते हो विश्वास ॥ ३ ॥
नाना रूप से दर्शन दे कर, मन की मिटावत प्यास ॥ ४ ॥
आशा भरोसा एक तुम्हारा, पूरण करो अब आश ॥ ५ ॥

२७. झिंझिट-दादरा. (तर्ज—हरि समान दाता)

एक मात्र तुम ही स्वामी, पूजनीय हमारे ॥ टेक ॥
प्रेममय पूर्णानन्द, सृष्टि रचन हारे ।
दया तेरी क्षण क्षण, झरे निर्झर धारे ॥ १ ॥
पृथ्वी जल अग्नि वायु, सूर्य और सितारे ।
करते सब को अपना काम, तुमरे ही सहारे ॥ २ ॥

एक एक पल में लालो, डूबत जन उबारे ।
विनय सहित झुकावे सिर, करें प्रणाम सारे ॥ ३ ॥

२८. भैरवी. (तर्ज—प्रभु हम आये तुम्हारे)

पिता तुम सबहीके पालन हार ।
तुमही नाथ अनाथ के नाथा, महिमा अपरंपार ॥ टेक ॥
जीव जंतु वृक्षादिक ऊपर, करुणा अतुल अपार ।
परिचय देत दया तेरी का, सरजन विश्व लगातार ॥ १ ॥
उत्तम देह मनुष्य की आयी, तामें जीवन सार ।
अगनित वस्तु अनेक पदारथ, भोग रहे नर नार ॥ २ ॥
दीनबन्धु करुणाकर स्वामी, दीनन सुजन हार ।
परम प्रसाद भोगें निशी बासर, नमत हम बारंबार ॥ ३ ॥

२९. तोड़ी. (तर्ज—प्रीति प्रभु से जोड़)

प्रभु तुम सम कवन स्नेह करे ॥ टेक ॥
जान को देवे अजान को देवे, वंचित कोई न रहे ॥ १ ॥
ऊंच को देवे तू नीच को देवे, कभी भूल न परे ॥ २ ॥
चोर को देवे तू साधु को देवे, नेह समान करे ॥ ३ ॥
भक्त को देवे तू जगत को देवे, सब को उदर भरे ॥ ४ ॥
दास तेरा हरि सकल चराचर, पीवें ही खांय चरें ॥ ५ ॥
ज्ञान ध्यान बल बुद्धि सकल गुण, नर नार को देत खरे ॥ ६ ॥
भक्ति प्रीति हरि निज चरणन में, देवो दान वरे ॥ ७ ॥
अटल आनन्द लिये सब प्राणी, भव सिंधु पार तरें ॥ ८ ॥

३०. भैरवी.

बन्धू हे तूं हीं मेरा प्राण, जीवन का जीवन तूं हीं, तूं ही प्राणाराम ॥ टेक ॥
देही में हो तुम ही शक्ति, आंखों मे हो तुम ही ज्योति ।
हो हृदय मे तुम ही भक्ति, भक्त प्राणाराम ॥ १ ॥
कंठ में हो तुम ही वाणी, श्रवण मे हो तुम ही ध्वनी ।
चिता में तुम चिंता-मणी, अचिंत्य हो ज्ञान ॥ २ ॥
तुम ही पिता तुम हीं माता, तुम ही गुरु ज्ञान दाता ।
सुख सागर के तुम ही कर्ता, कृपा के निधान ॥ ३ ॥

३१. बाऊल–ख्यामटा.

तुम को छोड़ के कहां जावें, ऐसा और कौन वो है ।
तुम हो जैसा पापी का बन्धु, ऐसा सुहृद कोन वो है ॥ टेक ॥
जब पाप सागर में हम, पड़े रहें अंधकार में ।
तब हमरा हाथ पकड़े ऐसा, उद्धार कर्ता कौन वो है ।
(बोलो ऐसा सहाई कौन वो है) ॥ १ ॥
जब शुन्य हृदय, बैठ रोवें निराश होवें ।
तब प्रेम से भरोसा देके, चक्षु जल तुम पूछ देवें ।
(ऐसा व्यथा का व्यथी कौन वो है) ॥ २ ॥
ऐसे कल्याणकारी को, पछाना नहीं है हमने ।
अब छोडूं ना छोडूं ना तुम्हें, रहो हमारे पासे पासे ॥ ३ ॥

३२. काफी.

मेरा मकान आला, जिने किये दर्सा बि तुं ॥ टेक ॥

चलो तो आस्मान वेखु, आगा हली पसुं ।
आस्मान मिडा ही तारा, तारन जो चंद वि तुं ॥१॥
चलों तो बाजार देखु, आगा हली पसुं ।
बाजार मिड़ा ही आदम, आदम जो दम वि तुं ॥२॥
चलो तो मंदिर देखु, आगा हली पसु ।
मंदिर मिडो ही मूरत, मूरत जी सुरत वि तुं ॥३॥
चला तो दरिया वेखु, आगा हली पसुं ।
दरिया मिडो ही लहरीयु, लहरीन जो लाल वि तुं ॥४॥
चलो तो किस्ती वेखुं आगा हली पसुं ।
किस्ती में रहे थो राहिब, राहिब जो रब वि तुं ॥५॥

---

३३. बेहाग–झांपताल.

जय प्राणपति जगपाता हे, जय दीनसखा शुभदाता हे ॥ टेक॥
जय विघ्नविनाशन त्राता हे, जय विश्वपिता जगमाता हे ॥१॥
हृदाधार प्रभु हृद ज्ञाता हे, भय ताप हरी भवत्राता हे ॥२॥
यह दीन करें तव सेवा हे, वर देहु यही परमात्मा हे ॥३॥

---

३४. पिलू वारोयां जत.

जीवन वल्लभ तुमी, दीन शरण (हे) ।
मानेरे प्राण तुमी प्राण रमण (हे) ॥टेक॥
सदानंद शिव तुमी, शंकर शोभन ।
सुन्दर योगी जन चित्त विमोहन ॥१॥

भवार्णव पार हतु, तुमी हे काडारी ।
दुर्द्दम पाप ताप शोक भय हारी ॥ २ ॥
तुमी नाथ प्राण मोर, तुमी हे जीवन ।
तुमी हे दयार ठाकुर करुणा निधान ॥ ३ ॥
तुमारे प्रसादे प्रभु, ए जीवन धारि ।
जय जय कृपामय महिमा तुमारि ॥ ४ ॥

३५. विभास—एकताल.

यह विश्व में जो कुछ रचा है, वह सब तुमने ही सजा रखा है ।
विविध वर्ण से विभूषित करके, उसपर अपने नाम का छाप दे रखा है ॥ टेक ॥
पत्र पुष्प फल में देखूं जो सब नक्श, लिखा दयाल नाम तेरा, नहीं है वह नक्श ।
सुंदर विहंग पै सौंदर्य है जो आंका, प्रेमानंद नाम तुमरा तुमने ही लिखा है ॥ १ ॥
चंद्र आदि दल गगन मंडल, दीप आलोक जो करे झल मल ।
उन में हे इन्दु, देत हं सुधा बिन्दु, सुधासिंधु नाम तुम अंकित किया है ॥ २ ॥
जल पे यह लिखे हो जगत जीवन, पवन हिल्लोलि होता दर्शन ।
ज्वलन्त चचर बादल पे लिखे हो, ज्योतिर्मय नाम जग में दिखाया है ॥ ३ ॥
पृथ्वी के सब चराचर में ही, सर्वव्यापी नाम है लिखा निज अक्षरे ।
लिखा देख तुमको, देखते इच्छा करे, लिखा हो जैसा क्यों नहीं हमें दिखाया है ४
हृदय में लिखे हो हृदय वल्लभ, प्रेम सूर्य उदय से होता है अनुभव ।
इस सब में है लेख तुमारा ही सो सब, हाय कलम से तुमको ही पकड़ा है ॥ ५ ॥

३६. सोरठ. (तर्ज—तेरी शरण में आय)

मेरा तुही प्रभु स्वामी है, तुं सर्व अन्तर्यामी है ।
तुमको हि मेरी नमामि है, बलि जाय तेरे नाम के ॥ टेक ॥
तुं जगत सृजन हार है, तुं सबके ही कर्त्तार है ।
तेरा ही नाम अपार है, बलि जाय तेरे नाम के ॥ १ ॥

तू सबका स्वामी साय है, तू पूर्ण और भगवान है ।
तूंहि बडा यक जात है बलि जाय तेरे नाम के ॥२॥
तु सत्य श्री भरपुर ह, तरा अटल दस्तुर है ।
नव रस बिना सब झूर है बलि जाय तेरे नाम के ॥३॥
मेरा तुझ परनाम है, तुझ ही से मेरा काम है ।
तेराहि दाता नाम है, बलि जाय तेरे नामके ॥४॥

---

३७ होरी (तर्ज—प्राणपति लेओ सार)

मेरे तो तुम्हीं एक प्राण अधारे हे प्रभु प्रान प्यारे ।
मेरे हो जीवन के तुम्हीं जीवन जीवा मैं तेरे सहारे ॥टेक
सब कुछ तुम्हीं स्वामी मेरे, मं आधीन तुम्हारे ।
प्राणों क प्राण मैं तेरा भिखारी, जावा किसके मैं द्वारे ॥१॥
तू मीठा जग खारा लागे, है मन मोहन हारे ।
तुमसे बढ़कर नहीं कोई मेरा ढूंढ फिरा जग सारे ॥२॥

---

३८. भैरवी—ताल लावनी

तू जग करता सकट हरता, भरता सकल पसारा है ।
जीव चराचर तेरी रचना, सब का तू ही सहारा है ॥टेक॥
तूं इक स्वामी अन्तर्यामी, अद्भुत ज्ञान भंडारा है ।
घट घट का प्रेरक हरि तू ही, तू ही तारण हारा है ॥१॥
सब संसार तव महिमा गावे रवि शशि मगन तारा है ।
स्वर्ग पाताल तेरे दर ढाढी, गावे पुकार पुकारा है ॥२॥

तुझ को छोड़ न जावें कितही, जावें तेरे बलिहारा है ।
निर्मल यश तुमरा प्रभु जी, सब के हृदय प्यारा है ॥ ३ ॥

३९. तोड़ी. (तर्ज—प्रीति प्रभु से जोड़)

करत दया काहे, इतनी करत दया काहे ।
क्षुद्र हृदय मम कहा समावे, उमड पड़ी है ताहे ॥ टेक ॥
जान सकल प्रभु अन्तर्यामी, महा पातकी मैं हूं ।
तौभी कभी तुम त्यागो नाहीं, पालत मोहि सदा है ॥ १ ॥
मैं तो भागत निशिदिन जगमें, विष खाके जी देने ।
पकड़ पकड़ तुम प्राण बचावत, अद्भुत करुणा है ॥ २ ॥
तुमरे प्रेम के सन्मुख प्रभुजी, मातृ स्नेह क्या है दे ।
प्रेम डोरी में बांधा सब जग, व्यापक हो सब जग है ॥ ३ ॥

४०. गज़ल.

बरणे महिमा कौन तुम्हारी ॥ टेक ॥
आनन्द सुख भोगत सृष्टि में निशि बासर नरनारी ।
जीव जन्तु की रक्षा करते, दुख उनके तुहीं हारी ॥ १ ॥
पापी सकलो पावित प्रभु तु, दया हरि तव न्यारी ।
औषध आदि अनन्त गुणों से, करें सुखी नरनारी ॥ २ ॥
साधु जन ध्यावत हैं सारे, जगत पिता जगधारी ।
ऋषि मुनि सब गाय थके यश, निर्बल जीभ हमारी ॥ ३ ॥
अद्भुत शक्ति दियो बाणी को, सब दर्शन मे हारी ।
कर जोड़े तेरा यश गावें, धन्य धन्य हे अघहारी ॥ ४ ॥

४१. सोरठ. (तर्ज—तेरी शरण में)

रसना तुम्हारे बिन हरि, और क्या करे उचार है ।
तुम बिन हरि कौन है, हृदय का आधार है ॥टेक॥
जगत है असार अनित्य, तुम सत्य सारात्सार है ।
तूं न्यायी निष्कलंक नित्य, निराकार निर्विकार है ॥१॥
तूं आदि अनन्त अटल अचल, अद्वितीय अमर है ।
विभु भक्त वत्सल स्वयंभु, तूंही साक्षात्कार है ॥२॥
तूं दीनन शरण हरि, अभय चंदन हरि है ।
तारन तरन तुम, सदा संगी सहायकार है ॥३॥
पल पल श्वास श्वास पाए, सहवास तुम्हार है ।
है मा आज उल्हास युक्त, हम करें जय जय कार है ॥४॥

---

४२. धनाश्री—एकताल.

जय विश्वेश्वर, भयहर शंकर, प्राणेश्वर शिव सुन्दर जी ।
सत्य सनातन, नित्य निरंजन, चित्त-विनोदन प्रभु जी ॥टेक॥
मंगल आलय, परम आश्रय, प्रजा-पति भूत भगवान जी ।
करुणा-सागर, प्रेम के आकर, जगदीश जग-वंदन जी ॥१॥
सिद्धि-विधाता, कल्याण-दाता, दीन-जन-त्राता पिता जी ।
पतित-पावन, अधम-तारण, विघ्न-निवारण ठाकुर जी ॥२॥
संताप-हरण, अनाथ-शरण, विपद-भंजन दयाल जी ।
हृदय-रंजन शांति-प्रसरण, प्रेम-घन प्राणाराम जी ॥३॥
पिता माता सखा, सुहृद बांधव, पति गति त्राता गोपाल जी ।
ज्ञान बुद्धि धन, चरम संरन, तुही प्राण मन धन जी ॥४॥

गाड् खुदा हरि, बहु नाम-धारी, एक अखंड जिहोवा जी ।
तुहि आदि अन्त, अनादि अनन्त, बहु रूपी नट नागर जी ॥ ५॥

४३. झिंझिट—एक ताल. (तर्ज—दयामय हरि दयामय)

आहा क्या अमृतधाम यह है जग तुम्हारा ।
जग तुम्हारा यह मंदिर सुख का भंडारा ॥ टेक ॥
सारे ही मानव पाय के यह शांति धारा ।
तुम्हारी कीर्त्ति का गान गाते हैं सारा ॥ १ ॥
सारा ही आकाश असीमकर तेरे धारा ।
तुम्हारी शक्तिही साजा सकल संसारा ॥ २ ॥
जहा देखें चमत्कार तव विश्व अपारा ।
देखे से लगातार जन हो सुखारा ॥ ३ ॥

४४. आसा. (तर्ज—अंतर्यामी प्रभु एक)

प्रभु तूं है मेरा प्यारा, मैं तो तेरा ही तेरा ही तेरा ॥ टेक ॥
तूं है जीवन का आधारा, तुझ बिन कोई नहीं और प्यारा ॥ १ ॥
तूं ही सुख का है भंडारा, मेरा हृदय में है ने पसारा ॥ २ ॥
सदा तू हमरा रखवारा, धन्य धन्य प्रभु दातारा ॥ ३ ॥

४५. भैरवी. (तर्ज—प्रभु हम आये)

प्रीतम तुमही प्रीतके धाम ॥ टेक ॥
जगसे प्रीति करी बहुतेरी, कहिं न मिला आराम ॥ १ ॥
तुमरा अजस्र प्रेम प्रवाह ओ, बहे रहा शुभु व शाम ॥ २ ॥

तापित हृदय बैठ उनके तल, लहें शांति विराम ॥ ३ ॥
तुमरे प्रेम प्रसादसे जननी, पोषित विश्व तमाम ॥ ४ ॥
स्वच्छ समीर मेघ जल वृष्टि, सकल है प्रेमके काम ॥ ५ ॥
एकहीं बार तुम्हारा जिसने, पिया प्रेम का जाम ॥ ६ ॥
सकल जीवन में प्रेम हीं प्रेमने, कायम किया है मुकाम ॥ ७ ॥
डूबा तुमरे प्रेम सिन्धु में, जोगी जनक अरु राम ॥ ८ ॥
डुबी गार्गी मैत्री मीरा, चतन्न और तुकाराम ॥ ९ ॥
अपरिमित उस सागर में, हमे ले चलो हे राम ॥ १० ॥
पाए अमोलक रत्न यहाके, कर लें हम पूरण काम ॥ ११ ॥

---

४६ समाच—एकताल. (तर्ज—आओ बहिनो भाई)

तोमारे गेहे, पालिछे स्नेह, तुमई धन्य धन्य हे ।
आमारे प्राण, तोमारे दान, तुमई धन्य धन्य हे ॥ टेक ॥
पितारे बत्ते रेखेछे मोरे, जनम दियेछे जननी क्रोडे ।
बेंधेछे सखार प्रणय डोरे, तुमई धन्य धन्य हे ॥ १ ॥
तोमारे विशाल विपुल भुवन, करेछे आमार नयन लोभन ।
नदी गिरि-वन सरस शोभन, तुमई धन्य धन्य हे । २ ॥
हृदये बाहिरे स्वदेशे विदेशे, युग युगान्ते निमेषे निमेष ।
जनमे मरणे शोके आनन्दे, तुमई धन्य धन्य हे ॥ ३ ॥

---

४७ जोग. (मन मोहन ने)

मेरे मन मोहन ने, क्या क्या मोहनी रूप बनाया ॥ टेक ॥
फूलो मे रंग और बू बन बैठा, फल में रस हो समाया ।

डाल डाल और पात पात में, जहां देखा तहां पाया ॥ १ ॥
गगन मंडल में चन्द्र सूर्य और, तारा गन बन आया ।
दिन की ज्योति रात्रि की शोभा, बन कर मोहि लुभाया ॥ २ ॥
ज्ञानी में ज्ञान प्रेम प्रेमी में, भगत हृदय में दया ।
मंगल भाव पुण्य कार्यों में, मन मोहन ही नजर आया ॥ ३ ॥
सूक्षम और स्थूल दोनों हैं उस के ही रूप की छाया ।
विश्वासी बन देखो तो दीखे, नाहीं तो जाये भुलाया ॥ ४ ॥

४८. गज़ल—धमाल. (तर्ज—प्राण में विराजो)

तव नाम दयाल सुना जग में, प्रभु आश धरी तेरे चरणों की ।
तेरी रक्षा प्रभु रक्षा करे, धन्य भाग स्वामि तेरे शरणों की ॥ टेक ॥
तेरा दया अपार कृतार्थ करे, मन शांत करे तेरे भक्तों की ।
तेरी करुणा प्रभु जग पाल करे, मन शुद्ध करे जग रमनों की ॥ १ ॥
तेरा ज्ञान अपार प्रकाश करे, अन्धकार हरे मन कयनों की ।
अब कृपा करो इस दास ऊपर, अतुलानन्द देत तव रसनों की ॥ २ ॥

४९. कालंगड़ा. (तर्ज—मन तृत हो

प्रभु तुझ बिना मेरा कोई नहीं, इस जग मे दाता ।
चींटि आदि सबको पाले, जगत की तूं माता ॥ टेक ॥
धरती जल और वायु अग्नि, सबका हि तूं रचता ।
सारी सृष्टि रचनहार तूं, प्रीतम प्यारा पिता ॥ १ ॥
रवि शशि और तारा मण्डल, जो ग्रह हैं सब भ्रमता ।
नदि नाले सागर रचिया, वनस्पति तुम कर्ता ॥ २ ॥

राव पालें रंक पाले, सब को तुम ही दाता ।
दयादान ही दान देत तुम, और नहीं कोई दाता ॥ ३ ॥
हे मन तू धर ध्यान धनी का, जो है विश्व विधाता ।
दयालु है वह देव सदाही, सारे जगत का ताता ॥ ४ ॥

५०. सोरठ.

तेरे दर्शन के दीदार ऊपर बलिहार धणी ।
देखो करुणा के भंडार से, हम कर्तार कणी ॥ टेक ॥
ऋषि मुनि और पीर पैगम्बर, तेरे दर के मंगता मंगन भिखारी बणी ॥ १ ॥
लाख मींड सूरज चन्द्र, तुमरी ज्योति अपार चढन वह हजार धणी ॥ २ ॥
जलधर बनधर मोर परींदा, हो मोहित दरदार नचन ललकार मनी ॥ ३ ॥
गुल फुल बन में सन्त समाधी, सेवा तुम दातार की करत वह चाणीचणी ॥ ४ ॥

५१. खयु—एकताल.

धन्य देव पूर्णब्रह्म, प्राणेश्वर दीनबन्धु ।
दयासिन्धु करुणानिधि व्याकुल-चित धारि हो ॥ टेक ॥
भगवज्जन-हृदि-भूषण, पावन जगज्जीवन,
प्रभु परम शरण पापि-गति, आश्रित भयहारी हो ॥ १ ॥
अच्युत आनन्दधाम, सत्याश्रय सत्यकाम ।
जाग्रत जीवन्त देव सेवक-कांडारी ॥
ज्ञानानल दीप्यमान, हृदाधार हृदयेश्वर ।
हित-कारण हरि कृपारु, भक्तमन-मनोविहारि हो ॥ २ ॥
अविनश्वर पुराण पुरुष, भगवान भक्तवत्सल ।
कल्याण अमर त्रिभुवनधारी ॥

जीवितेश हृदयरतन, परमायन सत्य पुरुष ।
सहजानन्द जगतगुरु जगजनहितकारी हो ॥ ३ ॥

५२. दोहे.

कबीर सात समुद्र मस करूं, कलम करूं बनराय ।
वसुधा कागद जु करूं, हरि यश लिख्यो न जाय ॥ १ ॥
आपनी जानो आप गति, और न जाने कोय ।
सिमर सिमर रस पीजिये, दादू आनन्द होय ॥ २ ॥
(दरिया) आखो सो दिखै नहीं, शब्द न पावे जान ।
मन बुद्ध तहा पहुंचे नहीं, को कहे अं राम ॥ ३ ॥
पतित उद्धारण भवभय हरण, हरि अनाथ के नाथ ।
कहु नानक तेहीं जानिये, सदा बसत तुम साथ ॥ ४ ॥
तुलसी राम ही नाम ते, होत पाप का नाश ।
जियुं चिंगारी आग की, परे पुराने घास ॥ ५ ॥
सब घट व्यापक राम है, देहि नाना भेस ।
राव रक चंडाल घर, सहजु दीपक एक ॥ ६ ॥

ध्यान.

१. कानड़ा—त्रिताल.

एक पुरातन पुरुष निरंजन, निराकार का ध्यान धरो ॥ टेक ॥
आदि सत जग के कारन में, चित्त अपना समाधान करो ॥ १ ॥
चित सुन्दर जीवंत ईश्वर में, मन को अपने मग्न करो ॥ २ ॥
मुदित चित्त एकांत हृदय हो, अमृत रस को पान करो ॥ ३ ॥

२. झिंझिट, कीर्त्तन (खयरा.)

चिदानन्दसिंधुनीरे प्रेमानन्देर लहरी ।
महाभावरासलीला कि माधुरी मरि मरि ॥ टेक ॥
विविध विलासरस प्रसंग, कत अभिनव भावतरंग ।
डुबिछे उठिछे करिछे रंग, नवीन नवीन रूप धरि ॥ १ ॥
महायोगे समुदाय एकाकार हइलो, देश काल व्यवधान भेदाभेद घुचिलो ।
(आशा पुरिलो रे,—आमार सकल साध मिटे गेलो)
एखन आनन्दे मातिया, दुबाहु तुलिया, बलो रे मन हरि हरि ॥ २ ॥

(झांपताल.)

टुटल भरम भीत—धरम करम नीति, दूर भेलें जाति कुल मान,
काहां हाम काहां हरि, प्राण मन चुरि करि,
बंधुया करिला पयान,
(आमि केनई बा एशम रे ।—प्रेमसिंधु नरे)
भावेते हॅंयालें भोर, अबहिं हृदय भोर,
नाहि जात आपना पमान,
प्रेमदास कहे हासि, शुन साधु जगवसी,
ऐयसाहि नूतन विधान । (किछु भय नाई ! भय नाई !)

---

३. सांवाज बाहार—कमोयालि.

हरि हे, ए देहे, आछे सदा वर्तमान ।
निश्वासे शोणिता धारे, करें तोमार नाम गान ॥ टेक ॥
तुमी मम बाहु बल, निधा बुद्धि संबल ।
आशा भॅरसा कवल, आमि तो तृण-समान ॥ १ ॥
जीवंन आदेश वाणी, शुनाओ दिन यामिनी ।
पवित्र निश्वासे करॅ, महा वीर बलवान् ॥ २ ॥
लये भक्त परिवार, हृदये करें विहार ।
देखाओ प्राण मंदिर पुण्यमय स्वर्ग धाम ॥ ३ ॥

---

४. झिंझिट, कीर्तन (खयरा)

चिदानन्द सिंधु माहीं, चित्त हमारा डूब रहा ।
अतुल आनन्द आहा ! मुखरो नहीं अब जाय कहा ॥ टेक ॥

ऐसा वो परम शान्ति स्थान, सबहि वहां लगाओ ध्यान ।
सुधा तृष्णा का नाहिं भान, तृप्तिका प्रवाह बह रहा ॥ १ ॥
आधि व्याधि भय विलाप, चिन्ता शोक विविध ताप ।
छूटे सब दुखालाप, वह पाया प्रेम रत्न महा ॥ २ ॥
निवृत भय पाप अधम, हुआ सफल इन्द्रि संयम ।
सुझा यह दृश्यमान ब्रह्म, मिला जो कुछ हमन चाहा ॥ ३ ॥
अलौकिक दशा है यह अस, अनुभव करें हम यह रस ।
उसमें हि हम भए विवश, महानन्द रूप हृदय छाहा ॥ ४ ॥

५. भैरवी विभास—एकताल.

अनन्त विशाल-वक्ष, चिदानन्द सागरे ।
समाधि मगन, योगी तपोधन, सदानन्दे विहरे ।
बहे स्वन स्वन, आदश-पवन, निरंतर तार उपरे ।
आइ दय कत, रचित जगत, गभीर आधार ओबेरे ॥ टेक ॥
महा योगे हन, आत्मागम जत, प्रेम पुलकित अन्तरे ।
करे अविराम नाम सुधा पान, विवेक-कर्ण-कुहरे ।
हाय ! आमि कबे, सई सुधार्णवे, डुबिबे समाधि भरे ।
हईबे तन्मय नित्ययोगे लय,—विलीन अनादि ईश्वरे ॥ १ ॥

६. काफी—झांपताल.

तुमी हे भरसा मम, अकुल पाथारे ।
आर केह नाहि जे, विपद भय हरे, ए पाथारे जे तारे ॥ टेक ॥
एक तुमि प्रभुवर, जगत संसार, केमनि बल दीनजन

करियि दुख अंत, सुखसंग हृदे जागे, जर्खेन मन-आंखि तव ज्योति नेहारे ।
जीवनसखा तुमि, बांचि ना तोमा बिना, तृषित मन प्राण मम डाके तोमारे ॥२॥

७. आलेया जयजयंती एकताल

कालेर सागरे भासिये भासिये, कोथाय भासिनु हाय ।
सीमा अन्त रेखा, नाहि आर देखा; सिंधुते बिंदु मिलाय ॥ टेक ॥
अनंतेरे टाने, अनंतेर पाने, धाय प्राण-नदी बाधा नाही माने ।
बाधा आछि जा'र, सबे भांगे भांगे, ताहारेई प्राण चाय ॥ १ ॥
सम्मुखे अनन्त, जीवन विस्तार, निविड़ निस्तब्ध नीरव आंधार ।
ता'र माझे ज्योतिर्मय, निराकार, चमके चपला-प्राय ॥
केहई नाहि हेथा, तुमि आर आमि, अनन्त विजने, हे अनन्त-स्वामी ।
कोथाय राखिब, केने कि करिबे; लईया आमि तोमाय ॥२॥
कांपाईये महा-नादे, विश्व-धाम; "आमि आछि" रव उठे अविराम ।
"तुमि आछे" "तुमि आछे" माथाराम, आत्माराम देय साथ ॥ ३ ॥

का। नित्य दर्शन, यह पाद्यो प्रेमधन ।
पाय हों मुक्त जीवन करा सफल जनम ॥ ३ ॥

---

९ कीर्त्तन खयरा

अखण्ड अस्पर्श अरूप अव्यय ।
देखा ना दिल के देखते पाय नाय ।
(तुमि दया करे) (मनेर अगोचर) ॥ टेक ॥
केमन अनुराग तुमि केना,
प्रभु बिना अनुराग, करे यत याग,
तामारे कि जाय जाना ।
तोमाय धरा दिये के कितने पार
(ओहे अमूल्य धन) (हृदय ना दिल ह) (जीवन ना दिल हे) ॥ १ ॥
तामाय भक्तिपुष्प, (भक्तवाञ्छाकल्पतरु हे)
पुष्पे य जन पूज तुमि आपनि एसे देखा दाओ
तार हृदय माझे । (डाकने ना डाकिने) ॥ २ ॥

---

१०. झिंझिट—एकताल

फुटंत फुलेर माझे, देखर मायेर हासि ।
किवा मृदुमंद, सुधागन्ध, झरे नादे राशि राशि ॥ टेक ॥
अरूप रूपर छटा, विचित्र वरण घटा ।
घोराला रसाला, करे दिक आलो, शोभा हरे मन उदासी ॥ १ ।
कुसुमे प्राण पागल कर, परशे त्रिताप हर ।
मा हासे फुलेर भितरे, नाइ फुल एत भालोबासि ॥ २ ॥

करिये दुख अंत, सुबसंत हृदे जागे, जाउँन मन-आखि तव ज्योति नेहारि ।
जीवनसखा तुमि, बाचि ना तोमा बिना, तृषित मन प्राण मम डाके तोमारे ॥२॥

७ आलेया जयजयंती एकताल

कालेर तरंगे भासिते भासिते, कोथाय आसितु हाय ।
सीमा अन्त रेखा, नाहि जाय देखा, सिन्धुते बिन्दु मिलाय ॥ टेक ॥
अनंतेर टाने, अनंतेर पान, धाय प्राण नदी बाधा नाही माने ।
बाधा आछि आ र, सने प्राणे प्राणे, ताहारेई प्राण धाय ॥ १ ॥
सम्मुखे अनन्त, जीवन विस्तार, निविड़ निस्तब्ध नीरव आधार ।
ता र माझे ज्योतिर्मय, निराकार, चमके चपला-प्राय ॥
कहें नाहि हेथा, तुमि आर आमि, अनन्त विजन, हे अनन्त-स्वामी ।
कोथाय राखिब, बॅले कि करिबें, लईया आमि तोमाय ॥ २ ॥
कांपाईये महा-नाद, विश्व-धाम, "आमि आछि" रब उठे अविराम ।
"तुमि आछों" "तुमि आछों" प्राणाराम, आत्माराम देय साय ॥ ३ ॥

८ विहाग, ताल दादरा. (तर्ज—कीजे नाथ हमारे)

निरंकार निरंजन, रुप देखोरे हे मन ।
चिन्मय आनन्दरुप अब, देखो यह हृदय रञ्जन ॥ टेक ॥
सब संयत करो यह चित्त, अब हो शांत समाहित ।
शिवसुन्दर सत्स्वरुप, हृदे में करो मनन ॥ १ ॥
योगी जन मनोहर, देखो रुप अतुलन ।
अरुप रुप माधुरी, यह प्राण विमोहन ॥ २ ॥

करो नित्य दर्शन, यह पाओ प्रेमधन ।
पाय हो मुक्त जीवन, करो सफल जनम ॥३॥

९. कीर्त्तन खयरा

अशब्द अस्पर्श अरूप अव्यय ।
देखा ना दिल के देखते पाय नाय ।
(तुमि दया करे) (मनेर अगोचर) ॥टेक॥
केवल अनुरागे तुमि केना,
प्रभु विना अनुराग, करे यत याग,
तोमारे कि जाय जाना ।
तोमाय धन दिये के किनते पारे
(ओहे अमूल्य धन) (हृदय ना दिले हे) (जीवन ना दिले हे) ॥१॥
तोमाय भक्तिपुष्प, (भक्तवाञ्छाकल्पतरु हे)
पुष्पे ये जन पूजे, तुमि आपनि एसे देखा दाओ
तार हृदय माझे । (डाकते ना डाकिते) ॥२॥

१०. झिंझिट—एकताल.

फुटेल फुलेर माझे, देखो मायेर हासि ।
किबा मृदुमंद, सुधागन्ध, झरे ताहे राशि राशि ॥टेक॥
अरूप रूपेर छटा, विचित्र वरण घटा ।
घोराली रसाली, करे दिक आली, शोभा हरे मन उदासी ॥१॥
कुसुमे प्राण पागल करे, परशे त्रिताप हरे ।
मा हासे फुलेर भितरे, ताइ फुल एत भालवासि ॥२॥

तरुकुंजे पुष्पवन, निरखिये निरंजने ।
भास यागानन्द दासे प्रेमानन्द यागी ऋषि तपोवनवासी ॥ ३॥

११ बेहाग-तिताल (तर्ज—प्राणी हरि शरणाई)

चलो भाई शान्ति निकेतन को ।
चिन्ता सकल विषय की त्यागो एकाग्र करो चञ्चल मनको ॥
प्रेम नयन खोल कर भीतर, देखो रूप निरंजन को ॥
चलो जहा अमृत रस बरसे, पाप ताप रहे नहीं छिनको ॥
प्रेम सिन्धु में डूब डूब तुम, देखो मूर्ति मोहन को ॥

१२ दोहे.

गुण तीनों से है परे, ता में रूप न रेख ।
बोध रूप हो रहजिया, ब्रह्म दृष्टि करे देख ॥ १॥
दाधिया एक एक का ध्यान कर, एक एक आराध ।
एक एक से मिल रहे जाका नाम समाध ॥ २॥
(कबीर) तूं तू करता तूं हुआ, मुझमें रहा न हूं ।
जब आपा परका मिट गया, जित देखूं तित तूं ॥ ३॥
कबीर गूंगा हुआ बावरा बहरा हुआ कान ।
पांवहूं ते पिगल भईया, मारिया सतगुर बान ॥ ४॥
आठ जाम चोसठ घड़ी, तुव निरखत रहे जीव ।
नीचे लोयन किउ करौ, सब घट देखउ पीव ॥ ५॥
रविदास तुमरे ध्यान नित, उठ धिये हैं संत ।
अन्त लेईंगे मुक्त फल, पावेंगे भगवंत ॥ ६॥

चतुर्थ अध्याय.

प्रार्थना.

१. भैरवी.

प्रभु हम आये तुम्हारे पास ॥टेक॥
भक्ति प्रीती भरो मन हमरे, और दीजे विश्वास ॥१॥
देखो अनाथ को त्रिभुवन दाता, नित्य अपना सहवास ॥२॥
परम दयामय नाम तेरे की, चमके भूख और प्यास ॥३॥
माहनी शक्ति से मोह कर हम को, कर लो अपना दास ॥४॥

२. भैरवी. (तर्ज—राम बिना को)

मिल मिलके प्रभु तव यश गावें, तव चरणों में आवें ॥टेक॥
हम सब एक ही तन मन होवें, सब बलिहारी जावें ॥१॥
इस जगमें प्रभु बिन तव सेवा, छिनभर चैन न पावें ॥२॥
तुम बिन और न गति पति कोई, तव चरणन चित्त लावें ॥३॥
सब भगिनी ही सबही भाई, दरशन तेरो पावें ॥४॥
प्रभु तव प्रेम वचन हो साचा, हम सब भिक्षा मागें ॥५॥

३. माड—दादरा. (करो हरि का भजन.)

मायमें विराजो, प्राण आधारे, देखे छबि तेरी रात दिनारे ॥टेक॥

छोड़के तिहारे, चरण पियारे, रहेंगे दुखारे, कबतक सारे ॥१॥
प्रेमसिंधु में, मगन करो जी, रात रहें हम रात दिनारे ॥२॥
मस्त होय गावें, देर न लावें, आज खुल जावें हृदय किवाड़े ॥३॥
अन्धकार नाशे, ज्योति प्रकाशे, प्रेम सूर्य भासें, हृदय हमारे ॥४॥

४. विहाग—दादरा.

कीजे नाथ हमारे हृदय कुंज में विहार ।
रहिये सदा साथ प्यारे, प्राण पति प्राणाधार ॥ टेक ॥
बैठ प्रेम तटिनि तीरे, आनन्द अश्रु नयन भरे ।
तुम्हारे चर्न धोएं प्यारे, ऐसे भाग्य कहां हमार ॥१॥
निज मनोवृत्ति बाला, बनाए भक्ति पुष्प माला ।
तुम्हारे कंठमें धरें, करें पूजा उपहार ॥२॥
तुम्हारे निवास से, हृदय शुन्य बन जैसे ।
बने है नन्दन बाग, स्वर्गीय मनोहार ॥३॥

५. आलेया—झांपताल.

तुम ही को किया हम, जीवन का ध्रुव तारा ।
संसार समुंद्र में कभी, रहूंगा न पथ हारा ॥ टेक ॥
जहां हम जाय नाथ, वहां ही तुमरा प्रकाश ।
आकुल नैनों में मेरे, डालत हो किरण धारा ॥१॥
सब सुख संगोपन, जागत है सदा मन में ।
पल ही तुम विच्छेद होने पे, नहीं देख कूल किनारा ॥२॥
कभी विपद में यदि, आवै को यह हृदय चाही ।
देख ही मुख तुम्हारा, होना है शरम सारा ॥३॥

६. बिभास—पक्का.

सदानन्द सुखदायक भगवन्, नाम तेरा गावें ।
प्रेम मधु नैनन से बरसें सरस नेह पावें ॥टेक॥
अनुदिन मांगें प्रेम सुधारस, नित नव सुख पावें ।
ऐसे सदियां त्रिभुवन माया, छोड़ कहां जावें ॥१॥
जाग्रत होय विवेक हमारा, ध्यान तेरा लावें ।
भवसागर के पार उतरके तब दर्शन पावें ॥२॥
भक्ति भाव से प्रभु जी तेरा, नाम सुधा गावें ।
जगजीवन मम हृदय बिहारी, तन मन बस आवें ॥३॥

---

७ राग कल्याण.

आनन्द दाता आनन्द दीजे, आनन्द आनन्द आनन्द दीजे ॥टेक॥
आनन्द सागर अपरम्पारा, कोई नहीं है तुम से न्यारा ॥१॥
हम हैं भिखारी तेरे दर के, भिक्षा हमें आनन्द की दीजे ॥२॥
जहां देखें वहां आनन्द पावें आनन्द रूप हरि गुण गावें ॥३॥

---

८ भैरवी, त्रिताल. (ठुमरी) (तर्ज—प्राणी हरि शरणाई)

तुम सग लाग रहे मेरी प्रीत ।
छिनभर होवे छवि न न्यारी, चित्तमें रहो सदा चित्रित ॥टेक॥
चित्रित अन्तर अंग अंगम, होय रहो अब उस रीत ।
हृदय माय निज राम नाम, हनुमैन भक्त अंकित ॥१॥
तुम संग लागी प्रीत प्यारे हो, अब सब जग विपरीत

मेरे तो तन मन धन जीवन सब तब चर्णन अर्पीत ॥२॥
प्राण बीनके तार बजाये सुनाये विवेक संगीत ।
नाम माहीं गलतान बनालो करो जनम सुफलीत ॥३॥

९ कमुरी, त्रिताल (तर्ज—सुरुत करले)

प्रीतम प्यारे प्रभुजी हमारे, दया दृष्टि अब करिये जी ।
हृदय हवा है अब तो व्याकुल प्रेम सुधा से भरीये जी ॥टेक॥
जब मैं हुवा हू ब्रह्मपरायण ब्रह्म ही ब्रह्म दराईये जी ।
चलते फिरते जागत सोवत ब्रह्म ही ब्रह्म जपाईये जी ॥१॥
ब्रह्मानन्द में हमको मिलाके ब्रह्मानन्द बनाईये जी ।
जहां देखू तहां ब्रह्माहि पाऊ शरणी अपनी में रखिये जी ॥२॥

१० भिंभिट—एकताल मिश्र कीर्तन

सुनके शब्द ओ३म आया हू निकट, हृदयमें खड़ा हो जाओ तो (दो बार) ।
दखके जनम सफल करू मैं ॥ हृदयमें खड़ा हो जाओ तो ॥ टेक ॥
तुमरे नाम के फूटे हैं फूल, सुगन्ध से प्राण करते आकूल ।
जतन से परोई है उनकी माला, आदर से गले पहिरो तो ॥
निवू उस से तुम केस शोभत हो आदर से गल पहिरो तो ॥१॥
अति प्रेम करत सदा हो गुप्त विवेक बंसी बजाके पुकारो ।
सुनके वही सुर भुल जाऊ ससार रहू ना तुमसे कबही दूर ॥२॥

११ कालंगड़ा—धमाल (तर्ज—संगत संतन की)

आज हैं धन्य भाग हमरे आये मिल प्राण के प्यारे ।
निरखत नैन आनन्द मूर्ति छिनमें धरे दुःख सारे ॥ टेक॥

तुम बिन पिता हम महा दुखि होके, व्याकुल हृदय पुकारे ।
फिर तुम क्यों न मिलो जो तुमरा, नाम है हृदयाधारे ॥१॥
सदा ही निवास करो हृदय में, छिनभर होवो न न्यारे ।
रहो हृदय के हार होय प्यारे, और नयनन के तारे ॥२॥
हृदय कुटी मेरी भई पवित्र, तुम जो यहां पधारे ।
प्रेम जल नैना बहाय धोवें, पादे कमल यह तुम्हारे ॥३॥

---

१२. गजल—धमाल. (तर्ज—प्रभु सबको बुलाते)

शरण में आ पड़ा तेरी, प्रभु तुझ को मैं भूलूं ना ॥टेक॥
तेरा है प्रेम अविनाशी, जगत सारे में है पूरण ।
देखूं सब कार्ज में मेरे, नजर तुझ से हटाऊं ना ॥१॥
कृपा की है नदी भारी, बही जाती यह जीवन मे ।
पकड़ दो हाथ पीऊं मैं, नाथ देरी लगाऊं ना ॥२॥

---

१३. परज—त्रिताल. (तर्ज—बांध दयाधन राया)

बोलो पिता मेरो दास सुनत है ॥टेक॥
देहु कृपानिधि ज्ञान वह ऐसो, जासे सभी मेरो भ्रम मिटत है ॥१॥
मेरे हृदय को, अपनी तरफ कर, खींचो उसे जैसे चोर पड़त है॥२॥
प्रेम की ज्वाला भरो मम अन्तर, दहक उठे जैसे आग लगत है॥३॥
बिना तेरे बोले शान्ति न पाऊं, तेरी ही आस यह दास धरत है॥४॥
बिन तेरे पीर पैगम्बर जितने, बोलत हैं मोहि रूखो लगत है ॥५॥
कर अभ्यास सुनो तेरी वाणी, जासे ही जीवन मुक्ति मिलत है॥६॥

१४, सोरठ.

तेरी शरण में आय के, फिर आश किस की कीजिये ॥ टेक ॥
नहि देख पड़ता है मुझे, दुनिया में तेरी शान का ।
गंगा किनारे बैठ के, किस कूप का जल पीजिये ॥ १ ॥
पतित पावन नाम सुन कर, मैं शरण तेरी पड़ा ।
अब सफल कर इस नाम को, अपना मुझे कर लीजिये ॥ २ ॥
मिलता है ब्रह्मानन्द जिस के, नाम लेने से सही ।
ऐसे प्रभु को छोड़ कर, फिर कौन से हित कीजिये ॥ ३ ॥

१५. भैरवी—पोस्त.

करो हे नवविधान, मूर्तिमान् ए जीवने ।
योग भक्ति कर्म ज्ञान, सवाकार सम्मिलने ॥टेक॥
साक्रेटीस का आत्मज्ञान, ऋषियों का योग ध्यान ।
मूसा की विवेक नीति, याचि सब श्रीचरणे ॥ १ ॥
ईसा का अभेद भाव, चैतन्य का महाभाव ।
शाक्य की निर्वाण दया, देओ दीन अकिंचने ॥ २ ॥
महम्मद की निष्ठा रति, ध्रुव प्रल्हाद की भक्ति ।
जनक की अनासक्ति, संचारो हृदय मने ॥ ३ ॥

१६. गजल—दादरा.

हे कृपा नाथ करो, अपनी दया हम सब पर ।
लीला प्रगट कर दो, अपनी अब हम सब पर ॥टेक॥
मस्ताना बनाने का, हाथ रखो हम सब पर ।

भक्ति और प्रेम की बरखा, करो अब हम सब पर ॥१॥
दो हमें ज्ञान, करो दूर अन्धेरा सारा ।
मेहर के हाथ कर दो, अपने बन्दा हम सब पर ॥२॥

१७. टोडी. (तर्ज़—प्रीति प्रभु से जोड़)

प्रभु हम राखें साची प्रीत ॥टेक॥
बुद्ध की न्यायी योगी होकर, द्वेष से हों अतीत ॥१॥
चन्द्र जैसे होय दिवाने, गावें तेरे गीत ॥२॥
नानक जैसे होय गृहस्थी, मन को लेवें जीत ॥३॥
महमद जैसे होय विश्वासी, होवें न भय भीत ॥४॥
ईसा के न्यायी सेवा करके, जीवन करें व्यतीत ॥५॥

१८ येमन, त्रिताल (तर्ज़—जिसकूं लागी सोई)

प्रार्थना हि मेरी संग सहेली, प्रार्थना हि मेरी प्यारी है ।
प्रार्थना हि मेरी गुरु अकेली, प्रार्थना हि खड्ग धारी है ॥टेक॥
प्रार्थना हि मेरी गति मति, प्रार्थना हि मेरी शक्ति है ।
प्रार्थना हि मेरी भक्ति मुक्ति, प्रार्थना हि मेरी सहाई है १॥॥
प्रार्थना हि मेरी करे उन्नति, प्रार्थना हि सुखी बनाती है ।
प्रार्थना हि मुझे प्रेम पिलाती, प्रार्थना हि प्रभु मिलाती है ॥२॥
प्रार्थना हि मेरी आनन्दकारी, प्रार्थना हि छुदाधारी है ।
प्रार्थना हि मेरी शान्ति की वारि, प्रार्थना की हाथ जोडी है ॥३॥

१९ टोडी (तर्ज—प्रीति प्रभु से जोड़ रे)

प्रभु सुन अरज हमारी आज ।
सकल जगत के हो तुम स्वामी, दीनबन्धु महाराज ॥ टेक ॥
हम बालक तुम शरण पड़े हैं, राखिय हमरी लाज ।
दयादृष्टि प्रभु हमपर कीजे पूर्ण हो सब काज ॥ १ ॥
तुमरी महिमा सन्त बखाने ध्यान धरें मुनि राज ।
सकल व्यापक अन्तर्यामी घट घट रहे बिराज ॥ २ ॥
भूमि जलथल पर्वत सागर, तुमरा है सब साज ।
दनदनुज नरसब जीवन के, तुम पालक सिरताज ॥ ३ ॥
तुमर भजनबिना सुख नाहीं, कोटिन किये इलाज ।
ब्रह्मानन्द करो करुणा प्रभु, सदा गरीब निवाज ॥ ४ ॥

---

२० गजल—धमाल (तर्ज—शरण में आ पड़ा)

मंगल मूर्ति नाथ तुम्हारी, अब हमको दिखाओगे ।
बिरह उदासी हृदय तपत है अब शान्तिकी बुन्द बसाओगे ॥ टेक ॥
अब ता और रहा नहीं चारा ढूंढ फिरा सब संसारा ।
बिन तेरे नहीं कोइ हमारा अब यह तृष्णा मिटाओगे ॥ १ ॥
अब ता प्रभुजी हरिपद पाऊं तेरा ही निशिदिन गुण गाऊं ।
और न काइ वस्तु चाऊं अब विश्वासी बनाओगे ॥ २ ॥
केशवनन्द ने शंख बजाया, नवविधान की महिमा सुनाया ।
किस विध उन्होंने पद है पाया अब विद्या वो सिखाओगे ॥ ३ ॥
अब हृदयको एसा बनाओ विश्वास सीमेंट लगाओ ।
ऐसी कृपा अब हमपे लाओ, यह दास चरणों में बिठाओगे ॥ ४ ॥

---

२१. जिल्हा पीलू—दीपचन्दी. (तर्ज—चित्त चुनरीआ रंग)

प्रभु मैं तुम पर तन मन वारूं ॥टेक॥
तुमरी मर्जी में मेरी मर्जी, निज इच्छा को मारूं ।
दुनिया इधर की उधर हो जावे, तुम को मैं न बिसारूं ॥१॥
कैसा ही बड़ा प्रलोभन आवे, मैं बाजी नहीं हारूं ।
भीतर बाहिर रोक जो होवे, इक इक करके मारूं ॥२॥
गर दुनिया दो गालि सारी, मुख उज्वल न बिगाडूं ।
औरों की हो पहुंच से ऊपर, जय जय ब्रह्म पुकारूं ॥३॥
सत्य धर्म की अजमत फैले, उसी की जय उचारूं ।
तब इच्छा में कैसा आनन्द, पल पल उसे विचारूं ॥४॥

---

२२ होरी (तर्ज—मेरे तो तुमहीं एक)

सुनो देव यह विनय हमारी, हरो दुख दीनन सुखकारी ॥टेक॥
तुमही हमरे प्राण हो स्वामी, तुमहीं हो हितकारी ।
तुमहीं हमरे परम पिता हो, तुमहीं मंगल कारी ।
करें किससे जाय पुकारी ॥१॥
हम तुमरी भक्ति के प्यासे, आशा करें तुम्हारी ।
निज सेवक और पुत्र जानके, तृप्ति कीजे हमारी ।
मिटे व्याकुलता सारी ॥२॥
इस दुनिया के सुख हैं ऐसे, नीर होय जैसे खारी ।
प्रेम ही केवल अमृत जल है, दे शान्ति अति प्यारी ।
मिटावें तृष्णा सारी ॥३॥

२३, गजल तर्ज़— तूं चातक क्यों समझे)

हरि दीनबन्धु दयाल जी, मरे हृदय आय बसो ।
प्रभु पूरण ब्रह्म कृपाल जी, मेरे मन में आय बसो ॥ टेक॥
मन चाहे सब दर्श का, लोचे है बारम्बार ।
देश्रो दर्शन आ हरि, जन सकल माया अधार ॥ १॥
तुझ बिना अन्धार है जग, बिपद क्लेश अपार ।
हृदय उज्ज्वल कीजिये, मुख शोभा आय दिखार ॥ २ ॥
तेरे दर पर आय के हरि, करें हम पुकार ।
तुझ बिना हे प्राणपति, अब जाय किसके द्वार ॥ ३॥

२४ रेखता—दादरा.

म विश्वासी मैं विश्वासी, मैं विश्वासी तेरा ।
तूं है स्वामी, तूं है स्वामी, तूं है स्वामी मेरा ॥ टेक॥
इक गुजार करूं दीदार, स्वामी मैं हर बेरा ।
राघलता से चित्त चित्तार, गुण गाऊं हरि तेरा ॥ १॥
सब याम पूजा धाम, यामें लेवा लहरां ।
भक्ति भाव आठो जाम, प्रेम फूल पखेरा ॥ २॥

मुक्ति के कारण क्लेश निवारण, जीवन के रखवार (हां हां) ॥ ४ ॥
निर्धन के धन एक तू ही प्रभु, तू ही प्रीतम प्यारे (हां हां) ॥ ५ ॥ ॥

२६. परज—जत.

जय जीवित जाग्रत ब्रह्म उज्ज्वल पावन ।
तुम्हि देव देव (हे) महादेव सत्य सनातन ॥ टेक ॥
जड़ जीव एकताने, नाना भावे नाना स्थाने ।
तोमार मंगल नाम, करते हैं कीर्त्तन ॥ १ ॥
गम्भीर विराट मूर्ति, सर्व्वगत गूढ़ शक्ति ।
महातेज आदि ज्योति, कारणोकारण ॥ २ ॥
हमार जीवनस्वामी, यही तो सन्मुखे तुम्हि ।
देखा नाथ दीन जने, अभयचरण ॥ ३ ॥

२७. असावरी. त्रिताल.

देवो नित सुख हमको हे हरि, हौं तव सहवासी प्रेम भरी ॥ टेक ॥
दरशन भोगें नित्य प्रेम में, सेवा करें तव घरी ही घरी ।
शुद्ध चित्त हो शांत समाहित, चरणामृत पान तेरा करी ॥ १ ॥
भक्ति भाव निन राखें तुममें, शांति पावें सदा प्राण भरी ।
मगन रहें तव दर्शन पाके, येही विनय सुनें लेव हमरी ॥ २ ॥

२८. कीर्तन—झांपताल.

कभी तव दर्शन से हे प्रेममय हरि, उभरंगें हृदय में से चिदानन्द लहरी टे. ॥

तन होगा रोमाचित, और प्राण मन पुलकीत ।
नैनों से बहेगा बारी, वह दिन कभी आवेंगे ॥ १ ॥
प्रेममय तुम्हारी मूर्ति, निर्मल पुण्य ज्योति,
देखेंगे हम प्राण भरि, वह दिन कभी आवेंगे ॥ २ ॥
सब इच्छा पूर्ण होगी, स्पर्श आलिंगन करि, वह दिन कभी आवेंगे ॥३॥

२६. सोरठ. (तर्ज—तेरी शरण में आयके)

हरि अब दर्शन दीजे जी, मुझे अपना कर लीजे जी ॥ टेक ॥
तुम तो पतित उद्धारन हारे, हम पापी हारे तव द्वारे ।
सुन विनय हमारी लीजे जी, मुझे अपना कर लीजे जी ॥ १ ॥
तुम सारी सृष्टि के राजा, दया धर्म तुम्हारे ही काजा ।
प्रभु रक्षा हमारी कीजे जी, मुझे अपना कर लीजे जी ॥ २ ॥
पाप भयंकर अति दुखदाई, वह विपदही भेट कराई ।
शरणी में अपनी लीजे जी, मुझे अपना कर लीजे जी ॥ ३ ॥
शरणी आये कपटी कामी, ज्यों जानो त्यों तारो स्वामी ।
अब दया दृष्टि कीजे जी, मुझे अपना कर लीजे जी ॥ ४ ॥

३०. बाउल सुर—एकताल.

प्रेमपिंजरे, राखे हे नाथ, बन्दी करे चिर दिन ।
पोषा पाखी हये थाकि, डाकि तोमाय अनुक्षण ॥ टेक ॥
धरे आमाय प्रेमेरे जाले, बेंधे राखो प्रेम शृंखले ।
दया करे सुकौशले, जेनो पलाइते ना पाय मन ॥ १ ॥

निज हाते दाओ आहार, पवित्र प्रेम आधार ।
प्रेमभर वारम्बार शुनाओ, सुमिष्ट वचन ॥२॥
करें मारे शिक्षा दान, गाइते तोमार नाम ।
करे तव गुण गान, सार्थक करि जीवन ॥३॥
चाहिये तोमार पाने, अनुराग नयने ।
मग्न हवें नामगाने, तुमि कारबे श्रवण ॥४॥

३१. जीवनपुरी.

प्रेम रस का भर कर प्याला, तुम मुझ को दो पिला हरि ।
मुरझा गया है यह दिल मेरा, तुम इसको दो जिला हरि ॥टेक॥
अपने प्रेम के चरमे से तुम, मुंह मेरा दो मिला हरि ।
दुख सारे जाऊं भूल अभी में, प्रेम नशा दो खिला हरि ॥१॥

३२. गजल, त्रिताल.

जगदीश ईश प्यारा, सुन बेनती हमारी ।
तुमरी शरण में आया, प्रभु लीजिये उबारा ॥टेक॥
तुमने जगत बनाया, सब साज से सजाया ।
किसुने न भेद पाया, क्या शक्ति है तुमारी ॥१॥
हम जीव सुत तुमारा, तुम हो पिता हमारा ।
सब का तू ही सहारा, सुख रूप निर्विकारी ॥२॥

३३. भैरवी—एकताल.

प्रभु बल दाओ मारे बल दाओ, प्राणे दाओ मोर शक्ति ।

तन होगा रोमाञ्चित, और प्राण मन पुलकीत ।
नैनों से बहेगा बारी यह दिन कभी आवेगे ॥ १ ॥
प्रेममय तुम्हारी मूर्ति, निर्मल सुख ज्योति,
दर्शेंगे हम प्राण भरि, यह दिन कभी आवेंगे ॥ २ ॥
सब इच्छा पूर्ण होगी स्पर्श आलिंगन करि, यह दिन कभी आवेंगे ॥३॥

---

२६ सोरठ (तर्ज—तेरी शरण में आयके)

हरि अब दर्शन दीजे जी, मुझे अपना कर लीजे जी ॥ टेक ॥
तुम हो पतित उद्धारन हारे, हम पापी हैं तव द्वारे ।
सुन विनय हमारी लीजे जी, मुझे अपना कर लीजे जी ॥ १ ॥
तुम सारी सृष्टि के राजा, दया धर्म तुम्हारे हैं काजा ।
प्रभु रक्षा हमारी कीजे जी, मुझे अपना कर लीजे जी ॥ २ ॥
पाप भयंकर अति दुखदाई, उन विपदहीं मेट कराई ।
शरणी में अपनी लीजे जी, मुझे अपना कर लीजे जी ॥ ३ ॥
शरणी आये कपटी कामी, ज्यों जानो त्यों तारो स्वामी ।
अब दया दृष्टि कीजे जी, मुझे अपना कर लीजे जी ॥ ४ ॥

---

३० बाउल सुर—एकताल

प्रेमपिंजरे, राखे हे नाथ, बन्दी करे चिर दिन ।
पोषा पाखी हये थाकि, डाकि तोमाय अनुदिन ॥ टेक ॥
धरे आमाय प्रेमेर जाले—बेंधे राखो प्रेम शृखले ।
वश करे सुकौशले, जेनो पलाइते ना पाय मन ॥ १ ॥

निज हात दाओ आहार, पवित्र प्रेम आधार ।
प्रमभर बारम्बार शुनाओ, सुमिष्ट वचन ॥२॥
करें मोर शिक्षा दान, गाइबे तोमार नाम ।
करे सब गुण गान सार्थक करि जीवन ॥३॥
चाहिये तोमार पाने, अनुराग नयने ।
मन हेरे नामगाने, तुमि करबे श्रवण ॥४॥

---

३१. जीवनपुरी.

प्रेम रस का भर कर प्याला, तुम मुझ को दो पिला हरि ।
मुरझा गया है यह दिल मेरा तुम इसको दो खिला हरि ॥टेक॥
अपने प्रेम के चरणों से तुम, मुझ मेरा दो मिला हरि ।
दुख सारे जाऊं भूल सभी मैं, प्रेम मधा दो खिला हरि ॥१॥

---

३२. गजल, त्रिताल

जगदीश ईश प्यारा, सुन बिनती हमारी ।
तुमरी शरण में आया, प्रभु लीजिये उबारी ॥टेक॥
तुमने जगत बनाया, सब साज से सजाया ।
किसुने न भेद पाया क्या शक्ति है तुमारी ॥१॥
हम जीव सुत तुमारा, तुम हो पिता हमारा ।
सब का तूं ही सहारा, सुख रूप निर्विकारी ॥२॥

---

३३ भैरवी—एकताल

प्रभु बल दाओ मोरे मन दाओ प्राण दाओ मोर शक्ति ।

सकल हृदय लुभाइये तुमारे कारिते प्रणति ॥ टेक ॥
सरल सुगमे भ्रमित सब अपकार क्षमिते ।
सुखे दु खे लाभे क्षतित, सुनिते तुमार भारति ॥१॥
हृदये तुमार पूजिते, जीवने तुमार बुझिते ।
तुमार माझार खुजित, चित्तर चिर वसति ॥२॥
तब काज सुखे बहित, आनन्द जगत रहिते ।
नव नव भावे भासिते निरबे कारिते भक्ति ॥३॥

बलिहार तेरे नाम के जगदीश पुकार सुन ॥ टेक ॥
तेरे सिवाय कोई नहीं, जो दुख हरे मेरे ।
अब शुद्ध करो मति मेरी, जगदिश पुकार सुन ॥ १ ॥
आंशा तेरी पाली नहीं, फन्दों मे फंसा रहा ।
तोड़ो जगत जञ्जाल को, जगदिश पुकार सुन ॥ २ ॥
ताप जीवन के हरो, प्रभु राखो आनन्द मे ।
दे भक्ति अपने नाम की, जगदिश पुकार सुन ॥ ३ ॥
ध्यान मेरा नित्य रहे, तुं हमारा हजुर ।
भोगु तेरा ही प्रेम रस, जगदिश पुकार सुन ॥ ४ ॥

३६. सोरठ. (तर्ज—तेरी शरण में)

हरि शरण में आयके, फिर भय किसका कीजिये ।
माधुरी मुर्त के सदा, दर्शन हृदय मे कीजिये ॥ टेक ॥
यह मनोहर मुरली जिसकी, बज रही है रात दिन ।
सफल करो जीवन अपना, सदा ध्यान उनका कीजिये ॥ १ ॥
बलिहार होता है यह दिल, नाम उनके लेने से ।
शांति सदा मिलती हमें, फिर आनन्द क्यों न कीजिये ॥ २ ॥
असत्य से वह हटाते हैं, और सत्य मे लेजाते हैं ।
अन्धकार से बचाते हैं, प्रकाश का सुख लीजिये ॥ ३ ॥
प्रभु चरणों में शीश नवाके, जीवन सफल अपाना करे ।
सदा रहे हरि शरण तुम्हारी भिक्षा हमें यह दीजिये ॥ ४ ॥

३७. अभग

साची प्रीति हम तुम संग जोडी, तुम संग जोड अवर संग तोडी ॥टेक॥

जो तुम बादल तो हम मोरा, जो तुम चन्द्र हम भैयजी चकोरा ॥ १ ॥
जो तुम दीवा तो हम बाती, जो तुम तीरथ तो हम यात्री ॥ २ ॥
जहां जहां जाऊं तहां तेरी सेवा, तुम सा ठाकुर और न देवा ॥ ३ ॥
तुमरे भजन कटे भय फासा, भक्ति हेतु गावे रवि दासा ॥ ४ ॥

---

३८. कालंगड़ा—दीपचंदी (तर्ज—प्रभु हम आय)

हरि मोहि अपना रूप दिखा दो, रूप दिखा कर प्रेमी बनावो ॥ टेक ॥
इस संसार में रूप दिखा कर, तन मन हमरा हर ले जावो ॥ १ ॥
निज इच्छा के अनुसार स्वामी, जो जी चाहि हम को बनावो ॥ २ ॥
स्वर्ग राज के वासियों संग, नित हमरा प्रभु मेल करावो ॥ ३ ॥

---

३९. झिंझिट—एकताल (तर्ज—दयामय हरि दयामय)

हे दयाल हे कृपाल कृपा तेरी चाहुं दीनानाथ हरिनाम अहरनीश गाऊं हो॥
अधम उद्धारण नाम तुम्हारो, पतितन को तुं पावन हारो ॥ १ ॥
शरण तुम्हारी आयो प्रभुजी, चरणन में पडा हुं ॥ २ ॥
माधव नाम मुक्ति को दाता, चरणों में शीश नमाऊ ॥ ३ ॥

---

४०. जयजयंती—तज.

दर मादे ठाडे दरबार ॥ टेक ॥
तुझ बिन सुरत करे कौन मेरी, दरशन दीजिय खोल किवाड़ ॥१॥
तुम धन धनी उदार त्यागी, सरवन सुनिये सुयश तुम्हार ॥२॥
मागू कासे एक सब देखे, तुम ही ते मेरो निस्तार ॥३॥

जयदेव नामा विप्र सुदामा, तिन पर कृपा भई अपार ॥४॥
कहत कबीर तुम सामर्थ दाते, चार पदारथ देत न वार ॥५॥

४१. विभास—झांपताल.

हृदय कुटीर मन, करो नाथ पुण्याश्रम, ।
विराजो आनन्दे यहां, दिवा निशि अविराम ॥टेक॥
जीवन करो हमारा प्रेमपरिवार, गृह देवता पिता होके तुम करो हे विहार ।
मंगल शासने सदा करो तुम शासन ॥हृदय॥ १
प्रति दिन भक्ति भेंट, करेंगे पूजा अर्चना, हँ वा जलि पूरे करेंगे चरणबन्दना ।
नित्य नवनव ज्ञान लेकर प्रेम के हार सजायेंगे सब सिंहासन करके बहु सुंदर
गलेदश्व पके तुम्हें करके अभिनन्दन ॥हृदय॥ २॥
रिपु परिचारिका दल, मिलके आनन्द से सकल,
अनुदिन करेंगे सब, सेवा आयोजन ।
इच्छा में इच्छा मिलाके विच्छेद मिलन होंगे,
तुम्हारे प्रेम आविर्भावे आत्मा होगा स्वर्ग धाम ॥ ३॥

४२. झिंझट—दादरा. (तर्ज—दयामय हरि दयामय)

दीननाथ दीनबन्धु, करुणानिधि प्रेम सिन्धु ।
सर्व आनन्द पूर्ण ब्रह्म, मेरी ओर हेरो हे ॥टेक॥
मेरी गति तेरा हाथ, कृपा करो विश्वनाथ ।
हूं अनाथ गहो हाथ, जानो मोहे चेरो हे ॥१॥
जानूं नहीं भक्ति भाव, योग ज्ञान तप उपाव ।
नही वैराग्य प्रेम ध्यान, एक शरण तेरो हे ॥२॥

मेरी मति अति मलीन सर्व प्रकार हूँ मैं दीन ।
साहिब तुम, मैं अधीन विनय कर जोड़े हैं ॥ ३ ॥
पापी अघरूप मूल, सर्व प्रकार असुर तुल्य ।
कृपा करो मो पै मूल, मेटो दुःख मेरो है ॥ ४ ॥

४३ भैरवी. (तर्ज़—प्रभु हम आय तुम्हारे)

प्रभु मुझे भावों से भरो भरपूर ॥ टेक ॥
उठूँ तो भाव से बैठूं तो भाव से, कबहूँ न उनसे दूर ॥ १ ॥
खाऊँ तो भाव से बोलूं तो भाव से, भावों का रहूँ अंकुर ॥ २ ॥
चलूं तो भाव से फिरूं तो भाव से, जहाँ तहाँ देखूं हजूर ॥ ३ ॥
सकल सृष्टि के भाव से भर कर, जीवन करूं मधुर ॥ ४ ॥

४४. बनजारा—त्रिताल

अब जिस विधि योग्य बनाओ, गुन अपना नाथ गवाओ ॥ टेक ॥
चींटी के मुख में जैसे, मोदक न समावे वैसे जी ।
है हाल हमारा स्वामी, तुम जानत अन्तरयामी ॥ १ ॥
सिर चरन कमल पर धर के, तन मन सब अर्पन कर के जी ।
मांगें उस बल, बुद्धि, बानी, जोपाई प्रथम आप ध्याना ॥ २ ॥
हम मुनि हैं तुमरी कृपा तें, अब मूक हैं शास्त्र पढ़ाते जी ।
करें पिंगल गिरिवर स्वारी, उस कृपा के हम हैं भिखारी ॥ ३ ॥
ऐसी प्रेममय दीन पूजा, गुरु कौन सिखावे दूजा जी ।
कर बांध ले पास बिठाओ, और अपना पाठ पढ़ाओ ॥ ४ ॥

५० खाम्नाज—एकताल

करत कितना प्यार (तुम) हे मा, यह मानव सन्ताने (पापी) ।
सिमरण स यह प्रेम धारा बहे, दा नयनों से (हे मा) ॥ टेक ॥
तव चरणन में अपराधी हु जो में दुर्बुद्धि
तो भी सुख चार दुख सुनाओ मधुर वचने ।
य सिमरण स प्रेम धारा बह दा नयनों से (हे मा) ॥ १ ॥
(बार बार प्रेम भरे, पुकारत हो तू मा)
(प्रम बाहु पसार के, पुकारत हो तू मा)
(स्नेह विगलीत हाक पुकारत हो तूं मा)
(आओ आओ आओ बाले पुकारत हो तू मा)
(अपराध क्षमा करों, पुकारत हा तू मा)
(हस मुख आनन्द भरे पुकारत हा तुं मा)
(तू मा आनन्दमयी, पुकारत हा तू मा)
(जीव की मलीन दशा देख पुकारत हा तू मा) ॥२॥
तुम हमारे लिये स्वर्ग निकेतन म ह मा ।
कितना सुख शांति अतुल सम्पति रखा है तुमने ॥ स्वर्ग निकेतन म॥
राजाती हो अपन हाथ स विविध विधान है मा ॥ ३ ॥
तुमरे प्रम का यह भार उठा नहीं सकता और है मा ।
कर प्राण क्रन्दा हृदय भञ्जन तव स्नेह दर्शने ॥
नई मे शरण ह मा तव श्रीचरणे ह मा ॥ ४॥

---

५१ सुरटमल्लार—एकताल

(प्रभु) कब होगा तुमरे प्रेम का सचार ।
होंगे पूर्ण काम बोलें हरि नाम, नयनों स बहेंगे प्रेम अश्रुधार ॥ टेक॥

कहां जावें हम और कहां रोवें बोलो हे मा ।
आदर से हृदय लेके, तुम बिन पूंछे कौन अश्रुपानी ॥ ४ ॥
तुमहीं प्रिय माता केवल आशा भरोसा सम्बल ।
दीन अनाथ का हे मा, तारो दीनन तारिणी ॥ ५ ॥

४८ विहाग (तर्ज—हे विश्वपति तव)

हे जगपति ! संकट मेरो हरो ॥ टेक ॥
जगत पदार्थ बहुत कमाये, वासे न कार्य्य मेरो सरो ॥ १ ॥
जगत मे देखा कोई न मेरा, एक तुमहीं हो मेरा आसरो ॥ २ ॥
तुमसे बिनती करू कर जोड़ि, अब मोहीं चित तुम धरो ॥ ३ ॥
करुणानिधी मेरे शुष्क हृदय में, प्रेम और भक्ति तुम भरो ॥ ४ ॥

४९ झिंझिट—दादरा. (तर्ज—दीनानाथ दीनबंधु)

हृदय रमण प्राणनाथ, दीनेश्वर जगन्नाथ ।
भगतन के रहो साथ, दीनन हितकारी ॥ टेक ॥
काटो मम मोहफास, करो क्लेश सब बिनाश ।
पूर्ण करो मेरी आश, दु ख विपद हारी ॥ १ ॥
करूं सदा तुम से प्रीति, विषयन से हो अप्रीति ।
नित नित तव गाऊं गीत, शरण ले तुम्हारी ॥ २ ॥
जपूं नित्य तेरो नाम, त्यागू सब मलीन काम ।
जाऊं नाथ तेरे धाम, होकर बलिहारी ॥ ३ ॥

५०. श्याम्याज—एकताल.

करत कितना प्यार (तुम) हे मा, यह मानव सन्ताने (पापी) ।
सिमरण से यह प्रेम धारा बहे, दो नयनों से (हे मा) ॥ टेक ॥
तव चरणन में अपराधी, हूं जो मैं दुर्बुद्धि,
तो भी मुख चोर देख सुनाओ मधुर वचने ।
ये सिमरण से प्रेम धारा बहे दो नयनों से (हे मा) ॥ १ ॥
(बार बार प्रेम भरे, पुकारत हो तू मा)
(प्रेम बाहु पसार के, पुकारत हो तू मा)
(स्नेह विगलीत होके, पुकारत हो तूं मा)
(आओ आओ आओ बोले, पुकारत हो तूं मा)
(अपराध क्षमा करे, पुकारत हो तूं मा)
(हंस मुख आनन्द भरे, पुकारत हो तुं मा)
(तूं मा आनन्दमयी, पुकारत हो तूं मा)
(जीव की मलीन दशा देख, पुकारत हो तूं मा) ॥ २ ॥
तुम हमारे लिये स्वर्ग निकेतन में, हे मा ।
कितना सुख शांति, अतुल सम्पत्ति रखा है तुमने ॥ स्वर्ग निकेतन म ॥
राजरानी हो अपने हाथ से विविध विधान हे मा ॥ ३ ॥
तुम प्रेम का यह भार, उठा नहीं सकता और हे मा ।
करे प्राण क्रन्दन, हृदय भञ्जन, तव स्नेह दर्शने ॥
लई मैं शरण, हे मा तव, श्रीचरणों हे मा ॥ ४ ॥

---

५१. सुरटमल्लार—एकताल

(प्रभु) कब होगा तुमरे प्रेम का संचार ।
होंगे पूर्ण काम बोलें हरि नाम, नयनों से बहेंगे प्रेम अश्रुधार ॥ टेक ॥

कभी होंगे हमारे शुद्ध प्राण मन, जायेंगे कभी हम प्रेम वृन्दावन ।
कटेंगे सब यह संसार बन्धन, पाय ज्ञानांजन दूर होगा अन्धकार ॥ १ ॥
कभी पारस मणी करेगा स्पर्शन, लोहसम देह होगा कञ्चन ।
हरिमय विश्व करेंगे दर्शन, लोटेंगे भक्ति पथ पै कई बार ॥ २ ॥
कभी जायेंगे दीख धर्म कर्म, कभी जायेंगे जातिकुल का भरम ।
जायेंगे कच भय भावना शर्म, परिहरि अभिमान लोकाचार ॥ ३ ॥
माखें सब अंग में भक्त पद धूली, लेकर कन्धे पै चिरवैराग की झूली ।
पीवेंगे प्रेमवारी अंजली अंजली, बह रही जो प्रेम यमुना की धार ॥ ४ ॥
प्रेम में पागल होकर, हंसेंगे रोयेंगे, सच्चिदानन्द सागर में सोयेंगे ।
मस्त हम होकर सब को मस्त करेंगे, हरिचरणों में नित्य करेंगे विहार ॥ ५ ॥

- - - - - -

पाप हरो ताप हरो जड़ता अरु शोक हरो ।
सकल व्याधि दूर करो आर्य करो मोर ॥ १ ॥
देवज्ञान दिव्यज्ञान देवशीलि शुद्धशीलि ।
देवभाव पुण्य आर पानि भितु करम मोर ॥ २ ॥
धर्म दया मा बड़ देओ निर्दिन्ता सन्तोष देओ ।
विवेक वैराग्य देओ मा देओ हे पद आश्रय ॥ ३ ॥

---

५४ श्लोक—एकताल

काथा आछो प्रभु प्रसाछि दीनहीन आलय नाहि मोर असीम संसार ।
अति दूरे दूरे भ्रमिछ आमि हे, प्रभु प्रभु बोले डाकि कातरे ॥ टेक ॥
साड़ा कि दीबे ना दीने ? कि आव ना रहिब फेलिय अकूल अधारे ।
पथ जे जानिने रजनी आसिछे एकला आमि ए भव माझारे ॥ १ ॥
जगत जननी लहो लहो क्रोड़े विराम मागिछे श्रान्त शिशु ए ।
पियाओ अमृत तृषित से अति जुड़ाओ ताहारे स्नेह बर्षीय ॥ २ ॥
त्यजि ए तोमार गाछिला चलिय कांदिछे आनि के पथ हाराइय ।
आर तो आव ना रहिब ताय साय धरिये नव हाय भ्रमिब निर्भय ॥ ३ ॥
एसो तब प्रभु स्नेह नयना, ए मुख पाने चाओ घुचिब जातना ।
पाइबो नव बल, मुछिबे अश्रु जल चरण धरिये पूरिबे कामना ॥ ४ ॥

---

५५ काफी—(तर्ज—सौदो कर साँइय)

प्रभु तू मेरा प्यारा है तू ही मेरा सहारा है ।
तू ही प्रीतम अपारा है तू ही जीवन अधारा है ॥ टेक ॥

प्रार्थना के भजन

कभी होगा हमारा शुद्ध प्राण मन, जायेंगे कभी हम प्रेम वृन्दावन ।
कटेगा सब यह संसार बन्धन, पाप अज्ञानाञ्जन दूर होगा अन्धकार ॥ १ ॥
कभी पारस मणी करेगा स्पर्शन लोहसम देह होगा कञ्चन ।
हरिमय विश्व करेंगे दर्शन, लेटेंगे भक्ति पथ पे कई बार ॥ २ ॥
कभी जायगा दीख धर्म कर्म, कभी जायेंगे जाति कुल का भरम ।
जायगे कब भय भावना शर्म, परिहरि अभिमान लोकाचार ॥ ३ ॥
माखे सब अंग में भक्त पद धूली, लेकर कन्धे पे विराग की झोली ।
पीवें प्रेमवारी अंजली अंजली, बह रही जो प्रेम यमुना की धार ॥ ४ ॥
प्रेम में पागल होकर, हँसेंगे रोयेंगे, सच्चिदानन्द सागर में तरेंगे ।
मस्त हम होकर सब को मस्त करेंगे, हरि चरणों मे नित्य करेंगे विहार ॥ ५ ॥

पाप हरो ताप हरो, जड़ता अरु शोक हरो ।
सकल व्याधि दूर करो, त्राण करो मेरो ॥१॥
देवज्ञान दिव्यज्ञान, देवप्रीति शुद्धप्रीति ।
देवनाथ सुख और शान्ति, भिक्षुक मैं तेरो ॥२॥
धैर्य दया मा बल देओ, निन्दा संतोष देओ ।
विवेक वैराग्य देओ मा, दया हे पद आश्रय ॥३॥

---

५४ श्लोक—एकताल

कोथा आछो प्रभु, एसेछि दीनहीन, आलय नाहि मोर असीम संसारे ।
अति दूरे दूरे, भ्रमिछि आमि हे, प्रभु प्रभु बोले डाकि कातरे ॥ टेक ॥
साड़ा कि दिबे ना, दीने कि चाबे ना राखिबे फेलिये अकूल आंधारे ।
पथ जे जानिने, रजनी आसिछे, एकेला आमि ए बन माझारे ॥१॥
जगत जननी लहो लहो क्रोड़े विराम मागिछे श्रान्त शिशु ए ।
पियाओ अमृत, तृषित से अति जुड़ाओ ताहारे स्नेह बरषिये ॥२॥
त्यजि छ तोमार गेछिलो चलिये, कांदिछे आजि के पथ हाराइये ।
आर से जाबे ना रहिबे साथ साथ, धरिबे तब हाथ अमिय निलय ॥३॥
एसो तबे प्रभु स्नेह नयन, ए मुख पाने चाओ घुचिबे जातना ।
पाइबो नव मन, मुछिबे अश्रु जल, चरणे धरिबे पूरिबे कामना ॥४॥

---

५५ काफी—(तर्ज—सौदो कर साँइय)

प्रभु तू मेरा प्यारा है तू ही मेरा सहारा है ।
तूही प्रीतम अपारा है तू ही जीवन अधारा है ॥ टेक ॥

कभी होंगे हमरा शुद्ध प्राण मन, जायेंगे कभी हम प्रेम वृन्दावन ।
कटेंगे सब यह संसार बन्धन, पाये ज्ञानांजन दूर होगा अन्धकार ॥ १ ॥
कभी पारस मणी करेगा स्पर्शन, लोहसम देह होगा कञ्चन ।
हरिमय विश्व करेंगे दर्शन, लेवेंगे भक्ति पथ पै फरैशार ॥ २ ॥
कभी जायेंगे दील धर्म कर्म, कभी जायेंगे जातिकुल का भरम ।
जायेंगे कब भय भावना शर्म, परिहरि अभिमान लोकाचार ॥ ३ ॥
माखें सब अंग में भक्त पद धुली, लेके कन्धे पै सिर-वैराग की झुली ।
पीवें प्रेमवारी अंजली अंजली, बह रही जा प्रेम यमुना की धार ॥ ४ ॥
प्रेम में पागल होके, हंसेंगे रोयेंगे, सच्चिदानन्द सागर में तरेंगे ।
मस्त हम होके सब को मस्त करेंगे, हरिचरणों में नित्य करेंगे विहार ॥ ५ ॥

---

५२. गजल—धमाल. (तर्ज—सरग में आ पड़ा)

भरोसा है मुझे तेरा तुंही मेरा सहायक है ॥ टेक ॥
सकल दुनियांके अन्दर में अखण्डित राज्य है तेरा ।
चराचर विश्वका मालिक तुंही सब गुण के लायक है ॥ १ ॥
जगत में जीव हैं जेते तेरे आधीन में सारे ।
सभी नरदेवदैत्यनका तुंही सिरताज नायक है ॥ २ ॥
धार विश्वास को दिल में शरण में जो पड़े तेरी ।
करै सब कामना पूरण भोग अरु मोक्ष दायक है ॥ ३ ॥
नहिं है शानका तेरा जगतमें दूसरा कोई ।
जो ब्रह्मानन्द सब जगका तुंहि कारणविधायक है ॥ ४ ॥

---

५३. आलैया—एकताल.

हे दयाल हे कृपाल दयादृष्टि फेरो ॥ टेक ॥

पाप हरो ताप हरो, जड़ता अरु शोक हरो ।
सकल व्याधि दूर करो, त्राण करो मेरो ॥ १ ॥
देवज्ञान दिव्यज्ञान, देवप्रीति शुद्धप्रीति ।
देवनाथ सुख आर शान्ति, भिक्षुक मैं तेरो ॥ २ ॥
धैर्य देओ मा बल देओ, तितिक्षा संतोष देओ ।
विवेक वैराग्य देओ मा, देओ हे पद आश्रय ॥ ३ ॥

---

५४. श्लोक—एकताल.

कोथा आछो प्रभु, एसेछि दीनहीन, आलय नाहि मोर असीम संसारे ।
अति दूरे दूरे, भ्रमिछि आमि हे, प्रभु प्रभु बले डाकि कातरे ॥ टेक ॥
साड़ा कि दीबे ना, दीने कि चाबे ना, राखिबे फेलिये अकूल आँधारे ।
पथ जे जानिने, रजनी आसिछे, एकेला आमि जे ए बन माझारे ॥ १ ॥
जगत जननी लहो लहो क्रोड़े, विराम मागिछे श्रान्त शिशु ये ।
पियाओ अमृत तृषित से अति, जुड़ाओ ताहारे स्नेह बरषिये ॥ २ ॥
त्यजि ए तोमार गाछिलो चलिये, काँदिछे आजिके पथ हाराइये ।
आर से जाबे ना रहिबे साथ साथ, धरिये तव हाथ भ्रमिबे निर्भय ॥ ३ ॥
एसो तव प्रभु स्नेह नयन, ए मुख पाने चाओ घुचिबे यातना ।
पाइबो नव बल, मुछिबे अश्रु जल, चरण धरिये पूरिबे कामना ॥ ४ ॥

---

५५. काफी—(तर्ज—सौदा कर साँइय)

प्रभु तू मेरा प्यारा है तू ही मेरा सहारा है ।
तू ही प्रीतम अपार है, तू ही जीवन अधार है ॥ टेक ॥

तुझ को छोड़ कहां जाऊं, कहां पै हाल सुनाऊं ।
वपाव तुझ में ही इक पाऊं, तू सुख ही का भंडारा है ॥ १ ॥
तू दे शान्ति मेरे मन को, न भटके यह कभी अन्य को ।
लगाऊं शुभ कर्मन को, आनन्द इसमें अपारा है ॥ २ ॥
तेरी इच्छा मे सुख मानूं, यही विश्वास नित ठानूं ।
स्वामी एक तुझ को जानूं यह मन मेरा धारा है ॥ ३ ॥

---

५६. जोग (तर्ज़—मन मोहन ने)

मैं तेरा हूं तू मेरा है, कभी न बिसरु भूल ॥ टेक ॥
तू ही गगन में तू ही मैदान में, तू ही मूल का मूल ॥ १ ॥
तू ही डार में तू ही पात में, तू ही रंगीला फूल ॥ २ ॥
पूर्व ढूंढ्या पश्चिम ढूंढ्या, कहीं न मिल्या स्थूल ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, यही बन्धन का मूल ॥ ४ ॥

---

५७. झिंझिट दादरा. (तर्ज़—जगदीश ईश प्यारा)

तुम बन्धु तुम नाथ, निशि दिन तुमहि हमारे ।
तुमही सुख तुमही शान्ति, तुमही एक सहारे ॥ टेक ॥
तुमही स्वामी जग त्राता, हम सब दास तुम्हारे ।
नित लेवें तव आस, हे प्रभु प्राण आधारे ॥ १ ॥
अब आय तव बलिहार, यह दोनों कर पसारे ।
सब प्राणी तेरी पाय, होवें सबहि सुखारे २ ॥ ॥

---

५८ भैरवी.

सुनो जी दया निधि, हरा चित्त की आधि ॥ टेक ॥
भक्ति से मन दीन दयामय, भरना पूर्ण हमारा ।
ध्यान भजन को निश दिन कर के, गावें गुण तुम्हारा ॥१॥
त्रिभुवन के तुम नाथ विराजत, सब सुख का ही दाता ।
सब ही तुम हो आप्त हमारा, पिता माता भ्राता ॥२॥
गावत नाचत पाद कमल पर, रक्खूं शीस दयाला ।
पालन करना दीन दास का, तुम हो पालन वाला ॥३॥

५९. बड़हंस धमाल (तर्ज—चलो मन हरि).

प्रभु हम आये तुम्हारे पास, जिऊं मानो तिऊं ही करलो दास ॥टेक॥
व्याकुल हृदय को अमृत पिलाओ, मिटाओ हमरी प्यास ।
तन मन हमरा भक्ति से भर दो, जिससे जीवन हो उल्हास ॥१॥
आनन्द लहरी उठ श्वासो श्वास, संसार में कर दो ही वास ।
संसार सुन्दर तेरा ही मन्दर, हरीम देखें तेरी रास ॥२॥
यही जग में तुम प्रभमय वास, और मिलन की राखे कहा आस
तुमरी कृपा ही हैं राखें विश्वास, पावें तुम पूरण को खास ॥३॥
इस जग को ही स्वर्ग बनावें, करें आज्ञा पूरी तेरे दास ।
वाह गुरु फतहे आनन्द से कह कर, देखें जहा तहा तिहारा वास ॥४॥

६०. दोहे.

और सुख कोय बात में नाहीं, राम नाम आधार ।
तुलसीदास प्रभु विनती करत है, चरण कमल चित्त धार ॥१॥

(दादू) मैं भिखारी मागता, दर्शन देहु दयाल ।
तुम दाता दुख भंजना, मेरी करो संभाल ॥ २ ॥

दादू कहै जो कुछ हमको तुम दिया, सो सब तुम्हारी लेव ।
तुम बिन मन माने नहीं, दर्श अपना देव ॥ ३ ॥

तू ठाकुर जगदीश है, हम सब तुमरे दास ।
कृपा करे बर दीजिये, तुंहि सिमरे हर श्वास ॥ ४ ॥

दास कहे कर जोर के, हृदय विराजो आय ।
हमरा दोष निवारिये, विनय तुमरे पाय ॥ ५ ॥

दीनानाथ दुःख हरण हे, पतित पावन तव नाम ।
मन शुद्धि देहु चरण निज, परम भक्ति निष्काम ॥ ६ ॥

ऐसा तीर्थ परम के, पूजें पग सकलेश ।
परम पदार्थ मोक्ष दे, परमानन्द महेश ॥ ७ ॥

कीर्त्तन.

(१) संकीर्त्तन.

१. कीर्तन—श्यामदा.

हरिनाम संकीर्त्तन मे, दया करें हरि, आश्रो आश्रो है ।
तुम्हारे कंगाल तुम्हें पुकारे, आश्रो आश्रो है ॥ टेक ॥
भक्त वृन्द संग लेके, आश्रो आश्रो है ।
आके अपना गुण आप ही गाश्रो, आश्रो आश्रो है ॥
हम सो कुछभी जाने नाहीं, अपना गुण आप ही गाश्रो ॥ १ ॥
भक्त सग नचत नचत, आश्रो आश्रो है ।
आप ही नाचो आप ही गाश्रो, बजाश्रो आप है ॥
तुमेर संग हम नाचें गावें आश्रो आश्रो है ॥ २ ॥

---

२. रेखता.

प्रभुकी है हमपे कृपा, नवविधान धर्म पठाया ।
अगन मे है सुखकी वर्षा, अहाहाहाहा ॥ टेक ॥
मुझे इस में खेंच लाया, उदार चित मेरा बनाया ।
आनन्द में है खूब नचाया, अहाहाहाहा ॥ १ ॥

नवविधान की बहार आई निराला ढंग है जीवन का ।
प्याला प्रेम का है चलता अहाहाहाहा ॥ २ ॥
जिन आखों ने न देखा था, प्रभु गुण गान का चर्चा ।
खुला उनका भी है पर्दा अहाहाहाहा ॥ ३ ॥
किया आनन्द से अब पूर्ण, प्रभु ने सबका ऐसा ।
बजाया हरिनाम का डंका अहाहाहाहा ॥ ४ ॥

३ भैरवी (तर्ज—मुझे इस प्रेमी)

कहे क्या आज की शोभा, हरि मन्दर में आया है ।
दिखा कर अपनी लीला, सभी का हाय जुडाया है ॥ टेक ॥
रचा यह महिमा मन्दर, नरनारी यहा लाया है ।
हृदय की बंसरी बजा सभकी, मग्न सब का बनाया है ॥ टेक ॥
छवी इस देवीयो में अपनी, दिखा बालक बनाया है ।
उत्साह से प्रेम में सबका तुहीं तुहीं गंवाया है ॥ २ ॥
नचा सब नरनारी को नववृन्दावन बसाया है ।
खिलाके प्रमका प्रसाद विश्वासी हो बिठाया है ॥ ३ ॥

४ टोडी (तर्ज—प्रीति प्रभु से)

सन्ता कैसा अजब नजारा, प्रभु का हो रहा जय जयकारा ।
नारद मुनी गुण गान करत है, हाथ लिय एकतारा ॥ टेक ॥
चेतन्य देव प्रेम से उन्मित, करें हरि धन्य बारम्बारा ।
नानक ईसा और कबीर ही, दे रह हैं साथ सहेरा ॥ १ ॥
मीराबाइ और गार्गी हो रहे हैं सब बलहारा ।

राम मोहन और केशव रलमिल, दोऊँ दे रहे हैं सहारा ॥ २ ॥
सबही देवता करें जय ध्वनि, देख नवविधान परिवारा ।
धन्य धन्य भाग हमारा, रे सन्तो कैसा अजब नजारा ३ ॥ ॥

५ मूलतान—एकताला.

जय ईश मुसा महम्मद शाक्य गोर सुन्दर ।
जय ब्रह्मानन्द, (हे) केशवचन्द्र सर्वधर्मशंकर ॥ टेक ॥
जनक नानक शुक आज्ञवलक्य, ध्रुव शिव जोगिवर ।
प्रलाहद नारद, राम वासुदेव, कबीर तुलसी शंकर ॥ १ ॥
अद्वेत निताई, जगाई माधाई, श्रीवास गदाधर ।
दास रघुनाथ, सेन रामप्रसाद, जोहन पाल लुथर ॥ २ ॥
रुप सनातन, राजा राममोहन, हरिदास साधु अघोर ।
राय रामानन्द, दाउद राजेन्द्र, एब्राहम नरेश्वर ॥ ३ ॥
सावित्री मैत्रेयी, गार्गी सीता सती, जन सुखलाल अमर ।
स्मरिया सकल उठ हरि बले, हव निर्मल अन्तर ॥ ४ ॥

६. स्यामदा.

पुकारे हैं बारबार यह दरिदयामय आओरे आओ पापीतापी नहिं कोई भय ।
मेरे पास आओ, आओ रे आओ रे आओ ॥ पापी तापी ॥
मैं देऊंगा प्रेम पुण्य शान्ति अभय आश्रय, सब दुख दूर हो जायेंगे रे ॥दे॥
तुम इतने दिन क्यों रोये हमें भी रुलाये, पापाग्निमें जलजलके रे ॥इत॥
देख यही दया अवतीर्ण ईसा, करे हाय हाय,
मेरे दर पर रोये रोये रे ॥ यही दया देख ईसा ॥

तुम्हारे पाप का भार कन्धे लेके, करे हाय हाय ॥ पाप का भार ॥
जीव उद्धारने लिये अब स्वर्गही से, जुगधर्म नवविधान यहा आया है ॥
ब्रह्मानन्द साथ लेके यहा आया है, शाक्य ईशा श्री गौरांग, साथ लाया है।
जनक नानक सब साधु साथ लाया है,
आओ रे आओ लेने वाले, जगवासी रे ॥ पुकारे हैं बार ॥

७ झिंझिट—एकताल. (तर्ज—दयामय हरि)

धन्य धन्य धन्य आज, दिन आनन्दकारी ।
सभी मिले सब सत्य धर्म, भारत में प्रचारी ॥ टेक ॥
हृदय हृदय तुम्हारो नाम, देश देश पुण्य धाम ।
भक्तजन समाज आज, स्तुति करें तुम्हारी ॥ १ ॥
नाहीं चाहे धन जन मान, नाहीं प्रभु अन्य काम ।
प्रार्थना करे तुम्हारी, सकल नरोनारी ॥ २ ॥
तुम्हारी चरण लिई शरण, क्या वह विपद क्या वह मरण ।
पी अमृतरस करें, जय जय तुम्हारी ॥ ३ ॥

८. कीर्तन—दोठुकी.

मधुर स्वभावे सब, कैसे रस नव नव, पीके हृद होता मधुमय ॥ टेक ॥
प्रेम रूप तुम हरि सब हृदे अवतरि, प्रेम लीला करत हो अभिनय ॥ १ ॥
प्रेमदास प्रेमानन्द मस्त है प्रेममकरंदे, [illegible] २ ॥

९. जोग. (तर्ज—

मन मोहन ने मोह लिया, मन मोह

सुध बुध जग की बिसर गई अब, बुला रही हूं पिया पिया ॥ टेक॥
पिया है मेरा मंगलकारी, बर्षावत नित अमृत वारी ।
पी पी कर उन्मत भई हूं, दु:ख शोक सब भूल गया ॥ १॥
प्रीतम मेरा प्राण उद्धारा, उसको मैंने तन मन वारा ।
सदा करूंगी उसकी सेवा, यही मन में ठान लिया ॥ २॥

१०. जोग (तर्ज—मन मोह ने)

जब से तूने रूप दिखाया, तब से मैंने आनन्द पाया ॥ टेक॥
साथी बन्धु देख के तुम में, सब कुछ अपना तुम्हें बनाया ।
तुझ को ही अब सार जान कर, दिल असार से मैं ने हटाया ॥ १॥
तब शक्ति ने आ कर मुझ में, दिल की दुनिया को उलटाया ।
नई जिंदगी पाई मैं ने धन्य प्रभु जी तेरी दाया ॥ २॥

११. कीर्तन.

मागु दयाल का नाम मागु ।
प्रेम मागु और अभय चरण मागु (मैं) ॥ टेक॥
मैं सामान्य धन नाहिं मागु मैं और कुछ नाहिं मागु ॥ १॥
नाम दयाल है रस सुधा, तृप्त होय तृष्णा क्षुधा ॥
अति सुख उत्पन्न हय सर्वदा प्रेम में डुबना मागु ॥ २॥
नाम रुचि मेने रुचि, चरण कमल में अब मागु ।
साक में बचा हुं वो मिष्ट आस्वादन ॥ ३॥
मेरा दुःख सारे जनम का जो है ।
स्पर्श करके पवित्र होना मागु (चरण) ॥ ४॥

१२. काफी. (तर्ज—साधु रे बेगम)

साधो रे प्रेम प्याला प्रभु दीया, आसे मस्त मगन हम हुवा ॥टेक॥
प्रेम मटी का सतगुरु साकी, सिर छाटे हम लीया ।
पीवत प्रेम बिसर गई काया, दिल दर्पण कर दीया ॥ १ ॥
आठ पहर में रहू मतवाला, लाली का रंग लीया ।
चढ़त खुमारी उतरत नाही, लाल अमल हम कीया ॥ २॥
प्रेम की महिमा कही न जाय, में घट उजियारा कीया ।
जागी ज्योत राम रस लागा, भय भ्रम मिटगया ॥ ३ ॥
प्रेम की राह से यह पद पाया, जनम मरण दु ख गया ।
कहे मुरादअली सुणो भाई साधा, सदा अमर जग जीया ॥ ४ ॥

१३. काफी (तर्ज—साधो रे प्रेम)

साधो रे बेगम देस हमारा ।
राजा रंक फकीर बादशा, सब से कहों पुकारा ॥ टेक ॥
जो तुम चाहो परम पद को, बसिहो देस हमारा ।
जा तुम आये भीने होक, तजो मन की भारा ॥ १ ॥
ऐसी रहन रहोरे प्यारे, सहज उतर जाव पारा ।
धरन आकास गगन कुछ नाहीं चन्द्र नाही तारा ॥ २ ॥
सत्य धरम की है महताबे, साहेब के दरबारा ।
कहे कबीर सुना हो प्यारे, सत्य धर्म है सारा ॥ ३ ॥

१४. खयरा.

बाजत मधुर मधुर स्वर सखाकी मोहन बँसी रे ।
भरी हे परम प्रेम, सुधा राशि राशि रे ॥ टेक ॥

मधुर मुरली सुर सुने, प्राण हुआ आकुल रे ।
रहा न जाय घर अब तो होवेंगे वनवासी रे (नववृन्दावनवासी रे)॥१॥
सुन यह मधुर ध्वनि गोर हुआ सन्यासी रे ।
ईसा हुआ पथ भिखारी, केशव हुआ मोहित रे (उस ही मधुर ध्वनि से रे २॥
प्राण नाथ बोले कहां, दोड़ चले जाये रे ।
जाती कुल लाज भय, देवें जलाजली रे ॥ ३ ॥
हरि हमारे प्राण पति हृदय का है स्वामी रे ।
सोंप यह जीवन उसे, होकर दास रहे रे ॥ ४ ॥
जोश से ही हम मस्त होके, पसारें यह बाट रे ।
हृदय में ही अंदर उसे, करें आलिंगन रे ॥ ५ ॥
प्रेम अश्रुजल ही में, धोये श्री चरणन रे ।
दर्शन स्पर्शन से, पूर्ण होगा वासना रे ॥ ६ ॥

१५ आनंद भैरवी

भले शकुन होवे अच्छा, आनन्द है रे लोको ।
मिले सिर पे भारी बोझा, आनन्द है रे लोको ॥ टेक ॥
भले नव ग्रह रूठें, आनन्द है रे लोको ।
भले दूध मेघ वर्षे, आनन्द है रे लोको ॥ १ ॥
भले मिले सूली रोगी, आनन्द है रे लोको ।
भले रसोई होवे ऊंची, आनन्द है रे लोको ॥ २ ॥
यह खुदाया न खुटे, आनन्द है रे लोको ।
चोर हाकिम न लूटे, आनन्द है रे लोको ॥ ३ ॥
प्राण रमण हृदय अन्दर, आनन्द है रे लोको ।
देख विध उस का मन्दर, आनन्द है रे लोको ॥ ४ ॥

सज्जन ऐसी प्रीत कर, जैसी सरप करे ।
बचन सुने गुरु देव का, आगे सीस धरे ॥ ७ ॥

रुखी सूखी खाय के, ठंडा पानी पीय ।
फरीदा देख पराई चोपडी, ना तरसाये जीय ॥ ८ ॥

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी की फिर आध ।
तुलसी संगत साध की, हरे कोट अपराध ॥ ६ ॥

सब सुख दाता राम है, दूसर नाहीं कोय ।
कहे नानक सुन रे मना, तहि सिमरत गत होय ॥ १० ॥

लाली अपने लालकी, जित देख तित लाल ।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ॥ ११ ॥

(कबीर) लुटना है सो लुट ले, राम नाम है लूट ।
फिर पाछे पछतायगा, जब प्राण जायगा छूट ॥ १२ ॥

सन्त समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दो ।
सुत दारा और लक्ष्मी, पापी घर भी हो ॥ १३ ॥

सदा रहो आनन्द में, क्यों मन समय खोय ।
जो दिन जावे भजन में, जीवन का फल सोय ॥ १४ ॥

देना था सो दे दिया, जब दई मानषा देह ।
राम कछु राखया नहीं, अब तूं सिमरन कर लेह ॥ १५ ॥

भज गोविंद भज गोविंदं, भज गोविंदं मूढ़ मते ।
भज गोविंद भज गोविंदं, भज गोविंदं मूढ़ मते ॥ १६ ॥

(२) उत्सव कीर्त्तन.

१. भैरवी—कवाली.

कहें क्या आज की शोभा, हरि उत्सव में आया है ।
मिला के अपने भक्तों से, महा उत्सव रचाया है ॥ टेक।
पियाला प्रेम का दे कर, हमें अपना बनाया है ।
हटा कर सब कमी हमरी, हमें ऊपर चढ़ाया है ॥ १॥
करें सब धन्यवाद उन का, जो ऐसा दिन दिखाया है ।
हावें आनन्द कर के याद, जो अवसर ऐसा पाया है ॥ २॥

२. कालंगड़ा (तर्ज़—प्रभु तुझ बिना)

मन तृप्त हो तूं आज पाय दर्शन हरि के ।
चढाय प्रेम भक्ति सुमन चर्णन हरि के ॥ टेक॥
दु:ख नसन लागे पाते, दर्शन हरि के ।
पापी हृदय से बहन लगे झरणे पुण्य के ॥ १॥
तापी हृदय से उठन लगे, लहर शान्ति के ।
मगन आत्मा नाचन लगे, आनन्द पाके ॥ २॥
नयनन में छाई वो मोहिनी, मूर्ति जबके ।
क्या और कोई सुन्दर शोभा, है आगे उनके ॥ ३॥
बैठ रहो सदाही सामने, हरिजी ही के ।
जीवन होगा सफल तनु, भगवती धनके ॥ ४॥

३. भयरों—ठूमरी.

चलो भाई जायें सभी, महा महोत्सवे, अमर धाम जोग बल स चले ।
निरखि आनन्दे आनन्दमयी को, साधो अमर दल मे जाय के मिले ॥ टेक॥
नवविधान फूल हार गायें हम आनन्द से, श्री चरण कमल में देंगे वह ले ।
मस्त होके आनंद में नाचने गावेंगे, जय! जय! जय! जननी बोले ॥ १॥
जिस फूल के सुगन्ध से, प्रेम मधुपान से, देवकुल आकुल सगले ।
ले वह फूल पूजा करें, आयो नरनारी सभे,
(आज) प्रेम अश्रु नयनों से बहे उथले ॥ २॥
नवविधान रवि प्रकाशित प्रेम छवि, है अवतीर्ण ज्योति धरातले ।
उस ही किरणे विचित्र वरणे (आज) रंग जायें हम सगले ॥ ३॥
यदि तुम मस्त हो अनन्त उत्सवे, स जाओ रे अपको दल में मिले ।
बोलो नवविधान जय, जगत जननी जय,
जिस नाम ले पाषाण-हृदय भी गले ॥ ४॥

४, खेमटा.

नवविधान का उत्सव देखो, कैसा रंग रंगीला है ।
देश देश के भक्त सब आ के, वर्णत ब्रह्म की लीला है ॥ टेक॥
कोई नाचत कोई गावत, कोई ध्यान लगावत है ।
अलख रूप को सभी लखावत, सुन्दर रूप सुहेला है ॥ १॥
श्रीचैतन्य कबीर तुलसी, ईसा श्रोर महम्मद है ।
श्रीचैतन्य कबीर तुलसी, जनक श्रोर नानक है ।
श्रोर भक्तों को कहा लग वर्णे, ब्रह्मानन्द का मेला है ॥ २॥
नवविधान बालक देखो, कैसा छैल छबीला है ।

वृद्ध युवा को ज्ञान बतावे, ऐसी उसकी लीला है ॥३॥

---

५. सोरठ (तर्ज—भज मन प्राण)

हरि तेरे प्रीत ने मोहे हर लीना ॥ टेक ॥
छवि तेरी प्रभु लागे है प्यारी, दिल को है मेरे काबु कीना ।
तेरे भक्तों के सुन्दर मुखड़े, खेंच रहे मोहे प्रति दीना ॥ १॥
मन मेरे को किया है मोहित, प्रेम से मोको उन्मत्त कीना ।
प्रमिक किया निज चरणन का, तृप्त न हूं जिन के बिन नैना ॥२॥

---

६. झिंझिट मिश्र—काहारवा.

ओई शोन स्वन स्वन आह्वान, घन घन भीमनाद गरजन । ओई ।
चिदाकाशे चिदाभासे उठील प्रबल वेगे तूफान ।
नवविधान सन्तेर गभीर आह्वान,
झर झटिकाय जागाईल मानव प्राण ।
अहंकुटीर भेंगे गेल, उड़े गेल टुटे गेल, सब मायार बन्धन ।
कँपे उठे थरथर, नरनारीर अन्तर,
उथल उथल आशा—असि करे आस्फालन ।
भासिल हृदये भक्ति, आसिल जीवने शक्ति, बहिल प्रेम पवन ॥ओई॥
आकाश माझारे ए महाकाल रवे उठे,
विश्वधाम कांपाइया प्रत्यादेश आवार छूटे ।
उत्साह बिजली हाते, लोक लोकान्तर माते गाय जय नवविधान ॥

---

७ कीर्तन.

आज मेरे साहिब आए हैं, हमें उजला बनाते हैं ॥ टेक ॥
दिखा कर मादर्श मूरत मगन हम को कराते हैं ॥ १ ॥
सुना के प्रेम की बाणी, हृदा हमरा गलाते हैं २
असीसा दे के हम सब को, जीवन नूतन कराते हैं ॥ ३ ॥
दे कर प्रसाद शांति का, सदा आनन्द चखाते हैं ॥ ४ ॥
बढा के भक्ति भावों को, सदा मोक्ष दिखाते हैं ॥ ५ ॥
मचा यहां स्वर्ग की लीला, उत्साह हमरा बढाते हैं ॥ ६ ॥
करें प्रणाम सभ मिलके, महिमा जिस की ही गाते हैं ॥ ७ ॥

---

८ कीर्तन.

नव वृन्दाबन नव लीला, देखो आय जरा,
मादनी सुर बन्सी बजे, विधान भक्त-चित्तहरा ॥ टेक ॥
हरि भक्तदल सभी आत्महरा,
प्रेमिक जन सुधापान करें सब हो मतवारा ॥ वृन्दा ॥ १ ॥
चिदाकाश सुधा बरखे रवि शशी तारा,
जहां तहां फूल फूले हैं प्रेममधु भरा ॥ वृन्दा ॥ २ ॥
प्रेम यमुना बहे रस रस करें धीरा,
निरझर झरे झर झर प्रेम वारी धारा ॥ वृन्दा ॥ ३ ॥
डाली डाली में कोयल गाये हरि हरि बोला,
बन बन में फूल फूले हैं खेलें प्रेमकी खेला ॥ वृन्दा ॥ ४ ॥
मन्दिर मन्दिर उड़त विधान पताका,
यह प्रेम विभोर विश्व भुवन, आनन्द से भरा धरा ॥ वृन्दा ॥ ५ ॥

---

९. भैरवी.

मुझे इस प्रेमी उत्सव में, प्रभु प्रेमी बना दीजे ।
पिलाकर प्रेम का प्याला, मुझे अपना बना दीजे ॥ टेक ॥
तरसते थे जो इस दिनको, सो भेजा है अभी हमको ।
बनाओ आपका प्यासा, हमें अमृत पिला दीजे ॥ १ ॥
हूं तुझपर सदा कुर्बान, मिटा है जो यह तेरा नाम ।
इस नगरी के लोगों को, सदा प्रेमी बना दीजे ॥ २ ॥
यह उत्सव कर बने फलिभूत, तेरे दीदार के लायक ।
दया करके तेरी महिमा, सदा हमको बता दीजे ॥ ३ ॥

१० आनन्द भैरवी.

हमारा मन लागो हरिजी में ॥ टेक ॥
हाय इकतारा सुख कर्तारा यह सारा मुल्क जागीरी में ॥ १ ॥
घर घर नाम अपार हरि का, सब घर मेरा जागीरी में ॥ २ ॥
जो सुख बन्दा है हरि भजन में, सो सुख नहीं अमीरी में ॥ ३ ॥

११. सिंधु—ख्यामटा (बाउले) (तर्ज़ आनदमयी हमरी मा)

स्वर्गमें उत्सव की धूम है आज, नाचें देव देविन सब
देखो यह हरि महराज ॥ टेक ॥
इन्द्र नाचें चन्द्र नाचे, नाच रहे गृह सारे ।
गावत ब्रह्मा विष्णु महेश, जय जय जय जयकार पुकारे ॥
नछत्र सबहिं सितारे, जय जय जय जयकार पुकारे ॥ १ ॥
नाचे नवनिधि अष्ट सिधि, महालक्ष्मि सरस्वति ।
सुमति सुमति सदगति, श्रुति स्मृति नाचें ॥

राम सीता सति नाचें श्रुति स्मृति नाचें ॥ २ ॥
नाचत नारद मुनि और बीना, नाचत सब सन्त महन्ता ।
तुकाराम बोद्ध चैतन्य जागी जनक सब गुणवन्ता ॥
अलापत बहु राग बसन्ता, जोगी जनक सब गुणवन्ता ॥ ३ ॥
रे रेगरे गानी धपध सारेग, इक रंग स्वर जम रहा ।
धाधिन्धा धनिन्ता तिन्ता, धाधिन बज रहा है ॥
तबला तान का तरंगा, धाधिन बज रहा है,
आनन्द की बह रही गंगा, धाधिन बज रहा है ॥ ४ ॥
हृदय झोली भर के हम भी चलें, प्रेम गुलाल उड़ावें ।
हरिपद में दव देवीन संग, भक्ति पुष्प चढ़ावें ॥
उत्साह बसन्त बधावें, भक्ति पुष्प चढ़ावें ॥ ५ ॥

---

१२. कीर्तन.

हरि बोले देवगण नाचे, नाचे रे गौराग अपार, भकतसमाजे ।
(भावे गरगर रे) दुनयने प्रेमधारा, अपरूप साजे ॥टेक॥
ऋषि सनकादि नाचे, आनन्दवदने, वाल्मीकि वशिष्ट नाचे, मुदित रये रे ॥१॥
ईशा नाचे मुसा नाचे, दुबाहु तुलिये, (प्रेम मत्त हैय रे)
देवर्षि नारद नाचे, वीणा बजाइये ॥ २ ॥
नाचेन प्राचीन साधु, दाउद भूपति, (योगानन्द भर रे)
तार संगे जनक, युधिष्टिर महामति ॥ ३ ॥
महायोगी महादेव, नाचेन आनन्दे, (प्रेमे पागल हये रे)
तार संगे जैन नाचे, लैय शिष्यवृंदे ॥ ४ ॥
नानक प्रह्लाद नाचे, नाचे नित्यानन्द, (हरिबोल बैल रे)
तार माझे नृत्य करे, पैत्र महानन्द ॥ ५ ॥

ध्रुव नाचे शुक नाचे, नाचे हरिदास ।
तार माझे नाचे, जैनै ब्रह्मदास ॥ ६ ॥
शंकर वासुदेव नाचे, राम शाक्यमुनि, (सांगोपांग लेये रे) ।
योगी भक्त वैरागी, प्रेमिक कर्मी ज्ञानी, (नाचे) ॥ ७ ॥
स्पसनातन नाचे, अद्वैत मुकुन्द, (केउ बाकि रहेना ना रे) ।
तार संगे श्रीवास, मुरारि रामानन्द ॥ ८ ॥
दादू कनफुस् नाचे, कबीर तुलसी ।
हिन्दु मुसलमान नाचे, मुखे प्रेमेर हासि ॥ ९ ॥
पापी नाचे साधु नाचे, नाचे दु खी धनी ।
नारीगण मधुर स्वरे, करे जयध्वनि ॥ १० ॥
जाति कुल अभिमान, सब परिहरि ।
ब्राह्मण चण्डाल नाचे, कोलाकोलि करि ॥ ११ ॥
आपनार प्रेमे हरि, हइये पागल, (हरि आपन मुखेओ हरि बले) ।
भक्तसगे नाचे, आर बले हरिबोल, (ठाकुर नाचेलेओ आने रे) ॥ १२ ॥
चारिदिके देवगण, माफलाने श्रीहरि ।
सबे मिलि नाच, गलाधराधरि करि, (कि शोभा मरि रे) ॥ १३ ॥
भक्तसगे नृत्य करेन, भक्तवत्सल, पदभरे स्वर्ग मर्त्य, करे टल मल ॥ १४ ॥
सकलेर सगे नाचे, विधिनारदिगण ।
देख कालेर व्यवधान, करिये खंडन, (हरिपद तले रे) ॥ १५ ॥
जले नाचे मत्स्यगण, आकाश विहंग, तरुराजि वायुभरे करे कत रंग ॥ १६ ॥
नदी नाचे सिन्धु नाचे तुलिये तरंग ।
तार माझे कोन हरि, लीला रसरंग ॥ १७ ॥
रवि शशि तारादल, नाचिछे गगने, पशु पक्षि नाचे, गाय गहन कानने १८
अनले अनिल नाचे, मेघे सौदामिनी, हिमाल शिखरे नाचे, अनन्त हिमानी १९
वेद बाइबेल नाचे भागवत संग, पुराण कुराण नाचे प्रेमेर मिलने ॥ २० ।

विज्ञानी वैरागी कवि, नाचे प्रेमभरे
नवविधानेर नव, सुरापान क'रे ॥ २१ ॥
भूलोक द्युलोक नाचे, करे हरि ध्वनि,
सुधामय नूतन, विधानतत्त्व शुनि ॥ २२ ॥
प्रेमदास दासाकार, चरणे पड़िये, नाचे हरिबले, भूमे गड़ागड़ि दिये ॥२३॥

---

१३. खाम्बाज—काउयालि.

करो हे आनन्दे जय गान, होये एक प्राण ।
आमरा सकले सेई एक पितार (मायेर) सन्तान ॥ टेक ॥
एक ज्ञान एक शक्ति, एक धर्म एक भक्ति ।
एक पथ एक गति, एक गम्यस्थान ।
तबे केनो भेद बुद्धि केनो वृथा अभिमान ॥ १ ॥
गृह विवाद अनले, रागद्वेष हलाहले ।
ज्वले प्राण शांति जले करो हे निर्वान ।
सहे ना सहे ना आर लोक निन्दा अपमान ॥ २ ॥
जे देश होइत सब, एसेछि भाई एई भवे ।
सेखाने जाईते हबे, विधिर विधान ।
तिनि बिना कारुओ काछे नाहि आर परित्राण ॥ ३ ॥
हरिप्रेमरसे गले, प्रेमधामे जाई चले ।
भाई बोले करि सब आलिंगन दान ।
जेखाने भक्तवृन्द सेई खाने भगवान ॥ ४ ॥
जय देव प्रेममय ! होईल प्रेमेर जय ।
नव नामे नाहि रय भेद व्यवधान ।
प्रेमदास वो भ्रात्रप्रन्थे जेनो पाय स्थान ॥ ५ ॥

१४. टोडी (तर्ज—प्रीति प्रभु से)

प्रेम ही नाचे प्रेम ही कूदे, प्रेम ही गावे गीत ॥ टेक ॥
प्रिय प्रीतम के प्रेम लोक में, प्रेम सा नहीं कोई मीत ॥ १ ॥
प्रेमको पा हो निर्भय प्राणी, जो कल था भय भीत ॥ २ ॥
प्रेम बिना सब कुछ ही निष्फल, पूजा, पाठ, संगीत ॥ ३ ॥
विश्वासी अब प्रेम कमावो, और प्रीतम से मीत ॥ ४ ॥

---

१५. दोलन.

तुमारे नित्यधामे, मस्त होके भक्तगण, नाचें गायें प्रेमानन्द में अनुदिन ।
प्राण में प्राण मिलाके, एक चित हो ध्यान ज्ञान से,
चिदानन्दरस में वह है लवलीन ।
प्रकृति की नीति, जीवन की ही गति,
सहज तुमरी ही ओर दौड़े यह प्राण
किंतु यह कर्म दोष, विषय वासना के वस,
पंचभुत देश की ओर करत है ताण ॥
तारो मुझे तारो तारो कृपाबल दान करो,
यह मृत देही में संचारो जीवन ।
जय दयामय बोले, स्वर्ग धाम जायें चले,
कट जावें संसार माया बन्धन ।
नवविधान नौका में, आओ चढ़ें आनन्द में,
उड़ावें नवविधान के निशान ।
तुमारी ही कृपा भोले बहते जायेंगे हरि हरि करत गान ॥

१६ येमन—त्रिताल (तर्ज—प्रार्थना हि मेरी)

क्या सूक्ष्म और क्या स्थूल यह सारा पसारा प्रेम का है ।
इधर उधर और यहा वहा जो कुछ है नजारा प्रेम का है ॥ टेक ॥
वृक्षलता फल फूल की शोभा पशु और पक्षिगणों की लीला ।
नदी पहाड़ और समुद्र की रचना खेल यह सारा प्रेम का है ॥ १ ॥
तारागणों का सुनहरी मण्डल निर्मल आकाश और बादल बादल ।
शीतल चन्द्र उत्तेजितसूर्य का उजियारा प्रेम का है ॥ २ ॥
माकी ममता स्नेह पिताका सहायता मित्र और बन्धुगणों की ।
स्त्री स्वामी भ्राता भगनी रिश्ता जो है प्यारा प्रेम का है ॥ ३ ॥
ज्ञान औ भक्ति हैं जहा पहुँचाते ध्यान और योग जो कुछ हैं सुझाते ।
विश्वासी जिस राह से जाते हैं वह द्वार प्रेमका है ॥ ४ ॥

१७. सिन्धु जिल्हा-पोरत (तर्ज—गाओरे अनन्दे)

हम परमात्मा आये हैं तव दुवारे, हृदय का समय प्रेम देखो रे मोरे ॥ टेक ॥
जो न होगे प्रेम सोला आना, मन कभी प्रसन्न होवे ना ।
ससार का ये झूठा प्रेम, वा देखो ना मोरे ॥ हृदय ॥ १ ॥
जो कोई प्रेम तीव्र देवे, प्रेमिक वो कभी न होवे ।
वो तो बनिया ससार का, फसा है ससार ॥ हृदय ॥ २ ॥
प्रेम करो तुम राधा भावे असम्भव सम्भव हो जावे ।
कृष्णा विहर जुगलरूपे, तुम्हारे अन्तर ॥ हृदय ॥ ३ ॥

१८ पहडी. (तर्ज—नाम निरंजन गाओ)

मैने प्रभु से नेह लगाया, जो कुछ है सो प्रभु ही है । •

एक उन्हींको अपना पाया, जो कुछ है सो प्रभु ही है ॥ टेक ॥
बाहर भीतर देश देशांतर, रहत सभी में प्रभु निरन्तर ।
सबमें सत्व उन्हींका समाया, जो कुछ है सो प्रभु ही है ॥ १ ॥
पृथ्वी से आकाश ला देखा, योगी यति हृदय भी पेखा ।
सर्व स्थान में यही दिखाया, जो कुछ है सो प्रभु ही है ॥ २ ॥
नानक ध्रुव प्रल्हाद कबीरा, एक उन्हींको पाया हीरा ।
चैतन ध्यान उन्हींका लगाया, जो कुछ है सो प्रभु ही है ॥ ३ ॥
धर्म बढ़ावें अधर्म नशावें, भूले भटके को राह लगावें ।
नवविधान उन्हींने है जाया, जो कुछ है सो प्रभु ही है ॥ ४ ।

१९ बाहारमिश्र—आड़खेमटा

आनन्द ध्वनी तुलेछे नवविधान सैन्य एसछे ।
तोड़ा 'आय चल आय 'आय चल आय 'बाले डाकिछे' ॥ टेक ॥
डाक शुन सब आत्माहारा नरनारी पागलपारा ।
'आई,' "आई' आई "बाले सभाई छुटेछे ॥ १ ॥
आर केउ रवे ना घोरे, बन्द होय मायार घोरे ।
मुक्त बेशे जाय छुटे, सब जाया बसछे ।
नवविधानेर साज सबाई सेजछे ॥ २ ॥
मोह माया घुचे गेले, अश्रुजल मुछे फेलेछे ।
असार भावना जत भुले गियेछे
हरि नाम हरि प्रमे सभाई मेतेछे ॥ ३ ॥

२० बाऊले सुर.

ऐ देख प्रेमेर दरबारे आनन्देर मेला ।

हरि भक्त संगे रसरंगे, करिछेन कत खेला ॥ टेक ॥
केहूँ ल'ये प्रेमेर पसरा, बॅलें आय रे भाई शुद्ध प्रेम के निबि तोरा।
करे अपरूप महाभावेर विचित्र रसलीला ॥ १ ॥
केहूँ हरि-भक्तिरसेर साजाये डालि, देखाय नाना भावकालि ।
भावे हासे कांदे नाचे गाय देय करतालि ।
दुनयनेर जले अंग भासे, प्रेमरसेते मातोयाला ॥ २ ॥
योगी ऋषि तपोधन तारा ध्यानेते मगन, पंडितेरा वेदमन्त्र करे उच्चारण।
आवार कर्मी जनें, सेवाय रतें भावनाय ह'ये भोला ॥ ३ ॥
शांत दास्य सख्य वात्सल्य मधुर रस, ताते दिये नव रस ।
कहूँ बा बिलाय प्रेम कलसे कलस ।
डाके के निबि आय प्रेमेर छबि स्वरा करे एई बेला ॥ ४ ॥
प्रेमदासेर बँड साध मने, हरि बॅले भिक्षा करि भक्तिर दोकाने ।
साधु महाजनेर पातेर खेये निवारि जठर ज्वाला ॥ ५ ॥

---

२१. पागला सुर—एकताल.

आमाय दे मा पागॅल कोरे, आर काज नाइ ज्ञानविचारे ॥ टेक ॥
नूतन विधानेर सुरा, पानि कॅरे मातोयारा ।
ओगो भक्तचित्तहरा, डुबओ प्रेमसागरे ॥ १ ॥
तोमार पागलागारदे, केहूँ हासे केहूँ कांदे, केहूँ नाचे आनन्द भरे ।
ईशा मुषा श्री चैतन्य, प्रेमेर घोर अचैतन्य ।
हाय ! कबे हबे मा धन्य मिशे तार भितरे ॥ २ ॥
स्वर्गेते पागलेर मेला, येमन गुरु तमन चेला, प्रेमेर खेला के बुझते पारे।
तुमि प्रेम उन्मादिनी, (ओगो मा) पागलेर शिरोमणि ।
प्रेमधने करे मा धनी, कांगाल प्रेमदासेरे ॥ ३ ॥

२२. झिंझिट कीर्तन, एकताल.

साध मेने हरिधने, नयने नयने राखि ।
करि नाम गान, प्रेमसुधा पान, चरणामृत अंगे माखि ॥ टेक ॥
भजि तार पद दिये प्राण मन, योगानन्दरसे हईये मगन ।
ताहारि सेवाय, ताहारि कथाय, दिवा निशि भूले थाकि ।
हरि दरशने, हरि संकीर्तने, मनने चिंतने भूले थाकि ॥ १ ॥
लीलारसरते माति हृदयनिकुंज बने ।
नाचि गाई हासि खेलि मिले प्राणसखा सने ।
देखी अविराम, मर्त्य स्वर्गधाम, कामादिरे दिये फाकि ॥ २ ॥

---

२३. खाम्बाज मिश्र—जलद एकताला.

मा आये तुम्हारे चरणों में, नूतन विधान,
यह सुखी है विधान, सुना है भक्त वचन में ॥ टेक ॥
लावगे उन्हें हम कैसे, जो जीते ही मरे हैं,
जागत ही सोये हैं, देख नहीं सकते विजय निशान में ।
नहीं किया है जिसने साधन, ऐसा अमृत माखा भक्त जीवन ।
यह तो नहीं जाने, नहिं पछाने हैं कितना सुख नवविधान में ॥ १ ॥
है मा बड़ी इच्छा है यह मन में, जगत जन को
बाधेंगे प्रेम से, भाई बहिन करे संग में ।
विश्वास नयन, खोलें इस छिन, देखेंगे नव वृन्दावन ।
विधान सुधा भर गगरिया भर, डालेंगे उनके जीवन में ॥ २ ॥

---

२४. विभास—एकताल.

नव विधानेर रेलेर गाडी चले आय ।
देरि नाइ ओ रे भाइ, तोरा जल्दि करे दौड़े आय

ईशा चैतन्य श्राछे, गाई हॅये पाछे पाछे ।
बॅसे इजिनेर माफ श्रापनि हरि कल चालाय ॥ १ ॥
एते नाइ रे धोयाकल, नाहि कॅयला जल ।
चाकाय चाकाय घुरछ ब्रह्मशक्ति देवबल ।
गाडीर श्रंगे झलें रत्न माणिक रूपे देखे नयन जुड़ाय ॥ २ ॥
माझे नाहि स्टेसेन, बॅलेन केशव सेन, एकेबारे स्वर्गे जाबे स्पेसल ए ट्रेन ।
जारा शिशु छेले, मांयर कोले, बॅसे श्रमनि जेते पाय ॥ ३ ॥
काणा प्रेमदासे बॅले, भासि नयनेर जले ।
जेमें भाइ श्राताय फेले जासेन लेटेर घरि पाय ॥ ४ ॥

---

२५. कीर्तन—एकताल.

एक बार तारा मा बोलिये डाकु, जगज्जनेर श्रवण जुड़ाक ।
हिमाद्रि पाषाण केंदे ग'ले जाकु, मुख तुले श्राजि चाहो रे ॥ टेक ॥
दाडा देखि तारा श्रास्यपर भ्रूो, हृदये हृदये चढ़ुक बिजली ।
प्रभात गगने कोटि शिर तुली, निर्भये श्राजि गाहो रे ॥ १ ॥
विंष कोटि कन्ठे मा बोले डाकिले, रोमांच उठिबे श्रनन्त निखिले ।
विंष कोटि छेले मांयरे घेरिले, दश दिक सुखे हासिबे ॥ २ ॥
जे दिन प्रभाते नूतन तपन, नूतन किरण करिबे वपन ।
ए नहे काहिनी–ए नहे स्वपन, श्रासिबे से दिन श्रासिबे ॥ ३ ॥
श्रापनार मांये मा बॅले' डाकिले, श्रापनार भाईये हृदये राखिले ।
सब पाप ताप दूर जाय चले', पुण्य–प्रेमेर बातासे ॥ ४ ॥
सेथाय विराजे देव श्राशीर्वाद, ना थाके कलह ना थाके विवाद ,
घुचे श्रपमान, जेगे उठे प्राण, विमल प्रतिमा विकाशे ५ ॥ ॥

छठा अध्याय

स्त्री जातीय और वालकगण संगीत.

(१) स्त्री संगीत.

१. टोडी तर्ज़—(प्रीति प्रभु से)

प्रभु तेरे पग की, हूँ मैं धूर ॥ टेक ॥
दीन दयाल प्रीतम मन मोहन, कर कृपा मेरी लोचा पूर ॥ १ ॥
दह दिस रव रह्या यश तुमरा, अंतर्यामी सदा हजूर ॥ २ ॥
जो तुमरा यश गावहि करते! सो जन कबहू न मरते झूर ॥ ३ ॥
धंध बंद बिनसे माया के, साधू संगत मिटे विसूर ॥ ४ ॥
सुख सपत भोग इस जीअ के, बिन हर नानक जाने सब कूर ॥५॥

२. जोग—एकताल. (तर्ज़—मन ज़रा तूं)

प्रभु बिना मैं कैसे जिऊंगी (हां), किस संग मैं नेह करूंगी ॥टेक॥
मन मेरा प्रभु हर लीना, मोको प्रेम से घायल कीना ।
प्रेम ही में मगन रहूंगी, प्रभु बिना मैं कैसे जिऊंगी ॥ १ ॥
अगन प्रेम की मुझे है लागी, किया प्रेम ने मुझे सुजागी ।
प्रभु गुण संचार करूंगी, प्रभु बिना मैं कैसे जिऊंगी ॥ २ ॥
अंदर प्रेमका रहे उजियारा, जीते जीवन हो सुंदर सारा ।
हृदा प्रेम से भीगा रखूंगी, प्रभु छोड़ें कभी न जिऊंगी ॥ ३ ॥

३. कीर्त्तन.

प्रभु के सेवन जो मैं गई री, सुध बुध मेरी खुल गई री ।
ब्रम्हांडपति की सति भई री ॥ टेक ॥
जो प्रभु पति मेरे प्राण आधारे, तिनकी ही सदा मैं शरण लई री ॥१॥

प्राण के प्राण को हृदय में रखी री, हूं अमर धाम में मगन सखीरी ॥१॥
असार को छाड मैं सार को पकरी, सुभाग है मेरा मैं मस्त भई री ॥३।
प्रभु मेरे स्वामी मैं सति हूं उसकी, स्वामी न बिछडे न मैं बिछडुंगीरी ॥४॥

४. आलेया—इकताल.

क्या भय भावना उसके अंतर (नाथ) तुम हो जिसके, वो हे तुम्हार ।
अभयपद देत हो के पहिरेदार, रक्षा करते हो उसकी निरंतर ॥टेक॥
मातृगोद में शिशु सन्तान जैसे, आनंद में करत बिहार तैसे ।
वह न डरे काल से, ब्रह्म नाम के बल से, करत स्वर्गराज्य अधिकार
तुमरे चरण में पडा है जो जन, उसका है अमर अनन्त जीवन ।
हे दयामय तुमही जिसके सहाय, उसका सब कार्ज होवे साध्यकार (सदा)
धन्य वह समय अति भाग्यवान, जिसने तुमरे हाथमें दिया है अपना प्राण
सुखी उसका हृदय निश्चिंत निर्भय, लिया है जो तुमने उसीका सभही
भार ॥

५ भैरव. (तर्ज़—दूध पीयो मेरे.

मैं कमलीदा बेड़ा पार करी, मेरे सतगुरू तारन वालीयां ॥टेक॥
आवि गुरु चरनी लावीं गुरु मैं निमानी तेरे दर है पईया ।
तन मन मेरा तूं आके वार देवीं; मेरे दिलदिया जानन वालीया ॥१॥
रात दिन तेरा ध्यान पिता, पल पल गुरु बिच याद तेरी ।

बाझ तेरे न कोई नजर आवें, थांया प्रेम तेरे हि डेरा लावेलिया ॥ २ ॥
मेरे जंईया कईयां लख सईयां तुसी चरनी लगाके तार लईया ।
मेरे उते भी करीं मेहर पिता, में भी नाम तेरा ही ध्यावे लिया ॥३॥
तेरे बिना नहीं कोई, पिता तेरा दुर तेरा ही जरुर दिसे ।
कन्के तरस मेनुं देवीं दरस गुरु दुखिया नुं तारन वालियां ॥४॥
तेन ऐस दी ओहो अर्ज पिता इक बार तां आन दीदार देओ ।
पाप मेरे तूं आके दूर करीं सब सृष्टी उबारन वालीयां ॥५॥

७. प्रभाती.

तुमरे कारण सब कुछ छोडिया, अब क्यों हो तरसावो ॥ टेक ॥
बिरह वेदना उर के अन्दर, उसे आप मिटावो जी ॥ १ ॥
ए बार छोड़े नहीं चलेगा, तोर चरणन पास बुलावो ॥ २ ॥
मीरां दासी जनम जनम की, चित्तसे चित्त मिलावो जी ॥ ३ ॥

८. गजल. (तर्ज—यारो दयालू देव)

बंसी का बजानारी सखी मैं कैसे छोडूं आश ॥ टेक ॥
इस बंसी में सब रागन सुन्दर भरी अवाज ।
वीणा ताल मृदंग सारंगी बाजें सबही साज ॥ १ ॥
इस बंसीकी धुनको सुनके मग्न भये मुनिराज ।
स्वर्ग लोकसें सुनने आवें मिलकर देवसमाज ॥ २ ॥
इस बंसी में निगमागम की वाणी रही विराज ।
जो सुनपावे मोच सिधावे सफल होंय सब काज ॥ ३ ॥
वृन्दाबन में कृष्ण चन्द्र की रही बंसरी बाज ।
ब्रह्मानन्द शरण में आयो राखिये मेरी लाज ॥ ४॥

९. भजन.(तर्ज—हे जगत स्वामी)

मेरे मन ऐसोहि आवे, हरी सों प्रीत लगावा ॥ टेक ॥
प्रेम किए प्रभु प्रीतम मिलदा, फिर क्यों मैं शरमावा ॥ १ ॥
बाहर ढूंडियां लभदा नाहीं, अन्दर ढूंडण जावा ॥ २ ॥
प्रीतम पाये सुहागन होवां, पिया ते बल बल जावा ॥ ३ ॥
प्रभूसे बढ नहीं कोई मेरा, क्यों उस की ही ना हो जावां ॥ ४ ॥
दुनियां के प्यारे छूटन हारे, क्यों इन मे उरझावा ॥ ५ ॥
यहा की दोलत यहीं ही रहेगी, क्यों इसके मैं गमखावां ॥६॥

१० टोडी तर्ज—(प्रीति प्रभु से)

साहेब चित ओ हमरी ओर ॥टेक॥
हम चितवें तुम चितओ नाहीं, तुम्हारो हृदय कठोर ॥ १ ॥
औरन को तो और भरोसा, हमें भरोसा तोर ॥२॥
सुखमनी सेज बिछाओ गगन मे, नित उठ करो निहोर ॥३॥
धर्मदास बिनवे कर जोड़ी, साहेब कबीर बंदी छोर ॥४॥

११. कीर्तन.

राम रतन मैं पायो मेरी माई (राम) ॥ टेक ॥
खरचे न खूटे चोर न लुटे, दिन दिन होत सवायो (मेरी माई) ॥ १ ॥
अग्नि न जाले, नीर न डूबे, धरती धरे न समायो (मेरी माई) ॥ २ ॥
नाव की नावो भजन की बातिया, भवसागर से तारियो (मेरी माई) ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित्त लायो (मेरी माई ॥४।

१२. बरवा

अब मैं नाचूं गोपाल, अब मैं नाचूं गोपाल ॥ टेक ॥
हरि मंदर में बहुत नाचूं, करसे बजावत ताल ।

१५. दोठुकी.

सन्मुखे अमरधाम जो है हम सब का गम्यस्थान ।
यह संसार है पथनिवास (दो दिन लिये ।
सी नववृंदवन मे, नित्य लीला देख देख ।
करेंगे संभोग स्वर्गवास (भक्तपरिवार में) (सदानंद में) ॥टेक॥
स्वर्ग पारिजात सुगंध, बहत है मंद मंद, सुगंध से पुलकित होते प्राण ।
श्रीहरिके श्रीमंदिर पै उडत है धीरे धीरे, विश्वजयी विधान निशान
(प्रेम समीरण मे ॥१॥
सब देव देवी गण, पुष्प स्यो मे ईधर ऊधर चारों तरफ करतहैं विचरण ।
(नव नव वेस से) (मनोहर रुप में) ॥
थके हुए पथिक लिये, मधुर आशावचन लिए, प्रेम से करें आलिंगन ।
(आदर से हृदय धरे—प्रेम से गले भाई बोले ॥२॥
यथा हुम लोक के नेता, धर्म पिता महा पिता एक एक करके
गये आगे वहा जाना होगा हमे ॥
(देह गृह परिहरि) (भगवदत्ति तनु धरि)
मिलके इसी यात्री दल में, प्रवेश करेंगे स्वदेश में, गाते हुए
हरि गुण गान ॥३॥

१६. दोहे.

सतगुर नाम जहाज है, चढे सो उतरे पार ।
जो श्रद्धा कर सेवद, पार उतारन हार ॥ १ ॥
वायु बहत है सत्य ते, जलत सत्य ते आग ।
सत्य ही ते धरती थमी, सत्य होत बड़ भाग ॥ २ ॥
जहं तहं विषे विकार थे, तुम्हीं रावण हार ।
तन मन तुम को सोंपिया, साचा सर्जनहार ॥ ३ ॥

छठा अध्याय समाप्तम.

(२) बालक भजन.

१ छंद-छप्पय

देखें तो आनंद कर, सुनें तो आनंद कर ।
बोलें तो आनंद कर, प्राण ही आनंद है ॥ १ ॥
खाएं तो आनंद कर, पीवें तो आनंद कर ।
सोवें तो आनंद कर, जीवन आनंद है ॥ २ ॥
बैठे तो आनंद कर, लेटें तो आनंद कर ।
सदा ही आनंद कर, हरि सदानंद है ॥ ३ ॥

२. विभास.

आनन्दे गान करो, आनन्दे काम करो,
आनन्दे पान करो, आनन्दे ध्यान करो ।
आलस्य होवेना, विमर्श येकोना,
भावना रोवेना, यातना पावेना ॥ १ ॥

३. सिंधु—एयामडा.

आनंदमयी मेरी मा यह हंसत है ।
देखो मा हांसे, बच्चे हांसे, हांसी का बज़ार भरा है ॥टेक॥
मेघ बीच सूर्य शशि, देखे हंसे जगत्वासी ।
मा का यह मुख देख आनंद कैसा होता है ॥
तोही हंसी बच्चे मुख में देख आनंद होता है ॥१॥

मा के आस पास बैठके, हंसत है मुनि ऋषि ।
जोगी गण जोग बैठे, हंस्ते हंस्ते बोलने हैं ॥
जय जय आनंदमयी॥हस्ते हस्ते॥ एकमेवाद्वितीयम॥
हस्ते हस्ते ॥२॥
मा के मुख जैसी हांसी, सब के मुख में नही हांसी ।
सुख सुर नर लोक, येही हांसी हसत है ॥
बोले सत्यमेव जयते, यही हांसी हसत है ॥३॥
मा के मुख हांसी देखे, रोवे कगाल ऊच स्वरे ।
आनंद हांसी बरही मे केवल कगाल रोता है ॥
ब्रह्म कृपा ही केवलम, बोल कगाल रोता है ॥४॥

४. कीर्तन.

चलो चलो कीर्तन करे हम बालक, कीर्तन करेंगे बडे फूलेगे ।
आनंद मे हम खूब नचेंगे हां ! आनंद में हम खूब नचेंगे हां !
॥टेक॥
भजन भाव सें मस्त हो गयें, गा के प्रभु की भक्ति करेंगे ।
हरि हरि हम बलिहार तेरे हां! हरि हरि हम बलिहार तेरे हां!
॥१॥

५. कीर्तन.

मैं तो अच्छी ही लड़की बनूगी ॥ टेक ॥
नित सोते से उठते ही सब को,

सिर झुका नमस्कार करूंगी ॥ १ ॥
अपने समय पे जाय पाठशाला,
दिल लगा लिखूंगी पढूंगी ॥ २ ॥
कभी होगी जो भूल मुझ से,
माफी उस की मैं ले लूंगी ॥ ३ ॥
जब खेलूंगी सहेलियों से मिल कर,
खुश उनको ही सदा रखूंगी ॥ ४ ॥
काम करूंगी दिल से सदा ही,
सच सदा ही सब से बोलूंगी ॥ ५ ॥
हाथ जोड के सदा प्रभू को,
बार बार प्रभू को नमूंगी ॥ ५ ॥

---

६ झिंझर

नवविधान महिमा महान, करो गान सन्तो ॥ टेक ॥
ध्वजा नवविधान हाथ, नर नारी देखो साथ ।
मस्त हो के गाओ गाथ, जय ब्रह्म सन्तो ॥ १ ॥
स्थापत हुआ नवविधान, सभी धर्म मिले आन ।
सब में देखो उस का ज्ञान, गाओ हरि सन्तो ॥ २ ॥
बने ब्रह्म की सन्तान, ब्रह्म का ही धरें ध्यान ।
मांगो प्रभु से यह दान, शान्ति शांति सन्तो ॥ ३ ॥

---

७ पीलू (तर्ज कैसी मधुर बसरी)

अनत के है हम अश, अनत के हम वंश रे ।
हम अनत नहीं है ध्वश, हैं अनत के हम अश रे ॥टेक॥
अनत हो हमारा विश्वास, अनत है आश्वास रे ।
अनत ही चाहिये आश्वास, येही जपें हम श्वासो श्वास रे॥

८ कीर्त्तन

तुहें तुहै तुहें रे, मेरे हृदय कमल में तुहै रे ॥टेक॥
जो देखू देहमें, वहांभी दो जन, मै और तुही दो जन रे ॥१॥
चालू फिरूं देखूं वहां भी दो जन, जहां तहा देखूं दो जनरे ॥२॥
सोतेमें देखू वहा भी दो जन, जागुं देखू वही दो जन रे ॥३॥
तन मनमें, शुंया मेरा है तू प्रभु! कैसा न है तु प्यारा धनरे ॥४॥

९ उषा

दीजे दीजे हरि हमे, बल बुद्धि (ऐसी) ॥टेक॥
नयन करें दर्शन, श्रवण सुनें ज्ञान ।
रसन हरि गुण गान, हाथ करें दान ॥ १ ॥
शुद्ध रहे तन मन, और धरे ध्यान ।
काम करें प्रेम सें, रखें हम ईमान ॥ २ ॥
सर्व व्यापि पूर्ण ब्रह्म, लीला तेरी महान ।
आनंद ले के रहें सदा, इस स्वर्ग धाम ॥ ३ ॥
कृपा करो हरि हम, है तेरे सतान ।
शुद्ध रहे मति मेरी, यह देओ वर दान ॥ ४ ॥

१०. रेखता—दादरा.

प्रभु तुं मेरा मात पिता, मैं तेरा हुं संतान ।
पल पल मेरी रक्षा करे हो, रहके मेरे प्राण ॥ टेक ॥
पिता हो तुमही शिव सुंदर, सर्व शक्ति वान ।
प्रगट हो मुझ में गुणगुणा, जो रखुं मैं ईमान ॥ १ ॥
दया कर के दिया है, मुझ में सर्व शक्ति दान ।
मिल के तुमसे कार्ज करु, तो करोगे आसान ॥ २ ॥
भक्ति भाव प्रेम से मांगत यह दान ।
सच्चा सतान मैं बनु, देही यह स्वर्ग धाम ॥ ३ ॥

११ तोडी—(तर्ज प्रीति प्रभु से)

एक तू ही आधार, (हमारो) ॥ टेक ॥
खाना खिलौना बुद्धि बढाना, सब कुछ देने हार ॥ १ ॥
सारे जगत की शोभा सुंदर, तूं ही करने हार ॥ २ ॥
प्राणो के दाता जग की माता, तू हमरे रखवार ॥ ३ ॥
हृदय वासी तुम अविनाशी, करें हम तुम को प्यार ॥४॥
भक्ति भाव से हम सब मिल कर, करत नमस्कार ॥५॥

१२ सिंधु जिल्हा पोस्त (तर्ज गाओरे आनंदे)

सतान तुमारा मैं हूं प्रभु, शरन तुम्हारे ।
हृदय का समग्र प्रेम, यह लाया दुवारे ॥ टेक ॥

लादा प्रेम सोला आना, अब तुम कबहुं रुठोगे ना।
संसारिक रूखा प्रेम न लाया हु नेड़े ॥१॥
प्रेम न यह किया तोल, प्रेम मेरा है अडोल।
लाया हु तुम्हारे दुवारे, लेओ स्वीकारे ॥२॥
है प्रेम यह राधा भावे, असंभव संभव होवे।
करो विहार जुगलरूपे, हमरे अंतरे ॥
(तुम हमारे हम तुम्हारे हो सदा अंतरे) ॥३॥

२३. ज़िल्हा झिंझोटी—दादरा. (तर्ज़—तुमहीं तो हो)

हरि समान दाता जग में, दूसरा न कोई।
साधू और असाधू पाले, बोध अबोध दोई ॥टेक॥
राव पाले रंक पाले, कीट किर्म होई ॥१॥
जिस की दात भोगें सब ही, खायें पहिरें सोई।
धन्य ऊंच तुमरी दया, देखें सब में तोही ॥२॥

२४. भैरव. (तर्ज़—मैं कमलीदा बेड़ा)

दुद कटोरी गडवै पानी, कपरा गाय नामे दुहि आनि।
दुध पियो गोविंदे राय, दुध पियो मेरो मन पतिआउ
नहिं त घर को बाप रिसाय ॥ टेक ॥
सोन कटोरी अमृत भरीय लै नामे हर आगे।

एक भगत मेरे हृदय बसैय नामे देस नारायण हुसैय ॥२॥
दुध पियाय भगत घर गया नामे हरका दर्शन भैया ॥३॥

१५. खमाच दादरा.

जय जय जगदीश्वर उपास्य देव तूं ।
मंगलमय मूर्तिधाम जगवंदन तूं ॥ टेक ॥
सत्यम् शिवम् सुंदरम् परमात्मन तूं ।
सत्य स्वरूपा स्वत-प्रकाशी हे चेतन तू ।
पिता, माता, भ्राता, दीनबंधु, दयासिंधु मोक्षरूद ।
हे गुणनिधान तू ॥ जय० ॥ १ ॥
एक अखंड सर्वव्यापि भगवान तूं ।
निराकार निरविकार आदिकारण तू ।
ज्ञानी, ध्यानी, मुनी, मनरंजन, हृदिशोभन, ज्ञानांजन
हे सच्चिदानंद तू ॥ जय० ॥ २ ॥
दीन शरण पतित पावन जीवनघन तू ।
पाप मोचन ताप हरण सुख जीवन तू ।
तन, मन, धन, करें अर्पण, देवें दर्शन, होवें पावन
हे चित्त विनोदन तू ॥ जय० ॥ ३ ॥

१६. कीर्त्तन

कैसे दयाल हो प्रभुजी, कैसे कृपाल हो ।

प्रेम भक्ति भरीत हमारा, धन्यवाद हो ॥ टेक)
यह सुंदर सृष्टि में, सदा सगी सार्थी हो ।
दे खान पान वस्त्रदान, आनंद कराते हो ॥ १ ॥
दे शक्ति सब प्रकार, नित नया बनाते हो ।
काम धाम अटल नाम, खूब सीखाते हो ॥ २ ॥
कृतांजलि कर मे, कृतज्ञ हृदय हो ।
बार बार नमस्कार, हमरा तुझ को हो ॥ ३ ॥

१७. पींलू—पोस्त. (तर्ज़—हमें उद्धार करने.)

प्रभु दिया अमर प्राण, फलह भी दिया है वर दान ।
तुझे बनाया निज सतान, सदा रख तुं उसी का मान ॥टेक॥
छोड़ो यह अपशकुन ध्यान, शुभ ख्याल ही करो गान ।
कार्ज सब पूर्ण है यह जाण, प्रभु ने किया है सब कल्याण॥१॥

१८. होरी (तर्ज—मेरे लो तुमहीं.)

धन्य धन्य तुम एक हमारे, हे जीवन आधारे ॥टेक॥
धन्य धन्य तुम धर्म्म विधाता, धन्य धन्य नवजीवन दाता ।
धन्य धन्य तुम हे परित्राता, जीवन लक्ष प्रभु प्यारे॥१॥
धन्य धन्य विश्वासी के धन, धन्य धन्य प्रेमिक के मोहन ।
धन्य सेवक के प्रभु और जीवन, तुम में ही तृप्त हो सारे ॥२॥

तुमरी कृपा से मैं व्याकुल हो, पूरा तुमरा ही होने को ।
ढलने को जैसा तुम चाहो, आया हूं तुमरे द्वारे ॥ ३ ॥

१९. पीलू ताल पोस्त. (तर्ज—हमें उद्धार करने का.)

तुमको प्यार करना तुम्हीं मुझे सिखाओ,
हाथ पकड़ हे पिता, शुभ पथ में ले जावो ॥ टेक ॥
मैं तो हूं हीन मति, दुर्बल शिशु अति ।
तुम न ले चलो यदि, विपय में पर जाऊं ॥ १ ॥
इस लिये पास रहो, पाप ताप से बचाओ ।
तेरे हृथ में जान देकर बेडर सदा रहूं ॥ २ ॥
धर्म के यह रास्ते में यदि दुख ताप आवे ।
वैसा बल देओ दिल में, जैसे उसे सह सकुं ॥ ३ ॥

२०. खेमटा (तर्ज—नवविधान का उत्सव.)

धन्य तू कर्तार मेरा, धन्य तू जगदीश्वरा ।
धन्य है कृपा यह तेरी, धन्य तूं परमेश्वरा ॥ टेक ॥
धन्य सृष्टि रचत है तू, कौन महिमा गासके ।
व्याप्त है तू जगत माही, गुण न तेरे पासके ॥ १ ॥
उत्तम वाणी, रूप निर्मल, वेद अन्त न पाया ।
दयाल है तूं दीन का, अनन्त नाम रखाया ॥ २ ॥
जगपिता तूं जगत माता, तूहीं पालनहार है ।

स्वामी तू संसार का, तेरा ही सब परिवार है ॥ ३ ॥

२१ गजल—धमाल (तर्ज—करो हरि का)

हमें ले चलो जहां प्रेम तुम्हारा ।
तुम्हरीही महिमा महानजहाहो होवे हरसू पाक नजारा।टे।
प्रेमिकजन जहा नृत्य करतेहैं जयजय ब्रम्ह का मारे नारा।
प्रेमकी मधुरसुहानी लीला भक्तोंको करती मस्तवारा।१।
खुदगर्जीकी नहीं जहा बूमी पुण्य और प्रेमकी बहरही धारा।
मंगल भावसेसब सेवक जन औरों का करते उपकारा।२।
चारोंओरजहा आनंद बरसे बोलें तुम्हाराही जय जयकारा।
सारे भक्त जहां हुए एकत्र गाय रहे गुनगान तुम्हारा।३।

२२ पीलु (हमें उद्धार करने का)

जगतमाता दया करके, हमें सृष्टी में लाया है ।
चन्द्र तारे सूरज और, खाना हमको ही दिया है ॥ टेक ॥
उत्साह शक्ति की देकर मौज, उद्यम मुझसे कराया है ।
प्रेम गोद में ले सब रात, हमें सुख से सुलाया है ॥ १ ॥
मधुर गाना सुभु गाके, प्राण मेरा जगाया है ।
जीवन नूतन भरकर, अनंद सबको कराया है ॥ २ ॥
हे माता क्या हक्क मेरा, जो इतनी किरपा किया है ।
देकर हृदय में भक्ति प्रेम, ध्यान अपना सिखाया है ॥३॥
चिरसगी मेरा होके, मारग ऊचा दिखाया है ।

प्रेमनगरी में शांति से, मुझे तू ने बिठाया है ॥ ४ ॥
ऐसा दाता नेना पाता, कैसे हम छोड सकते है ।
भक्ति भाव सरलता से, यहि हम स्वर्ग पाया है ॥ ५ ॥
जगतजननी तुझको हाँ, हम परनाम करते हैं ।
भक्ति आनंद से हम, जीवन सदा बितारहे ॥ ६ ॥

---

२३ श्लोक

धन्यदेव तव करुणा अपारा विश्व दिव्यगुण वर्णों तिहारा टे
चंद्र सूर्य सब तव महिमा प्रकाशे विश्वपति तव नाम प्यारा ।१।
मातृक्रोड शिशु करता कलोला विश्व माल तुम जग तुम्हारा ।२।
नयनखोल यदि रचना निहारे प्रेममय जग निरखहिंसारा ।३
सर्व मानव पशुलता पहाडा ज्ञानशक्ति तव करते प्रचारा।४।
धन्यधन्य हम तुमको आराधे होय जीवनहि कृतार्थ हमारा।५।

---

२४ तिलग (तर्ज—करो ध्यान सदा)

कृपासिंधु तुम नाथ हमारे, हम बालक शरण तुम्हारे ॥टेक॥
तुझ बिन और कोई नहीं हमरा, प्रभु तुमहि हो हमरे प्यारे।
तुमही माता पिता और भ्राता, एक तुमही गुरु हमारे ॥१॥
लज्जा शरण पडे की राखो, आय खड़े हैं तुमरे द्वारे ।
विनती दास की उर पर लीजे, रहें सदा शरण में तुमारे॥२॥

पवन जल आग धर्ताय में तुम ही हो ।
रमत हो तूमही तनमन में सदाही ॥ ३ ॥
विनातुमरे कौन साच्चाहै संगी सुनाये हाल जिसे दिलका सदाही
बांध के हाथ मांगे सभी हम करो कृपा बुद्धि दाता सदाही ॥४॥

२६. भैरवी (तर्ज—ब्रह्म कृपाहि केवल.)

प्रभुहि देत मदद मुझे, सबही मेरे कारज में ।
प्रभु करत है तृप्ति मेरी, जोई सुख है तन मन में ॥ टेक ॥
तुमहीं प्रभुजी नेता मेरा, जीवन की राह बताने में ।
तुमहीं प्रभुजी रक्षक मेरा, पल पल की सुध लेने में ॥ १ ॥
जनम लिया है ज्ञान में, वासा ही है सत्य में ।
ब्रह्म का ही हुं मैं बालक, रहता हुं सतोष में ॥ २ ॥

31. TRUST IN GOD AND DO THE RIGHT.

तर्ज़—नवविधान का उत्सव

Courage brother, do not stumble,
Though thy path be dark as night,
There's a star to guide the humble,
Trust in God, and do the right.

Perish policy and cunning,
Perish all that fears the light,
Whether losing, whether winning,
Trust in God and do the right.

Trust no lovely forms of passion,
Fiends may look like angels bright,
Trust no custom, school or fashion,
Trust in God, and do the right.

Some will hate thee, some will love thee,
Some will flatter, some will slight,
Cease from man, and look above thee,
Trust in God, and do the right.

पवन जल आग धर्ताय में तुम ही हो ।
रमत हो तुमहीं तनमन में सदाही ॥ ३ ॥
विनातुमरे कौन साचाहै संगी सुनाये हाल जिसे दिलका सदाही
यांच के हाथ मांगे सभी हम करो कृपा बुद्धि दाता सदाही ॥४॥

---

२६. भैरवी (तर्ज—ब्रह्म कृपाहि केवल)

प्रभुहि देत मदद मुझे, सबही मेरे कारज में ।
प्रभु करत है तृप्ति मेरी, जोई भूख है तन मन में ॥ टेक ॥
तुमहीं प्रभुजी नेता मेरा, जीवन की राह बताने में ।
तुमहीं प्रभुजी रक्षक मेरा, पल पल की सुध लेने में ॥ १ ॥
जनम लिया है ध्यान में, वासा ही है सत्य में ।
ब्रह्म का ही हुं मैं बालक, रहता हुं संतोष में ॥ २ ॥
हो सकता हु कर सकता हु, सब कुछ सम्भव है मुझ में ।
सच्चे विश्वास के ही द्वारे, भरा जो है मेरे दिल में ॥३॥
प्रभु जब ही मेरा जीवन, रोग रहित हु मैं मन में ।
प्रभु एकही मेरी शक्ति, जाग्रत मेरे जीवन में ॥ ४ ॥
प्रभु ही सब कुछ है जब मेरा, कहां डर आ सकता मुझ में ।
जीवत हु मैं प्रभु के प्रेम में, साक्षात है जो हृदय में ॥५॥

31. TRUST IN GOD AND DO THE RIGHT.

तर्ज—नवविधान का उत्सव

Courage brother, do not stumble,
Though thy path be dark as night,
There's a star to guide the humble,
Trust in God, and do the right.

Perish policy and cunning,
Perish all that fears the light,
Whether losing, whether winning,
Trust in God and do the right.

Trust no lovely forms of passion,
Fiends may look like angels bright,
Trust no custom, school or fashion,
Trust in God, and do the right.

Some will hate thee, some will love thee,
Some will flatter, some will slight,
Cease from man, and look above thee,
Trust in God, and do the right.

32 MY MANTRA

तर्ज—मुझे इस प्रेमी

Day by day by thy grace
We are getting better and better
Day by day in every* way
We are getting better and better

Dr Cuoe

---

33 A MORNING MEDITATION.

तर्ज—हमारे तो

O Lord I wake to see thy light,
And live another day,
To do my work, though hard it be,
I pray show me Thy way

Give me the strength to bear the load
And keep me in repose,
Give me Thy peaceful loving calm
To shield me from my foes

I know my foes are only thoughts
That linger in my mind,
That I can keep them from my sight
By being ever kind

*Note— Every way — Financially Morally Mentally spiritually

So let me do one thing today
To lift some other's woe
And teach one soul by one kind deed
That Heaven is here below

And let me realize Thy strength
And Love so woderous kind,
And trust in Thee with all my heart
And all my soul and mind

34 GUIDANCE

तर्ज़—कीजे नाथ हमारे

Father, lead me day by day
Ever in thine own sweet way,
Teach me to be pure and true,
Show me what I ought to do

When in danger make me brave,
Make me know that thou canst save,
Keep me safe by thy dear side,
Let me in thy love abide

When my work seems hard and dry,
May I press on cheerily,
Help me patiently to bear
Pain and hardship, toil and care

May I see the good and bright
When they pass before my sight,
May I hear the heavenly voice
When the pure and wise rejoice

May I do the good I know,
Be thy loving child below,
Then at last go home to thee,
Evermore thy child to be

J Page Hoppe

35 PRAYER SONG

तर्ज—ब्रह्म कृपाहि केवल

God is my help in every need,
God does my every hunger feed,
God walks beside me, guides my way,
Through every moment of this day

I know am wise, I know am true,
Patient, kind and loving too
All things I am, can do and be,
Through the true faith that is in me

God is my health, I can't be sick,
God is my strength unfailing, quick,
God is my all, I know no fear,
Since God and Love and Truth are here

Master Mind

36. CONSECRATION.

(तर्ज—प्रभु दया की अजस्र

Take my life, and let it be
  Consecrated, Lord, *to Thee*,
  Take my *moments* and my days,
  Let them *flow* in ceaseless praise.

Take my hands and let them move,
  At the impulse of thy love;
  Take my feet and let them be,
  Swift and beautiful for Thee.

Take my voice and let me sing,
  Always, only for my King;
  Take my lips, and let them be,
  Filled with messages from Thee

Take my silver and my gold,
  Not a mite would I withhold;
  Take my intellect, and use
  Every power as Thou shalt choose.

Take my will, and make it Thine,
  It shall be no longer mine;
  Take my heart, it is Thine own,
  It shall be Thy royal throne.

Take my love my Lord, I pour
At Thy feet its treasure—store
Take myself and I will be
Ever only all for Thee

37 THERE AM I

तर्ज़—काफ़ी

They who tread the path of labour
Follow where my steps have trod,
They who work, without complaining
Do the holy will of God

Where the many toil together
There am I, amid my own
Where the weary, workman sleepeth,
Here am I, with him alone

I the peace that passeth knowledge,
Dwell amid, the daily strife
I the bread, of heaven am broken,
In the sacrament of life

Every act however simple,
Sets the soul that does it free,
Every deed of love and mercy
Done to man is done to me

Ne'er more thou needest seek me
I am with thee everywhere,
Raise the stone, and thou shalt see me
Cleave the wood, and I am there

सातवाँ अध्याय.

आरती.

१ आरती, पाहाडी—ठुमरी.

नमोदेव! नमोदेव! नमो निरंजन हरि ।
सत्य पावन, मंगलकारण, तव पद शिरे धरि ।
सबे प्रणिपात करि ॥ नमोदेव! नमोदेव! ॥टेक॥
(तव) अमर सुपुत्रगण, योगी ऋषी तपोधन ।
ईशा मुसा जन गौर आदि महाजन ।
(शाक्य) (जनक) (नानक) (केशव) (तुकाराम) ।
तांदेर जेवन चरितदर्पणे, तोमारे करि दरशन ।
वंदि नाथ ओ चरण ॥ नमोदेव! नमोदेव! ॥१॥
(तुमि) विश्वव्यापी भगवान, सर्वभूते वर्तमान ।
जड जीव तरु लता सबाकार प्राण ।
तादेर भितरे, निरखि तोमारे, करि विनति प्रणाम ।
करे वराभय दान ॥ नमोदेव! नमोदेव! ॥२॥
ए विशाल संसार, तव प्रिय परिवार ।
नरनारी जने प्रकाशे महिमा तोमार ।
स्त्रीलोक बालक, शत्रु मित्र सबे बार बार नमस्कार ।
तुमि सर्व-मूलाधार ॥ नमोदेव! नमोदेव! ॥३॥
जगे जगे युगधर्म, योग भक्ति ज्ञान कर्म ।
बाइबेल वेदादि प्रकाशे याहार मर्म ।
प्राचीन विधान, नूतन विधान, आमादेर प्रणम्य ।
जय एक परब्रह्म ॥ नमोदेव! नमोदेव! ॥४॥

२ स्तव—झांपताल

जय जय हे जय जय निरंजन, परब्रह्म सनातन ॥टेक॥
तुम्हि वेद तुम्हि धर्म तुम्हि शक्ति;
तुम्हि कर्म तुम्हि सर्व मंगलनिधान।
जुग जुग मे तुम हरि भक्त हृदे अवतरि;
प्रचार किया नुतन विधान ॥१॥
तुम्हि विधि तुम्हि तन्त्र तुम्हि गुरु,
तुम्हि मन्त्र तुम्हि आदि तुम्हि अन्त हे।
तुम्हि प्रेम तुम्हि पुण्य तुम्हि सिद्धि;
तुम्हि पूर्ण अनादि तुम्हि अनंत हे ॥ २ ॥
तुम्हि ब्रह्म तुम्हि हरि जननी जगदीश्वरी;
तुम्हि पिता माता बंधु हे।
तुम्हि स्वर्ग तुम्हि शांति तुम्हि गति;
तुम्हि मुक्ति तुम्हि वांछाकल्पतरु हे ॥३॥
धन्य तव पुण्यनाम होगा स्वर्ग भव धाम;
तुम्हि धन्य! तुम्हि धन्य! तुम्हि धन्य हे।
प्रेमदास सकातरे याचे कृतांजलि करे;
तुमरे पदमे देओ स्थान हे ॥४॥

३. झांपताल.

अखिल ब्रह्मांडपति प्रणमि चरणे तव, प्रेम भक्ति भेर शरण लागी॥टेक॥
दुर्मति दूर करि शुभमति देओहे, यहि वर दान भगवान् मांगी ॥१॥

४ आरती.

हे नाथ निरंजन, तुम्हारे चरणन; हे नाथ निरंजन, तुमहारे चरणन।
तन, मन, धन करे समर्पण ॥ १ ॥

५. श्लोक, (मराठी)

घालीन लोटांगण वंदीन चरण, डोळ्यांनि पाहिन रूप तुझें ।
प्रेमे आलिंगिन आनन्दे पूजिन, भावें ओंवाळिन म्हणे नामा ॥ १ ॥

६. जीवनपुरी. (तर्ज—ले चलो जहां प्रेम)

सत्य तेरो रूप स्वामी सत्य तेरो नाम है ।
सत्य तुंही अन्तर्यामी सत्य तेरो काम है ॥ टेक ॥
सत्य है सत्ता तेरी ओर सत्य तेरो ज्ञान है ।
सत्य तू परिपूर्ण भगवन् सत्य तेरो मान है ॥ १ ॥
सत्य तू कर्त्तार कर्त्ता, सत्य तू जगदीश्वरा ।
सत्य तू अकाल मूर्त सत्य तुंही ईश्वरा ॥ २ ॥
जगत असत्य तू सत्य स्वामी, सत्य रक्षा कीजिये ।
हम भिखारी तू भंडारी सत्य भिक्षा दीजिये ॥ ३ ॥

७.—आरती.

जय देव जय देव, जय त्रिभुवन कर्ता, (प्रभु) जय त्रिभुवन कर्ता ।
सब के आश्रय दाता, सब के आश्रय दाता, भय संकट हर्ता ॥ १ ॥
जड चेतन सब जते, महिमा तव गावें, (प्रभु) महिमा तव गावें ।
राजा परजा सबहि, राजा परजा सबहि, तुझ को सिर नावें ॥ २ ॥
अतुल तुमारी करुणा, बरनी नहिं जाई, (प्रभु) बरनी नहिं जाई ।
मंगल कीर्ति तुमारी, मंगल कीर्ति तुमारी, गगन गगन छाई ॥ ३ ॥
भिक्षा यही हमारी, हे मंगल देवा, (प्रभु) हे मंगल देवा ।
निश दिन हों उत्साहित, निश दिन हों उत्साहित करें तेरी सेवा ॥४॥

८—काफी.

मेरे घर संत जन आवे, तो मैं बलिहार जाऊंगी ॥ टेक ॥
आसन हृदय में उन्हें देऊं, वचनामृत प्रेम से पीऊं ।
जो हे उद्वेग इस मन का, सो सारा मैं मिटाऊंगी ॥ १ ॥
चढा के फूल भावों से, खिलाऊं खाना भक्ति से ।
फिरा के पंखा प्रीती से, अंतर अगनी बुझाऊंगी ॥ २ ॥
पवित्र मन के यह साधू जन, लक्षण है लाल मन मोहन ।
हरि रस नाम में माते, चरण रज माथे सारूंगी ॥ ३ ॥

९.—जोग.

आज आनन्द महा मंगल मेरो, सत समागम पायो रे ।
कोई दिना के भाग ही प्रगटे, हरि कृपा घन आई रे ॥ टेक ॥
उन के संग में शुभ मति उपजी, जेह में हरि दरसायो रे ॥ १ ॥
हरि रस अमृत पी पी मन को, स्वर्गानन्द चखायो रे ॥ २ ॥
यह स्वर्गीय मेला रच कर ऐसा, बडे आनन्द नचायो रे ॥ ३ ॥
अब तो दिलमें यहि अभिलाषा, ऐसे ही संग मिलाओ रे ॥ ४ ॥

१०.—भजन

हूं कुर्बानी जाऊं प्यारे, हूं कुर्बानी जाऊं ॥ टेक ॥
हूं कुर्बानी जाऊ तिना के, लैन जो तेरा नाउ ।
लैन जो तेरा नाउं तिना के, सद कुर्बानी जाउं ॥ १ ॥
काया रंगन ज थिये प्यारे, पाईये नाम मजीठ ।
रंगनवाला जे रंगे साहब, ऐसा रंग न डीठ ॥ २ ॥
जिन के चोले रतडे प्यारे, कन्त तिनां के पास ।
धूड तिना की जे मिले जी, कहु नानक की अरदास ॥ ३ ॥

११.—अभंग.

पवित्र परमात्मन पवित्र आत्मन, पवित्र तनमन यह जीवन है ॥१॥
पवित्र है यहजग पवित्र जगमग, पवित्र तारामंडल यह सुंदर है ॥२॥
पवित्र है नयन पवित्र है यह कर्ण, पवित्र यह ध्यान सदा यह है ॥३॥
पवित्र संसार पवित्र महाजार पवित्र यह प्यार शीतल है ॥ ४ ॥
पवित्र यह घर पवित्र यह द्वार, पवित्र नरनार सबहि है ॥ ५ ॥
पवित्र उद्यम पवित्र कदम पवित्र दम दम परम है ॥ ६ ॥
पवित्र आचार पवित्र विचार पवित्र आधार सदैव है ॥ ७ ॥
पवित्र जनम पवित्र करम, पवित्र धम्म यह सुखदाई है ॥ ८ ॥
पवित्र सिमरण पवित्र चरण, पवित्र नमन हम करते है ॥ ९ ॥

१२.—श्लोक.

नमो देवराया नमो ज्ञान सिंधो, नमो दीनानाथा नमो दीन बंधो ।
नमो निर्मला निरगुणा निर्विकारा, नमः सर्वशक्ते नमो हे उदारा ॥१॥
नमो विश्वकर्त्या नमो विश्वपाळा, नमो मायबापा नृपाळा कृपाळा ।
नमः सौख्यकंदा नमो विश्वभूपा, नमः सच्चिदानंद शांति स्वरूपा ॥२॥

१३. देश मल्लार—कव्वाली.

नमि प्रभु तव चरणे, कृपानिधानं कृपानिधानं ।
त्रिलोकतारण लज्जानिवारण, भय दुःखनाशन त्राण करो हे ॥टेक॥
जीवनवल्लभ, दर्शनदुर्ल्लभ, तोमा तरे आकुल प्राण हमारो ।
रक्षा करो हे, करुणासागर, बिंदु कृपा तव दाम्रो आमारे ॥ १ ॥

१४. भैरवी. (तर्ज—तुझे इस प्रेमी)

सकल यह विश्व है स्वामिन तुमारा गान गा रहा है ।

तुम्हारी कीर्ति का लगातार, वायु बीना बजा रहा है ॥ टेक ॥
क्या बन बाग कली कली, पशु पक्षि अली अली ।
प्रेम नगरी की गली गली से, 'तुंहि तुं' नाद आ रहा है ॥ १ ॥
सागर का प्रत्येक तरंग, सूर्य के किरन किरन का रंग ।
बिजली की चमक का सब अंग, गान में तान मिला रहा है ॥ २ ॥
संत जन मुख का हर उच्चार, कवीजन मनका हर उद्गार ।
सति नारी का पतिवृत प्यार, तव रस सिंधु बहा रहा है ॥ ३ ॥
जीवन तत्त्व का हर एक, जीव तत्त्व का हर एक ।
मनो विज्ञान का प्रत्येक, तेरी कीर्ति दिखा रहा है ॥ ४ ॥
विज्ञान का हरएक तत्त्व, दर्शन शास्त्र का इक सत्त्व ।
विद्या का सब ही महत्व, महिमा तुम्हरी बढ़ा रहा है ॥ ५ ॥
वेद इंजिल, कुरान पुरान, सम्मिलन नव विधान ।
समाधिका जो अगम प्रयोग, लिव तुम संग लगा रहा है ॥ ६ ॥
तुम्हारा गुण सिंधु गेहरा, लगा गोता जो यहां डेरा ।
उनका दम दम का लेहरा, अजब इक शेर सुना रहा है ॥ ७ ॥

स्तोत्रम्.

ब्रह्मस्तोत्रम्.

नमोऽकिंचननाथाय नमोऽघ्न नमोऽभय ।
अन्तर्यामिन्नन्तरात्मन नमोऽनन्ताश्रयाय ते ॥ १ ॥

नमोऽगतिगते तुभ्यं नमस्तेऽखिलकारण ।
अरूपाय नमोऽनाथनाथ अनमसारण ॥ २ ॥
नमस्तुभ्य कातराणा शरणाय कृपादधे ।
करुणानिधये कल्पतरो कतुशाशन ॥ ३ ॥
नमो गुणनिधानाय गतिनाथाय चिन्मय ।
चिन्तामण चिदानन्द नमश्चिरसखे नम ॥ ४ ॥
नमस्त जगदाधार जीवाना जीवनाय च ।
ज्योतिर्मय जगन्नाथ जगत्पालन ते नम ॥ ५ ॥
नमस्तुभ्य दयेशाय दारिद्र्यभंजनाय ते ।
दीनबन्धो दर्पहारिन् रत्नाय दुर्लभाय च ॥ ६ ॥
नमो देवाय दीनाना पालकाय नमोनम ।
दयामयाय ते धर्मराजाय ध्रुव नित्य च ॥ ७ ॥
नमस्तुभ्य निरुपम निष्कलंक निरंजन ।
नित्यानन्दाय निखिलाश्रयाय नयनाजन ॥ ८ ॥
नमस्ते निर्विकाराय पित्रे पात्रे नमोऽस्तु ते ।
परात्पर परब्रह्मन् पाखण्डदलनाय ते ॥ ६ ॥
नम प्रसवण भीते नम पतितपावन ।
पुण्यालय परित्रात पूर्ण प्राणधनाय च ॥१०॥
नम प्रेमन् पुराणाय पवित्राय परेश्वर ।
प्रभो प्रसन्नवदन परमात्मन् प्रजापते ॥ ११ ॥
नमो विश्वपत ब्रह्मन् विपत्तारण ते विभो ।

विजयाय (?) ातस्ते नमो विघ्नविनाशन ॥ १२ ॥
नमो भक्तवत्सलाय नमो भुवनमोहन ।
भुवन् भवाब्धिकाडारिन् भवभीतिहराय च ॥ १३ ॥
नमस्ते मंगलनिधे नमस्ते महिमार्णव ।
मुक्तिदातर्महन् मोक्षधाम्ने मृत्युंजयाय ते ॥ १४ ॥
नमो नमोऽस्तु योगेश शान्तिराकर शुद्ध च ।
श्रीनिवास स्वर्गराज स्वयंभो स्वप्रकाश त ॥१५॥
नम सद्गुरवे सारात्साराय सुंदराय च ।
सर्व्वव्यापिन् सर्व्वमूलाधारायास्तु नमोमम ॥१६॥
नमोऽस्तु सर्व्वराध्याय नमोऽस्तु सर्व्वसाक्षिणे ।
सुधासिंधो सिद्धिदातः शुभ स्नेहमयाय च ॥१७॥
नमः कष्टे नम सर्व्वशक्तिमंस्ते नमोनमः ।
सनातनाय सत्याय नमः सर्व्वोत्तमाय च ॥१८॥
हृदयाभिरंजनाय हृदयेश नमोनम ।
नामान्येतानि गृहणन्तं पतितं मा समुद्धर ॥१९॥
(नामान्येतानि संकीर्त्य प्रणमामि पुन पुन)

[इत्यष्टोत्तरशतनाम्ना ब्रह्मस्तोत्रं समाप्तम्]

आठवां अध्याय.
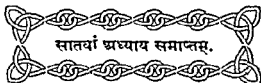
(१) नगर कीर्त्तन.

१. कालंगडा.

अब हरि की धूम मचावो रे, गली गली मे धूम मचावो रे ॥ टेक ॥
लाभ तृष्णा छोड़ो रे भाई, हरि को महिमा गावो रे ॥ १ ॥
सच्चे हृदय से गा कर देखो, बड़ी खुशी को पावो रे ॥ २ ॥
जिन गाया तिन अमृत चाख्या, चिंता शोक गंवायो रे ॥ ३ ॥
प्रेम की लहिरें बहे जो अंतर, पी हरि दर्शन पावो रे ॥ ४ ॥

२. धनाश्री. (तर्ज—पुकारो मन जननी)

भजो मधुर हरि नाम (सतो) ॥ टेक ॥
सरल भाव से हरि भजे जो, पावे अमृत धाम ॥ १ ॥
हरिहि सुख है हरिहि शांति, हरिहि प्राणाराम ॥ २ ॥
हरिहि मुक्त करे पापा से, जो भजे हरि अविराम ॥ ३ ॥

३. गजल—धमाल. (तर्ज—भजोरे भज भज)

जगत है प्रेम का सारा, दुखायो प्राण इक बारा ॥ टेक ॥
प्रभु है प्रेम की धारा, जगत उससे नहीं न्यारा ।
जुड़ाओ नयन इक बारा, सभी मिल के आ' नरनारा ॥ १ ॥
यह है विशाल संसारा, प्रभु का प्यारा परिवारा ।
पिता माता आ'सुत दारा, प्रकाशे रूप कर्त्तारा ॥ २ ॥

धन धान्य का भंडारा, दिखावत रूप नित न्यारा ।
उत्तम देही में विस्तारा, सदा शांति देयन हारा ॥ ३ ॥

४. खेमटा.

हरि जैसा मजेदार, कहीं देखा नहीं यार ।
हरवक्त वो साथ रहे, देत है दीदार ॥ टेक ॥
माता होके जनम दे, पिता होके पोषै ।
गुरु होके ज्ञान बतावे, ऐसा है कर्तार ॥ १ ॥
आंखों की है ज्योत वही, कानों का है श्रोता ।
हियां बिच बैठ कर, प्रेम का संचार ॥ २ ॥
कोई कहे निराकार, कोई कहे साकार ।
नवविधान का शिशु कहे, वो तो साक्षात्कार ॥ ३ ॥

५. पीलू.

हरि बोलो हरि बोलो हरि बोलो भाई, हरि ना बोले थांको राम दुहाई ॥टेक॥
मेरा मेरा कर क्या फल पाया, हरि के भजन बिना झूट कमाया ॥१॥
कांहे को सीखत पद पद गीता, हरि के भजन से सब कुछ होता ॥२॥
कहत कबीर हरि गुण गावो, नाचत गावत बैकुंठ जावो ॥ ३ ॥

६. मुलतानी—त्रिताल.

हरि भजन को दिया कमल पुख, हरि भजन को दिया ॥ टेक ॥
प्रभु कृपा से ऐसा उत्तम, सुन्दर नरतनु पाया ॥ कमल ॥ १ ॥
खाया पीया सुख से सोया, नाहक जमाना खोया ॥ कमल ॥ २ ।

जेह मुख निसदिन हरिनाम नाहीं, तेह जनम अकारथ खोया ॥ कनक ॥३॥
दास कहत हैं सुनो भाई साधो, जैसा आया वैसा गया ॥ कनक ॥ ४ ॥

७. पिलू.

भजो रे भाई अब प्रभु नाम ॥ टेक ॥
अब प्रभु नाम भजो रे भाई, चिंता शोक गंवाई ।
रामनाम धन निश दिन जोड़ो, त्यागो मोह और पाप कमाई ॥ १ ॥
यही धन भगत कबीरा जोड़ा, जोड़ा मीरा बाई ।
गुरु नानक यही धन लेकर, हर ही की स्तुति गाई ॥ २ ॥
हरि सिमरन कर रविदास ने, सन्तकी पद्वी पाई ।
चेतन भगत प्रेम के बाजे, प्रेम मेंही लवलाई ॥ ३ ॥
सूरदास और तुलसीदास ने, यह ही की नकमाई ।
यह विश्वासी कहत सुन चितसों, देख तो आख उठाई ॥ ४ ॥

८. लावनी चाल.

अजब बनी तेरी जिंदगानी, अमर आत्मा है पाया ।
इस दुनिया में आनंदे रहना, प्रीत प्रभु से लगाना ॥ टेक ॥
लता पत्ता में प्रभु बसत है, घट घट उस का अस्थाना ।
दर्शन हर दम तुम करना, और नाम सदा उन का गाना ॥ १ ॥
मस्त मग्न हो शुभ काम में, जीवन को सुफला करना ।
जो करना सो "अब" करना, कल ऊपर तुम नहीं रखना ॥ २ ॥
नित निन नित हरि गुण गाना, ध्यान सदा उस में धरना ।
(जनम मरण का डर नहीं रखना, किसी बात का डर नहीं रखना) ।

आशा भरोसा नित रखना, पड़ा रहना हरि के चरना ॥ ३ ॥

९. मुलतानी—त्रिताल.

खेती करो हरि नाम की, मनवा खेती करो हरि नाम की ॥ टेक ॥
पइसा न लागे रुपिया न लागे, कवडी न लागे फुक्की ॥ १ ॥
मन के बैल सुरत पोहवे, रस्सी लगाऊं गुरु ज्ञान की ॥ २ ॥
कहत कबीरा सुनो भाई साधो, भक्ति करो हरिहर की ॥ ३ ॥

१०. कल्याण.

हरि से लाग रहो मेरे भाई ।
तेरी बनत बनत बन जाई, तेरी बिगड़ी बात बन आई ॥ टेक ॥
धनका तारी बनका तारी, तारे सदन कसाई ।
सुआ पढाते गणका तारी, तारी मीराबाई ॥ १ ॥
दौलत दुनिया माल खजाने, इन से सुख न आई ।
जब ही सिर पर आफत आवे, कोई न होय सहाई ॥ २ ॥
ऐसी भक्ति करो घट भीतर, छोड कपट चतुराई ।
सेवा बंदगी और आधीनता, सहजे मिले गुसाई ॥ ३ ॥

११. खमाच—ताल धमाल.

भजो रे भय्या सच्चिदानन्द हरि ॥ टेक ॥
जपतप साधन कछु नहीं लागत, खरचत नहीं गठरी ॥ १ ॥
सतति सम्पति सुख के कारण, जासे भूल परी ॥ २ ॥
कहत कबीरा जिस मुख राम नहीं, तिस मुख धूल परी ॥ ३ ॥

१२. माड. धमाल.

करो हरि का भजन प्यारे, उमर ये बीती जाती है ॥ टेक ॥
जरा सोच काज किस आया, मनुष तन है उत्तम पाया ।
जगत सुखों मे भरमाया, हरि की याद न आती है ॥ १ ॥
जा हरि के शरणं चित लावे, स्वर्ग भी यहीं पावे ।
सदा सुख शांति मिल जावे, ब्रह्म वाणी सुनाती है ॥ २ ॥

---

१३. ललित—कवाली.

मन एक बार हरि बोल, हरि बोल हरि बोल ।
हरि हरि हरि बोले, भवसिंधु पार चल ॥ टेक ॥
जले हरि स्थले हरि, चन्द्रे हरि सूर्ये हरि ।
अनले अनिले हरि, हरिमय ए भूमंडल ॥ १ ॥
सुखे हरि दुःखे हरि, विपदे संपदे हरि ।
जनम मरणे हरि, हरि परम मंगल ॥ २ ॥
हरि पिता हरि माता, हरि गुरु ज्ञान दाता ।
हरि सर्व जन त्राता, शुद्ध-सत्त्व निर्मल ॥ ३ ॥
नयने देखो हे हरि, रसनाय बोलो हरि ।
हृदय-कमले भज, हरि-चरण-कमल ॥ ४ ॥

---

१४. पिलू.

दुःख सागर मे कायके प्यारे, मन आवेरे प्यासा ॥ टेक ॥
निर्मल नीर नदिया घट भीतर, पीलेरे भागो भागा ॥ १ ॥
मृग जल तृष्णा छोड़ दे बावरे, पावे हद विश्रामा ॥ २ ॥

कौड़ी कौड़ी कर माया जोड़ी, संग न चले एक मासा ॥ ३ ॥
हर जी चेत ले मूढ़ मन मेरे, दमराज देवेगा गल फासा ॥ ४ ॥
प्रेमी जन संत सदा मतवाला, जगत से रहेत उदासा ॥ ५ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, एक नाम की है आसा ॥ ६ ॥

१५. कीर्त्तन.

चलो भाई सबे मिले जाई से पितार भवने ।
सुनेछि नाकि ताँर बड़ो दया दुखी तापी कांगाल जने ॥ टेक ॥
कांगाल बोले दया करे, केउ नाई आमादेर त्रिभुवने ।
आर के बुझिबे मर्मव्यथा (आर केबा जाने रे)
सेई दयार सागर पिता बिने ॥ १ ॥
दूरे गिये कातरस्वरे, पिता बोले डाकि सघने ।
तिनि थाकिने पाबेन ना कभु (तांर बड़ो दया रे) ॥
पापी जनेर कान्ना शुने ॥ २ ॥
निराश्रय निरुपाय जत, निस्संल संबल विहीने ।
सेई अनाथेर नाथ दीनबंधु, उद्धारिबेन निजगुणे ॥ ३ ॥
दुर्बल असहाय देखे, किछु भय कर ना मने ।
ओरे अनाथारे तरे जाबो सेइ सुधामाखा दयाल नामे ॥ ४ ॥
चल सबे त्वरा करे, किछु सुख आर नाइ एखाने ।
एक बार जुड़ाई गिये तापित हृदय, लुटाइये ताँर श्रीचरने ।
(प्राण शीतल हेब रे) ॥ ५ ॥
अज्ञान दीन दरिद्र, जत पतित संताने ।
पिता अधमतारण बिलाछेन धन आयरे सबे जाई सेखाने ।
(दुख दूर जाबे रे) ॥ ६ ॥

१६. विभास—कव्वाली.

दयामय दयामय दयामय, जय दयामय ॥ टेक ॥
जय प्रभु परब्रह्म हरि लीलारसमय ।
जय मां आनंदमयी जगतजननी की जय ॥ १ ॥
आज नव वृन्दावने, लेके सब भक्तगने ।
किया है प्रेममय, सर्व धर्म समन्वय ॥ २ ॥
जनक नारद ईशा, जोगी याज्ञवल्क्य मुषा ।
शिव शाक्य महम्मद, नानक गौरांग की जय ॥ ३ ॥
जितने शास्त्र और धर्म, योग भक्ति ग्यान कर्म ।
सबका ही है एक मर्म, शेष है एक मे लय ॥ ४ ॥

१७. दोहे.

कबीर हरका सिमरन छाड़ के, पाल्यो बहुत कुटुंब ।
धंधा करते रहे गया, भाई रहा न बंध ॥ १ ॥
दुनिया के पीछे पड़ा, दौड़ा दौड़ा जाय ।
दादू जिन पैदा किया, सा साहिब को छिटकाय ॥ २ ॥
(कबीर) दीन गमायाँ दुनिसों, दुनी न चाले साथ ।
पाये कुहाड़ा मारिया, गाफिल अपने हाथ ॥ ३ ॥
(दरिया) मानुष देही पाय कर, किया न नाम उच्चार ।
बोझ उतारण आईया, सो लिये चले सिरभार ॥ ४ ॥
रैन गंवाई सोयके, दिवस गंवाया खाय ।
हीरे जेसा जनम है, कौड़ा बदले जाय ॥ ५ ॥
संत संग के नांव में, मन दीजे नरनार ।
टेक बल्ली दृढ भक्ति की, सहज़ु उतरै पार ॥ ६ ॥

कबीर कोड़ी कोड़ी जोड़ के, जोड़े लाख करोड़ ।
चलते बार न कुछ मिल्यो, लई लंगोटी तोर ॥ ७ ॥

तन धन जिह ताको दियो, तास्यों नेह न कीन ।
कहु नानक नर बांवरे, अब क्यों डोलत दीन ॥ ८ ॥

कबीर कुकर राम को, मोतिया मेरो नाउँ ।
गले हमारे जेवरी, जह खिंचिये तह जाउँ ॥ ६ ॥

कबीर हरदी पीर तन हरैयै, चुन चित न रहाय ।
बलिहारी इह प्रीत कउ, जिह जात बरन कुल जाय ॥ १० ॥

कबीर कीचर आटा गिर परिया, किछु न आयो हाथ ।
पीसत पीसत चाबिया, सोई निबिया साथ ॥ ११ ॥

कबीर केशव केशव कूकिये, न सोईये असार ।
रात दिवस के कूकने, कबहुं के सुने पुकार ॥ १२ ॥

राम नाम सब को कहै, पर कहने का बीचार ।
वोही राम नाम कबीर कहे, वोही राम नाम संसार ॥ १३ ॥

जात पात की बात न पूंछे, पूछे काज भले रे ।
राम नाम के प्रेम बिन, काम नांहि कुछ तेरे ॥ १४ ॥

सामिरन ऐसा कीजिये, दूजा लखे न कोय ।
ओट न फरकत देखिये, प्रेम राखिये गोय ॥ १५ ॥

माला जपौ न कर जपौ, जिभ्या कहौं न राम ।
सुमिरन मेरा हरि कर, मैं पाया बिसराम ॥ १६ ॥

दादू सबही गुरु किये, पशुपन्छी बन राय ।
तीन लोक के जीवजंत, सबही मांहि सुदाय ॥ १७ ॥

(२) उषा कीर्त्तन.

१. प्रभाति.

जाग जाग जाग प्यारे, पंछी बन वाले।
पंछी बन वाले, लाल चिडियां बन बोले ॥ टेक ॥
प्रात भानु प्रगट भयो, रजनी को तिमिर गयो।
अति सुगंध मंद मंद पवन डोले ॥ १ ॥
तुलसीदास अति आनंद, निरखत मुखारविंद।
दीन को प्रभु देत दान, आनंद अमोले ॥ २ ॥

२. प्रभाति. (तर्ज़—राम सिमर प्रभात.)

नाम सिमर प्रभात (मेरे मन) ॥ टेक ॥
जैसे माता सुत का पाले, रक्षा करे निज हाथ ॥ १ ॥
मीठी नींद नयनों में दीनी, दिया है दुख बिसरात ॥ २ ॥
निशभर तेरी रक्षा कीनी, उठायो आति जब रात ॥ ३ ॥
प्रभु की प्रीति अति ही भारी, सुखमय उषा अब आत ॥ ४ ॥
भोर ही उठ के शीश नमायो, सृष्टि सगल गुण गात ॥ ५ ॥
भक्ति भाव से करो सभ उद्दम, करो प्रभु ही की बात ॥ ६ ॥
रतन अमूल अब जीवन दिया है हमको, धन्य है पिता सुंदर तात ॥७॥

३. प्रभाति (तर्ज—प्राणेरे दुवार खुले)

सुखप्रद ऊषा तुम्ह, कियो किसने प्रेरन ।
लगाई माथे पे बिन्दी, लाल किसने यह मन हरन ॥ टेक॥
हँस रही हो मृदु मृदु, जगतमय मधु मधु ।
सिखाई यह हसी किसन, कौन ऐसा सुदर्शन ॥ १ ॥
हे विहंगमगन सुन्दर, गाय गाय गीत मधुर ।
करो जा सुयश कीर्त्तन, कौन वह जग मोहन ॥ २ ॥
उठाये सुख कमल दल, नयन किये सब सजल ।
दखल है रूप किसका, कौन ऐसा सुशोभन ॥ ३ ॥
एक बार दिखाओ हमें, हम भी देखें आज उन्हें ।
जिनकी शक्ति संजीवनी, दान करे नव जीवन ॥ ४ ॥

४. प्रभाति.

भोर भयो पच्छी गण बोले, उठ जन प्रभु गुण गाओ रे ॥ टेक॥
लखि प्रभात प्रकृति की शोभा, बार बार हर्षाओ रे ॥ १ ॥
प्रभु की दया सिमर निज मन में, सरस भाव उपजाओ रे ॥ २ ॥
होके लीन प्रेम मे उन के, नयनन् नीर बहाओ रे ॥ ३ ॥
ब्रह्म-रूप सागर मे मन को, बारंबार डुबाओ रे ॥ ४ ॥
निर्मल शीतल लहरें ले ले, ध्यानम ताप बुझाओ रे ॥ ५ ॥

५. प्रभाति.

जाग जाग मन नींद न कर ये, अब सो जीवन होवा रे ॥ टेक॥
जो जागा तिन अमृत चाखया, जो सोया तिन खोया रे ॥ १ ॥

लाख लाख को घड़ी जात है, क्यों डान पलंग तूं सोया रे ॥ २॥
हीरे जैसा जन्म अनोलक, कौड़ी बदले खोया रे ॥ ३ ॥
कहे वनीराम संतन संग में, मन मैला क्यों न धोया रे ॥ ४॥

६. प्रभाति.

मायेर दुवार खुले, मधुर संगीत तुले ।
आय रे आय बोले, के डाकिछे आमारे ॥ टेक॥
कि जानि कि आछे स्वरे, हृदय आकुल करे ।
प्राण पाखी जाय उड़े, अनंत गगनेपरे ॥ १॥
सुनेछि संगीत कते, मधुर नंदन एते ।
एते स्नेह प्रेम गले, केहते डाकेना मोरे ॥ २॥
मायेरे अधिक करे, के डाकिछ बोले मोरे ।
मा किगो डाके तुमि, दया करे आमार ॥ ३ ॥

७. प्रभाति.

उठो रे प्यारो करो तयारी, नाम जपण का है यह बारी ॥ टेक॥
सब से मिठा है नाम हरि का, श्वास श्वास सिमरो नर नारी ॥ १॥
लाल नयन देखो जग-मानी, वर्षा रही है अमृत वारी ॥ २ ॥
भर भर प्याला पीओ नर नारी, प्राण आनंदित हो बलिहारी ॥ ३॥

८. माड़. (तर्ज—करो हरि का.)

उठो जपो अपने प्रभु को, उसीने रात संभाला है ।
आनंदसे सुलाय के, नयन साथ मिटाया है ॥ टेक ॥

धन्य धन्य दयाघन जो, ऐसा यह कृपाला है।
ध्याय ब्रह्म पीओ रस, योगानन्द में डुबाया है ॥ १ ॥

९. भयरों—ठुमरी.

जय भवकारण जगत जीवन, जय जगदीश जगत तारण हे ॥टेक॥
अरुण उदित भुवन भासित, तुमरे अतुल प्रेम हे ॥ १ ॥
विहगमगन मोहिये भुवन, कानने तव यश गाय हे ॥ २ ॥
सबके ईश्वर, तुमि परात्पर, तव भाव के बुझेंगे हे ॥ ३ ॥
हे जगतपति, तव पदे प्रणति, तुम दीन हीन के जन हे ॥ ४ ॥

१०. भैरवी—ठुमरी.

जागो जागो प्यारा, रात गई बीत, दयामय नाम, करो हे गान ॥टेक॥
आलस्य त्यजिये, हृदय भरिये, दयामय नाम, बोलो अविराम ॥ १ ॥
भजो हे दयामय, पूजो हे दयामय, दयामय रूप, सदा करो ध्यान ॥२॥
भूनले गगने, अरुण किरणे, देखो हे दयामय, विराजमान ॥ ३ ॥
तरु लता निरखे, पशु पक्षी मानवे, गाते हे सकल दयामय नाम ॥ ४ ॥

११. भैरव—ठुमरी.

रात गई प्रभात भई अब, उठो उठ होओ चपन रे ।
सरल चित्त और मधुर भाव से गाओ सबही हरिगुण रे ॥ टेक ॥
लोहित वर्ण अरुण की शोभा, देखो श्यामल उपवन रे ।
विहगम राव करें मधुर रव, कर पर शयन विसर्जन रे ॥ १ ॥
जग-शोभा दाता विश्व-विधाता, जो प्रभु नित्य निरंजन रे ।
भक्ति भाव से करो तिन्हें सब, बारंबार अभिवंदन रे ॥ २ ॥

१२. भैरव—एकताल.

प्रभात आरति, करत प्रकृति, निभृत निकुंज कानने ।
हां एक एक उठे, सब ही जागे, हरि हरि बोले वदने ॥ टेक ॥
थरों थर कई कुसुम डाली, वन-फूले शोभि-वन माली ।
गुन गुन गुन गावत अलि, झंकारे ओंकार समाने ॥ १ ॥
तरु-लता करे प्रात-स्नान, शिशिर-सिक्त देहायमान ।
नाचे कर सिर करे प्रणाम, जय जय जग-वंदने ॥ २ ॥
भाव से विभोर होय समीरण, हिल के डुल के करत भ्रमण ।
लता पत्ता फूलों को दे आलगन, जय जय मन-मोहने ! ॥ ३ ॥
देव-कन्या उषा देख यह घटा, धीरे धीरे उठावे मुख घुंघटा ।
पूर्व गगने अरुण छटा, जय जय हृदि-शोभने ॥ ४ ॥
सहसा विहग निद्रा होय गुम, देखे चारोंदिक लगी जो धुम ।
अब कैसा रहा जाय निझुम, गावे ललित पंचमे ॥ ५ ॥
ले उल्लाह से सुरु की वत्ति, भाई भगी करे मंगल आरति ।
जय जय जय जगत-पति, प्रणमि तुम्हारे चरणे ॥ ६ ॥

---

१३. टोडी. (तर्ज—प्रीति प्रभु से.)

गाओ रे प्यारे मेरे एकतारे, मिल के संग प्यारे एकतारे ॥ टेक ॥
अमृत मधुर हरिरस गाने, मानव को है जगाना रे ।
आनन्दमय के चिदानंद में, नये नये भावे गलाना रे ॥ १ ॥
मधुर ताने हरि रस गाने, शुष्क हृदय है भिजाना रे ।
सब ही निराशा छुड़ा के सब को, रतन रज्ज है देना रे ॥ २ ॥

प्रेम की धूनी लगा के सब मे, प्रेमी प्रभु का बनाना रे।
पड़ा रह कर हरि चरणन में, आप को भूल जाना रे ॥ ३ ॥

---

१४. प्रभाति. (तर्ज—करो हरि का.)

तूंही तूंही गावना महाराज (तूंही)।
रैन दिवस प्रभात, तूंही तूंही गावना महाराज ॥ टेक ॥
सन्त जना के संग, पाप गंवावना महाराज ॥ १ ॥
तूं दाता दातार, तेरा दिया खावना महाराज ॥ २ ॥
गा नानक सद बलहार, बस बल जावना महाराज ॥ ३ ॥

---

१५. कालंगड़ा. (तर्ज—अब हरि की.)

मन जाग के हरि गुण गाओ रे, गाय गाय सभी को जगाओ रे ॥ टेक ॥
ओंड़क नाम कली, भक्तिभाव माला भली, नरनारी सकल पहराओ रे ॥१॥
एकचित एकतान, गाओ हरिगुण गान, नाम गा के भुवन भुलाओ रे ॥२॥
अमृतहै वेला अब, नव भान भरी सब, घर घर अमृत लुटाओ रे ॥३॥
नर नारी जने जने, बाधो हरि नाम गुण, प्रेम सागर मे डुबाओ रे ॥४॥

---

१६. प्रभाति.

अब भई भोर भजो हरिनाम, करो प्रभु को प्रणाम ॥ टेक ॥
हरि चरणामृत पुण्य-गंगा में, करो मन अब इशनान।
धरो ध्यान जो चिद्घन मूरत, योगीजन पावे आराम ॥ १ ॥
गाउं सतजन चरित सुधारस, पियो भाई अब अविराम।
पान भोजन ज्यों सहज साधन तैसा ही धरम-विधान ॥ २ ॥
कहे प्रेमदास प्रेमसे निशिदिन, गाओ प्यारे अब हरिनाम।
हरि भज जन तेज बुद्धि बल, हरिपद ही स्वर्गधाम ॥ ३ ॥

---

(३) उपदेश.

१. धनाश्री. (तर्ज.—जननी जननी.)

संगत कालो सार, सज्जन संगत कालो सार ॥ टेक ॥
उत्तम कुल की संगत कीजे, कंचन काच विचार ॥ १ ॥
पथ्थर नाका पकडत प्रेमे, कैसे उतरै पार ॥ २ ॥
पय पानी दोऊ संग मिलावे, हंस करत पय न्यार ॥ ३ ॥
गुरुदेव तज कन्क माला, धर मुक्ता मणी हार ॥ ४ ॥

२. गजल—त्रिताल.

ईश्वर को जान बन्दे, मालिक तेरा वही है।
करले तु याद दिलसे, हरजा में वो सही है ॥ टेक ॥
भूमी अगन पवन में, सागर पहाड बन में।
उसकी सभी भुवन में, छाया समारही है ॥ १ ॥
उसने तुझे बनाया, जग खेल दे दिखाया।
तुं क्यों फिरे भुलाया, क्या चिता रहा है ॥ २ ॥
विषयों को छोड भाया, सब झुठ है तमाशा।
दिन चार का दिलासा, माया फसा रही है ॥ ३ ॥
दुनिया से दिल हटाले, प्रभु ध्यान में लगाले।
ब्रह्मानंद मोक्ष पाले, जनका पता नहीं है ॥ ४ ॥

३. काफी. (तर्ज़—मुझे इस प्रेमी उत्सव.)

इस आत्मा में परमात्मा को, जो न पाया तो क्या पाया ।
रखा इस को दूजा जान, जो आया तो क्या आया ॥ टेक ॥
कर के दृष्टि बाह्य बंद, खोलो नयन आत्मा के ।
आत्मा को प्रभु साक्षात, नहीं भाया तो क्या भाया ॥ १ ॥
बंसी मधुर स्वर से जो, है बज रही सभी अन्दर ।
आत्मा को उसी धुन में, न लगाया तो क्यों आया ॥ २ ॥

४. कसूरी—त्रिताल. (तर्ज़—सुकृत करले.)

राम रहीम न जुदा करो, दिल को सच्चा राखो जी ।
हाजी हाजी करते रहो, दुनियादारी देखो जी ॥ टेक ॥
जब जैसा तब तैसा होगा, सदा मगन में रहना जी ।
मिट्टी से यह बदन बनी है, याद हरदम रखना जी ॥ १ ॥
दुश्मन तेरा साथ फिरत है, देखो भाई सब सिखा जी ।
दुश्मन के बचाने वाले, बिन नहीं एको जी ॥ २ ॥

५. सारंग—एकताल.

जोकोई इसबिध मनको लगावे मनको लगावे प्रभुपावे ॥ टेक ॥
जैसे पनहरिया दो दो गगरिया, सिर से डुलन नहीं पावे ।
बाट चलत बातन सखीयन से, सुरत घड़ा पर लावे ॥ १ ॥
जैसे नटवा चढत बांस पर, ढुलिया ढोल बजावे ।
आपस में देही को साधे, सुरत बरत पर लावे ॥ २ ॥
जैसे कपिला चरत बगर में, बगर बगर फिर आवे ।
बगर बगर फिर आवे कपिला, सुरत बछा पर लावे ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, या विध मन ठेहरावे ।
या विध मन ठेहरावे, परम पद कैसे न वो पावे ॥ ४ ॥

६. भैरवी.

भक्ति मुले हरि मिले, भक्ति नॅहिले हरि मिले ना ॥ टेक ॥
भक्ति जार आछे हरि तार काछे, वैकुंठ छाड़िये चलिये आसे ।
भक्ति हीन जन कुसुम चंदन, जनेन दाले हरि मिले ना ॥ १ ॥

७. सारंग विंद्रावनी. (तर्ज—अब तुम शरण.)

हरि रस ऐसो हेरे भाई, जाके पिये अमर होजाई ॥ टेक ॥
ध्रुवपिया प्रल्हाद हे पिया, पिया है मीरा बाई ।
बल्ख बुखारे के मीया पिया, छोड़दी बादशाही ॥ १ ॥
हरि रस महींगा मोलका रे, पीवे विर्ला कोई ।
हरि रस महिंगा वह पीये, जाके धड़ पर सीस न होई ॥ २ ॥
आगे आगे दून जले रे, पाछे हरया होई ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हरि भज निर्मल होई ॥ ३ ॥

८. भैरवी—त्रिताल. (तर्ज—संगत सनन की.)

तुं तो उड़ता पंछियार, तेरा कोन करे इतबार ॥ टेक ॥
ना खिड़की का पिंजरा तेरा, खुले पड़े दश द्वार ।
आना आना मुश्किल तेरा, जाना सहज शुमार ॥ १ ॥
तेरे कारण महल बनाये, संचे सुन धन दार ।
सबको छोड़जाय तुं पल में, निर्मोही निरधार ॥ २ ॥
सुंदर भोजन नित्य खिलावुं, पहरावुं सिंगार ।
मलमल अतर फुलल लगावुं, नहि माने उपगार ॥ ३ ॥

कोट बनाउं किले बनाउं, बाधुं बंध हजार ।
ब्रह्मानंद रहे तुं नाहि निफल जाय बलधार ॥ ४ ॥

९. वरहंस—धमाल. (तर्ज—चलो मन हरि.)

राम भजो नर नारी (रे भाई) ॥ टेक ॥
जो है सब का माया आधारा, सफल जीवन सुखकारी ।
प्रेमका जिसके अन्त न आवे, चकित बुद्धि हमारी ॥ १ ॥
हरिभजन बिन कठन है तरना, यह भवसागर भारी ।
एक प्रभु का सिमरण करके, तर गई गनका नारी ॥ २ ॥
तुम भी उससे प्रीति करके, लेओ जन्म सुधारी ।
घट घट में जो व्यापक सबके, हो दास पर बलिहारी ॥ ३ ॥

१०. मालकंस.

बनजा हरिदासा हरिदासा, मन छोड पराई आसा ॥ टेक ॥
सुधा सिंधु के समीप बस के, मूरख रहत क्यों प्यासा ।
दीन होत क्यु दुख पावत है, बसत पारस के पासा ॥ १ ॥
कामधेनु कल्पतरु चिंतामणी, ईश्वर अखिल निवासा ।
वाको छोड आरन को धावे, सो तो व्यर्थ प्रयासा ॥ २ ॥
शरणागत वत्सल विश्वम्भर, क्यो मन रहत उदासा ।
दयाराम सतगुरु बताया, है मनसुबा खासा ॥ ३ ॥

११. गजल. (तर्ज—हमें उद्धार करने.)

तुमें य क्या पड़ा लागो, या श्री जाने या मैं जानु ॥ टेक ॥

वो मुझको याद करता है, मैं उसके दिल में रहता हूं।
इलाही शान अकबर की, या वो जाने या मैं जानुं ॥ १ ॥
वो मेरी आंख का तारा, मैं उसके दर्द का मारा।
फिरूं जंगल में बावरा, या वो जाने या मैं जानुं ॥ २ ॥
वो दिल मांगे तो दे दिल हूं, सिर मांगे तो दे सिर हूं।
जबां पलटूं तो काफिर हूं, या वो जाने या मैं जानुं ॥ ३ ॥

१२. जोग. (तर्ज—मन मोहनने.)

राम नाम आधार (मेरे), राम नाम आधार (अब) ॥ टेक ॥
राम नाम जपो निशदिन ही, यही जगत में सार ॥ १ ॥
राम को नाम सदा सुखदाई, बरतावे मंगल चार ॥ २ ॥
सुख कोई और बात में नाहीं, राम हि सुख भंडार ॥ ३ ॥
तुलसी दास प्रभु बिनती करत है, चरण कमल चित्त डार ॥ ४ ॥

१३. आलेया—एकताल.

प्रभु तोमा तरे, व्याकुल अन्तरे, फिरे नाना स्थाने नरनारी गण।
पराणेर टाने, धाय तोमा पाने, नाहि जाने तुमि किरूप केमन ॥टेक॥
केहँ नदी सरस्वती सिंधुनीरे, प्रसन्न सलिला जान्हविर तीरे।
केहँ गिरिशिरे मसजिदे मन्दिरे, प्रकृतिर द्वारे करे अन्वेषन ॥ १ ॥
केहँ ज्योतिर्मय तपनदर्पणे, निरखिते चाय तोमारे नयने।
केहँ तीर्थवासे छुटे उर्द्धश्वासे, केहँ करे प्रतिमा गठन ॥ २ ॥
केहँ साधु भक्तजन पाय धरि, बले "तुमि मम इष्टदेव हरि"।
पागलेर मन, भ्रमे ईतस्थत नाहि पाय तबु केहँ दरशन ॥ ३ ॥

सहजे ना यदि दिवे तुमि देखा, विश्वमाझे लुकाईये रबे एका एका ।
केन तबे प्राण कांदाईले सखा, भुलाईले मानवेर मन ॥ ४ ॥
एई जे रयछे ! हृदयकुठरे, भितरे बाहिर चारिधारे घिरे ।
उर्द्ध अध शुन्य तोमातेई पुर्ण, तुमी आमि दुजनें एकजन ॥ ५ ॥

१४. खेमटा. (तर्ज—नवविधान का उत्सव)

पुरुषार्थ को करो सदानर, कर्म कर्म तुं क्या गावे ।
ऐसा वस्तु नहि दुनिया में पुरुषार्थ सें नहीं पावे ॥ टेक ॥
पुरुषार्थवाले पुरुषोंने, तोड़ तोड फल खाया है ।
मूढ आलसीं बैठे देखें, बिरथा मन ललचाया है ॥ १ ॥
पुरुषार्थ करनेसें ध्रुवनें, राज्य पिताका पाया है ।
गंगा नदी भगीरथ राजा, पुरुषार्थ से लाया है ॥ २ ॥
पुरुषार्थ करनेसें भी जो, काम नहीं बन आता है ।
उसको फिर फिर कर शोचकर, अंतवही बनजाता है ॥ ३ ॥
बालपणे में विद्या सीखो, जीवन करो कमाइ है ।
मातपिता नारीसुत बांधव, सबके बनो सहाइ है ॥ ४ ॥

१५. पीलू ताल पोस्त. (तर्ज—हमें उद्धार करने.)

प्रभु को याद कर प्यारी, वही तेरा सहारा है ।
वही माता वही पिता, वही मित्र प्यारा है ॥ टेक ॥
सबही के बस रहा अन्दर, सब से वह न्यारा है ।
जगत में होरहा जो कुछ, उसी का चमत्कारा है ॥ १ ॥

वही दाता सब जगत का, खुला कैसा भंडारा है ।
उसी के गुणों को गावोरी, वही प्रीतम प्यारा है ॥ २ ॥
उसी की शरण आई हूं, भरोसा मुझको भारी है ।
उसी को याद कर प्यारी, वही तेरा सहारा है ॥ ३ ॥

१६. आसा (तर्ज—असानु साहेब लगदा.)

पिलाओ हरि वही प्रेम पियाला ॥ टेक ॥
जिसको ईसने सूली चढ़कर, दीना असल हवाला ॥ १ ॥
जिसको पीकर मस्त हुवाया, चेतन नदियावाला ॥ २ ॥
पीकर जिसको मीराबाई, पाया देश निकाला ॥ ३ ॥
देकर वही बिहिश्ती मदिरा, करो मोहे मतवाला ॥ ४ ॥

१७ झिंझिट

राम सिमर राम सिमर, यही तेरो काज है ॥ टेक ॥
माया को संग त्याग, प्रभु जी की शरण लाग ।
जगत् सुख मान मिथ्या, झूटेही सब साज हैं ॥ १ ॥
सुपने ज्यों धन पछान, काहे पर करत मान ।
बालु की भीत जैसे, बसुधा को राज है ॥ २ ॥
नानक जन कहत बात, बिनश जाय तेरो गात ।
छिन छिन कर गयो काल तेसे जात आज है ॥ ३ ॥

१८ सोरठ. (तर्ज—शरण में आ)

हम बिगरे बिगरया मत कोग, दुनिया चतुर हमीं भए बारा ।

हे प्रभु तुम्हारे द्वार, भिक्षा यही हमारी ।
देव जीवन या शिशु यह, सेवा करे तुम्हारी ॥ २ ॥

४. पद,

सारे आपण थोर आणि लहान, स्मरूं घडिभर नारायण ॥ टेक ॥
जेणे केली सृष्टी निर्माण, तृण काष्ट तरु पाषाण ।
चन्द्र सूर्य तारका गगन, करूं त्याचे भजन ॥ स्मरूं ॥ १ ॥
जो करी पापाचे मोचन, शरणागता अभय देऊन ।
अनुतापि करी कृपादान, जाऊं त्या शरण ॥ स्मरूं ॥ २ ॥
संकटी साह्य जो करितो, भाव धरिता सनिध येतो ।
भक्तिच्या शाकेस "फो" देतो, गाऊं त्याचे गुण ॥ स्मरूं ॥ ३ ॥
किति आठवुं त्याच्या उपकारा, देई कन्या सुत धन दारा ।
रक्षति सर्व परिवारा, देऊं त्याला मान ॥ स्मरूं ॥ ४ ॥
जे का पडे त्याच्या इच्छेनं, अनुसरूं त्या सन्तोषाने ।
त्याची इच्छा तेंच कल्याण, समजुं ही खूण ॥ स्मरूं ॥ ५ ॥
ज्याचे गुणगान पारावार, किति वर्णु आपण पामर ।
सदा मानू त्याचे आभार, होऊनि कृतज्ञ ॥ स्मरूं ॥ ६ ॥
जो पालक ह्या जड देहाचा, आदि जनक सर्व वस्तूंचा ।
मायबाप आपुल्या सर्वांचा, करूं त्यास नमन ॥ स्मरूं ॥ ७ ॥

(२) मंगलाचार.

१. भैरवी—ठुमरी.

मंगल हरी को नाम उचार ।
मंगल वदन भजन कर मंगल, मंगल प्रीति हृदय में धार ॥ टेक ॥

नवां अध्याय.

अनुष्ठान के संगीत.

(१) नामकरण.

१. लखनऊ ठुमरी

प्रेम स्नेही पिता धन्य तुम हो, जग-कारण जग वंदन तुम हो । टेक॥
धन्य मंगल हाथ तुम्हारा, निश दिन मंगल करत हमारा ।
जो कुछ विघ्न पड़ें सब टारो, निश्चय विघ्न विनाशन तुम हो ॥१॥
तुम ने माता पिता के हृदय में, कैसा स्नेह संचार कियो है ।
धन्य मान यो करें शिशु पालन, जीवन रक्षक एक ही तुम हो ॥२॥

२. जिल्हा.

हम सन्मुख आज तुम को, हरि कृपा-घन ।
करते हैं धन्यवाद तेरा, पा के शिशु जन ॥ टेक ॥
तव सेवक जान निज को, करें इस का पालन ।
तुम्हारी सेवा में कटे, इस का भी जीवन ॥ १ ॥
करो आशीर्वाद प्रभु जी, हे आनंद घन ।
दीर्घ जीवी शिशु होए, तेरा करे पूजन ॥ २ ॥

३. झिंझिट.

मंगल आनंद ध्वनी, करो नर नारी ॥ टेक ॥
धन्य धन्य धन्य प्रभु, हृदय विहारी ।
रक्षित भयो शिशु, पाय तव प्रसाद वारि ॥ १ ॥

हे प्रभु तुम्हारे द्वार, भिक्षा यही हमारी ।
देव जीवन का शिशु यह, सेवा करे तुम्हारी ॥ २ ॥

४. पद.

सारे आपण थोर आणि लहान, स्मरूं घडिभर नारायण ॥ टेक ॥
जेणे केली सृष्टी निर्माण, तृण काष्ट तरु पाषाण ।
चन्द्र सूर्य तारका गगन, करूं त्याचे भजन ॥ स्मरूं ॥ १ ॥
जो करी पापाचे मोचन, शरणांगता अभय देऊन ।
अनुतापि करी कृपादान, जाऊं त्या शरणा ॥ स्मरूं ॥ २ ॥
संकटी साह्य जो करितो, भाव धरिता सन्निध येतो ।
भक्तिच्या हाकेस "ओ" देतो, गाऊं त्याचे गुण ॥ स्मरूं ॥ ३ ॥
किति आठवुं त्याच्या उपकारा, देई कन्या सुत धन दारा ।
सांगती सर्व परिवारा, देऊं त्याला मान ॥ स्मरूं ॥ ४ ॥
जे का घडे त्याच्या इच्छेने, अनुसरूं त्या सन्तोषाने ।
त्याची इच्छा तेंच कल्याण, समजुं ही खूण ॥ स्मरूं ॥ ५ ॥
उदाचे ज्ञान पारावार, किति वर्णु आपण पामर ।
सदा मानूं त्याचे आभार, होऊनि कृतज्ञ ॥स्मरूं ॥ ६ ॥
जो चालक ह्या जड देहाचा, आदि जनक सर्व वस्तूंचा ।
मायबाप आपुल्या सर्वांचा, करूं त्यास नमन ॥ स्मरूं ॥ ७ ॥

(२) मंगलाचार.

१. भैरवी—ठुमरी.

मंगल हरी को नाम उचार ।
मंगल वदन भजन कर मंगल, मंगल प्रीति हृदय में धार ॥ टेक ॥

भावत मंगल ध्यावत मंगल, गावत मंगल सरस उदार ।
मंगल श्रवण कथारस मंगल, मंगल नाम जगत आधार ॥ १ ॥
भीतर मंगल बाहर मंगल, मंगल जीवन जगत मझार ।
मंगल गान बान सब मंगल, मंगल यश गावत नर नार ॥ २ ॥

२. पिलु.

आओ हे गृह देवता, इस भवन ।
कर दो पवित्र, भरो नव जीवन ॥ टेक ॥
विराजो हे जननी, दिखावो स्वदर्शन ।
गृहवासी तुझ मे, लावे अपना मन ॥ १ ॥
दया क्षमा ही होवें, उन के लक्षण ।
भक्ति से बितावें, यह सारा ही जीवन ॥ २ ॥
दुःख मे पावें धैर्य, तेरे ही चरणन ।
प्रति दिन करें, तेरी सदा पूजन ॥ ३ ॥

३. रेखता. दादरा. (तर्ज—ईश्वर तेरे दरबार.)

गाओ भाई बोलो भाई, जय ब्रह्म जय ।
जिनकी कृपाने दिखाया, आज यह समय ॥ टेक ॥
जय शिव सिद्धि दाता, जय प्रभू परित्राता ।
जय पुण्य शांति दाता, मंगल आलय ॥ १ ॥
प्रभु जाके है सहाई, नहिं है वह निरुपाय ।
ब्रह्म कृपाहि केवलम्, फिर कहो क्या भय ॥ २ ॥

४. झिंझिट.

गाय के हरि नाम गान, करो वास भाई ॥ टेक ॥
हृदय थाल पात्र माहि प्रेम भक्ति पुष्प पाई ।
चरण हरि के अबहिं, सभी मिल चढ़ाई ॥ १ ॥
धन्य गृहस्थी सुखी सोई, हरि स्वामी जाने आई ।
हृदय धन्यवाद से ही, प्रभु गीत गाई ॥ २ ॥
ब्रह्म ज्ञान ब्रह्म ध्यान, ब्रह्मानंद रस पान ।
ब्रह्म पूर्ण ज्योतिमान, इस घर में सोई ॥ ३ ॥

---

५. भैरव.

मंगल है नाम तेरा, मंगल है धाम तेरा ।
मंगल है काम तेरा, त्रिभुवन नाथ तू ॥ टेक ॥
मंगल है तेरी सेवा, मंगल है तेरी पूजा ।
मंगल है तेरी शोभा, मंगल है नाथ तू ॥ १ ॥
मंगल है तेरे सेवक, मंगल है तेरे पूजक ।
मंगल है तेरे बालक, रख दे के हाथ तू ॥ २ ॥
ऐसो प्रभु तू महान, सकल विराजमान ।
जानता सभी हमरी, अंतर की बात तू ॥ ३ ॥

---

६. बेहाग—झंपताल

प्रभु मंगल शांति सुधामय है, जय कल्याणमय करुणामय है ॥टेक॥
जय विघ्न विनाशन पावन है, जय पूर्ण ब्रह्म कृपायन है ॥ १ ॥
जय नित्य सत्य गुण सागर है, जय मंगलकर्ता सभीका है ॥ २ ॥

---

७. कीर्तन—खेमटा.

मस्त करो हे आनंदमयी, एकबार मस्त हो जायें।
प्रेमसुधा तुमरा पान करके, सदानंद में नाचें गायें ॥ टेक ॥
जो सुधापान करतें उनकी, माया बुद्धि चली जाये।
महाभाव हो जिनका उदय, वोही सुधापान करना पाये ॥ १ ॥
भक्तजन को जुगों जुग में, मस्त किया तुम सुधापान में।
वोही करें हम सुधापान, मस्त होकर मस्त करायें ॥ २ ॥
तेरे यह नवविधान में, नये ही प्रेम के सुधा पान में।
मत वाला यह जगत देखके, हम तो परलोक जायें ॥ ३ ॥

---

८. धनाश्री—चौताल.

मंगल गुण गान करें,
मंगल गुण दीन शरण, भव भय हरण, भाव बल से कर जोड़े।
प्रेम से सुखद प्रभु दीन उद्धार ॥ टेक ॥
करें सज्जन की संगत, पाप ताप नाश।
सकल वासना दूर करें ॥ मंगल ॥ १ ॥

---

९. बाहार—एकताल.

प्रकाशे सब प्रेम राज्य तेरे प्रेमपरिवार।
दीखती है स्वर्ग की शोभा, मिट गया पाप अंधार ॥ टेक ॥
देवमंदिर देखूं घर घर में, पूजा की वेदी हर जन के अंतर।
है भावना कामना तुम्हारी ही पूजा, है सब नाम करारदार ॥ १ ॥

(श्रीते) तव इच्छा पूर्ण हुई जीवन में, हुआ साधन घरके तपोवन में।
हद बारंबार, रखु श्री चर्ण में, करूं सदा नमस्कार ॥ २ ॥

१०. सारंग विंद्राबनी. (तर्ज—आओ जगवासी.)

अब हरि यश गाओ रे भाई ॥ टेक ॥
हृदय थाल भरि पुष्प भाई पाई, जीवन सफल कराई ।
नव नव राग रचित मणि माला, प्रभु चरणन पे चढ़ाई ॥१॥
महिमा है जिसकी परावर, यश गावे बनराई ।
कोटि कोटि यदि मुख हम पावें, तौभि बरनी नहिं जाई ॥२॥
जगपाता जगमाता स्वामी, घाता सबही का वोई ।
जगत गुरु हरि ज्ञान सिखावे, परम पिता सुखदाई ॥ ३ ॥

११. सारंग विंद्राबनी. (तर्ज—आओ जगवासी.)

आओ हरि गुण गाएं साथी, आओ हरि गुण गाएं ॥ टेक ॥
मन को पवित्र करें ध्यान से, कान पवित्र प्रेम अमृत पान से ।
जिह्वा पवित्र करें गुण गान से, गाएं और हर्षाएं ॥ १ ॥
हरि गुण गान अमर रस धारा, भजन सुधारस अतिहि प्यारा ।
लिये स्वाद होय निस्तारा, पिये अमर बने जाए ॥ २ ॥
दीन बंधु दीन हितकारी, दीनानाथ दीन दुखहारी ।
सच्चिदानंद रूप जिनकारी, चरणन में चित लाएं ॥ ३ ॥

१२ कीर्त्तन सिंधु—एकताल.

मचाओ धूम, नवविधान की जय की रे ।
जिस गुण से हुआ, सब धर्म सम्मिलन रे ॥ टेक ॥

सत्य सत्य का भेदाभेद, मिट जाये येही बार रे ।
प्रेमानल से गलके सभी, हुए एकाकार रे ॥ १ ॥
योग भक्ति कर्म ज्ञान ने, त्यागा विवाद रे ।
वेद बाईबेल कुराण पुराण, गायें एकहि सुर रे ॥ २ ॥
ईशा महम्मद जनक नानक, आलिंगन करत रे ।
शाक्य मुनि श्री गौरंग, गले मिलें नाचें रे ॥ ३ ॥
सत्य का विजयडंका, बजा है जगतमें रे ।
नवविधान झंडा उड़ा, भारत आकाश में रे ॥ ४ ॥
नवविधानसूत्र से बना, भक्त रत्नहार रे ।
पायें गले में सबहि अब तो, बोलें जय जननी रे ॥ ५ ॥
भुत भविष्यत काल, हुआ वर्तमान रे ।
नवविधान में मिल गये, सब प्राचीन विधान रे ॥ ६ ॥

१३. झिंझिट.—दादरा.

हे दयाल दीनानाथ, सर्व सुखदाई ।
परम करुणा तेरी से, मिले हैं सभी भाई ॥ टेक ॥
कृपा तेरी से तुम्हारी, पुत्र कन्या आई ।
कर बद्ध शुभ विवाह में इन को, आप दो बधाई ॥ १ ॥
गृहस्थधर्म दम्पति में, होवो तुम सहाई ।
उच्च प्रेम में इन्हों के, हृदय दो जुड़ाई ॥ २ ॥
दोनों हृदयों में इन्हों के, प्रीति दो समाई ।
जिस से धर्म पथ में जीवन, नित्य बढता जाई ॥ ३ ॥
नये दम्पति तुम्हारे परम, स्वर्गीय सुख को पाईं ।
आशिर्वाद पाय तेरी, ओर करें धाई ॥ ४ ॥

१४. कीर्त्तन पयरा (तर्ज—बाजन मधुर)

अखड सच्चिदानंद विश्वजनवन्दन ।
नित्य विभु पूर्ण ब्रह्म एक मेवाद्वितीय ॥ टेक ॥
अखिल ब्रह्माडपति, विपद भय भजन ।
सर्वसिद्धिदाता कल्पतरु परमात्मन ॥ १ ॥
तुमहीं गाड्, खुदा, हरि, जिहोवा जनार्दन ।
पिता माता सखा बन्धु तुमहीं अनन्य शरण ॥ २ ॥
(हमरा और कोई नाहि) (तुमरे बिना) ।
(तुमहीं आदि तुमहीं अन्त, तुमहीं सिद्धि साधन) ॥ ३ ॥

१५. दोहे.

वासुदेव सर्वत्र में, सर्वत्रमय उन न कतहू ठाय ।
अतर बाहिर संग है, नानक कहे दुराय ॥ १ ॥
भक्ति दान मोहे दीजिये, हरि देवन के देव ।
और नहीं कुछ मागती, निशदिन तेरी सेव ॥ २ ॥
बार बार बार मागहू, हर्ष देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अन्न पावना, भक्ति सदा सत्सग ॥ ३ ॥
दया करो मेरे साईंया, देवो प्रेम की दात ।
दुख यहा व्यप्या रहे, सतोष रहे दिन रात ॥ ४ ॥
तुलसी जग में आयके, कर लीजे दो काज ।
देवो को टुकड़ा भला, लेवे को हरिनाम ॥ ५ ॥
साई जन साचे सो सती सोई साधक सुजान ।
सोई ज्ञानी सोई पडिता, जे राते भगवान ॥ ६ ॥

(३) दीक्षा.

१. जोग.

आज आनंद महा मंगलकारी, लियो है बाला हमरा उबारी ॥ टेक ॥
नित नित बढे तुम्हारे धर्म में, बने नमूना जग कार्यन में ॥ १ ॥
इस को देख होवें बलिहारी, जग के सब ही नर अर नारी ॥ २ ॥
जिस कृपा से इस को उठाया, उसी की दिखी प्रभु सब पर छाया ॥ ३ ॥

२. इमन—दादरा. (तर्ज—ईश्वर तेरे दरबार.)

सच्चे तुम्हारे शिष्य अब बनाओ हे गुरु ।
दो हाथ बांध सन्मुख बिठाओ हे गुरु ॥ टेक ॥
सब लेख दिल की पट्टी से मिटाओ हे गुरु ।
सिर्फ पट्टी अपने नाम की लिखाओ हे गुरु ॥ १ ॥
इस आत्म-आरसी में हे परमात्म गुरु ।
तुम्हारी मूर्ति मोहिनि करें दर्शन हे गुरु ॥ २ ॥
कर ले प्रेम पुष्प करें चरन पूजन हे गुरु ।
सेवा सिखाय करो सफल जीवन हे गुरु ॥ ३ ॥

३. कीर्त्तन. एकताल.(तर्ज—नित्य नए.)

यह महासिंधु में जननी कैसे शोभे, क्या यह रूप जाऊं वारी ॥टेक॥
प्रेम का प्रतिमा आनंदमयी मा, दिया दिखा दया करी ।
(अबोध—संतान को) दिया दिखा दया करी ॥ १ ॥

विश्व की विधाता, स्नेहमयी माता, ली है गोद में जीवगणी ।
देकर अन्नजल ज्ञान धर्म बल, पालत हो बच्चे अपने ।
(निज दया करे) पालत हो बच्चे अपने ॥ २ ॥

---

४. झिंझिट—दादरा. (तर्ज—दयामय हरि दयामय.)

तू विधाता, तू विधाता, तू विधाता मेरा ।
मैं हूं बन्दा, मैं हूं बन्दा, मैं हूं बन्दा तेरा ॥ टेक ॥
एक रोटी और धोती, द्वार तेरे पाऊं ।
भक्ति और प्रेम सहित, नाम तेरा गाऊं ॥ १ ॥
बाहर अंतर देख तुझको, सत्य नित्य जाऊं ।
तव आदेश सुखी मन से, सार कर के मानूं ॥ २ ॥
सत्य शिव सुन्दर ही तेरा, परम लक्ष्य होवे ।
जग के उपकार ही में, जीवन यह जावे ॥ ३ ॥

यही रही मेरी अभिलाषा देवी मा दया करो।
करूं सदा सेवा अब तेरी श्रद्धा और भक्ति भरी ॥ ४ ॥

---

८. भिंभिट.—दादरा. (तर्ज—हरि समान दाता)

ब्रह्म कृपा हि केवलम्, सभी बोलो भाई ॥ टेक॥
ब्रह्म कृपा बिन और कोई, जीवन की गति नाहिं ।
मधुर ब्रह्म नाम गाये, हृदय शान्ति पाई ॥ १॥
ब्रह्म की सदाहि जय हो, ब्रह्म हि हो सहाई ।
ब्राह्मधर्म्म की जय धुनि, दे चारों ओर सुनाई ॥ २॥
अपार ब्रह्म कृपा से कहो, द्वारे द्वारे जाई ।
पाप ताप शोक मिटें, यही नाम गाई ॥ ३॥

९. जयजयंती—एकताल.

आई है ब्रह्मनाम की नौका, जो जाना चाहे जल्दा आओ रे आय ।
जीवनअंधकारे खड़ा है क्यों रे, व्यर्थकाज मे व्यर्थ समय जाय॥टेक।
जगत भरा है मधुर सुर से, आनंद लहरी छुटा आकाश से ।
ब्रह्मकृपा अभीबुलावे सबको. पापीतापी जल्दा आओ रे आय ॥ १॥
क्याधनीक्यानिर्धनक्याज्ञानीक्याअज्ञानजोनाहिंदेखताकछुमानिकुलमान।
वही जा सकता है भवनदीपार, व्याकुल हृदय से जो हीं जाना चाय॥२॥

१०. दोहे.

सहजु प्रभु कृपा करी, कहां कहुं मे खोल ।
रोम रोम फुल्लित भए, मुखे न आवे बोल ॥ १॥
आगा धंधा पीछे धंधा, धंधे मा ये धंधा ।
धंधे मा ये ध्यान लगावे, वो साहिब का बंधा ॥ २॥
सोई जन साधु सिधसो, सोई सतवादी सूर ।
सोई मुनिवर दादु बदे, सन्मुख रहाणि हजुर ॥ ३॥

यही रही मेरी अभिलाषा, देखो मा दया करी ।
करूं सदा सेवा अब तेरी, श्रद्धा और भक्ति भरी ॥ ४ ॥

६. रेखता—दादरा. (तर्ज—ईश्वर तेरे दरबार.)

किस देवताने आज मेरा दिल चुरा लिया ।
दुनियां की खबर ना रही तन को भुला दिया ॥ टेक ॥
रहता था पासमें सदा लेकिन छुपा हुआ ।
करके दया दयालने पड़दा उठालिया ॥ १ ॥
सूरज वो या न चांद था बिजली न थी वहां ।
यकदम वो अजब शानका जलवा दिखादिया ॥ २ ॥
फिरके जो आंख खोलकर ढूंढन लगा उसे ।
गायब था नजर से सोई फिर पास पा लिया ॥ ३ ॥
करके कसूर माफ मेरे जन्मजन्म के ।
ब्रह्मानंद अपने चरण में मुझको लगा लिया ॥ ४ ॥

७. स्तव—झंपताल. (तर्ज—ब्रह्मध्यान ब्रह्मज्ञान.)

विपदभंजन तुम्हि, नयन अंजन तुम्हि, तुम्हि हो हृदय रंजन ।
तुम्हि ज्ञान में, तुम्हि कर्म में, तुम्हि ध्यान मे तुम्हि सभी मे ।
तुम्हि मन में करते रमन ॥ टेक ॥
गाड् खुदा हरि तुम्हि, बहुनामधारी तुम्हि, एको रूप विचित्र महान ।
तुम्हिशक्ति तुम्हिमंत्र, तुम्हिशास्त्र तुम्हितंत्र, तुम्हि विधि तुमही विधान ।१।
तुम्हि मक्का काशीधाममें, तुम्हि जरूशालममें, गध्यामें तुम्हि भगवान ।
चिरधन्य तवनाम, पूर्णकाम प्राणराम, तुम्हि हमरे प्राणोंका है प्राण ।२।

८. झिंझिट.—दादरा. (तर्ज—हरि समान दाता.)

ब्रह्म कृपा हि केवलम, सभी बोलो भाई ॥ टेक ॥
ब्रह्म कृपा बिन और कोई, जीवन की गति नाहि ।
मधुर ब्रह्म नाम गाये, हृदय शान्ति पाई ॥ १ ॥
ब्रह्म की सदाहि जय हो, ब्रह्म हि हो सहाई ।
ब्राह्मधर्म्म की जय धुनि, दे चारों ओर सुनाई ॥ २ ॥
अपार ब्रह्म कृपा से कहो, द्वारे द्वारे जाई ।
पाप ताप शोक मिटें, यही नाम गाई ॥ ३ ॥

---

९. जयजयंती—एकताल.

आई है ब्रह्मनाम की नौका, जो आना चाहे जल्दी आओ रे आय ।
जीवनअंधकारे खड़ा है क्यों रे, व्यर्थकाज मे व्यर्थ समय जाय ॥टेक ।
जगत भरा है मधुर सुर से, आनंद लहरी छुटा आकाश से ।
ब्रह्मकृपा अभीबुलावे सबको, पापीतापी जल्दी आओ रे आय ॥ १ ॥
क्याधनीक्यानिर्धनक्याज्ञानीक्याअज्ञानजोनाहिंदेखताकछुजातिकुलमान।
वही जा सकता है भवनदीपार, व्याकुल हृदय मे जो ही जाना चाय ॥२॥

---

१०. दोहे.

सद्गुरु प्रभु कृपा करी, कहां कहूं मै खोल ।
रोम रोम फुल्लित भए, मुखे न आवे बोल ॥ १ ॥
आगे धंधा पीछे धंधा, धंधे मा ये धंधा ।
धंधे मा ये ध्यान लगावे, वो साहेब का बंधा ॥ २ ॥
सोई जन साधु सिधसो, सोई सतवादी सूर ।
सोई मुनिवर दादु बदे, सन्मुख रहाणि हजुर ॥ ३ ॥

---

(४) शोक शांत्वन.

१. सोरठ.

रे मन देखो यह प्रभु दयाला, प्रभु दयाला प्रभु कृपाला ॥ टेक ॥
प्रेम से भर कर आय खड़ा है, पिलावत प्रेम पियाला ॥ १ ॥
दुःख न ठहरें उस के आगे, व्यापे सुख तत्काला ॥ २ ॥
आनंदमय की यह सुनो वार्ता, "(तुं) मनगा बाल गोपाला" ॥ ३ ॥

दोहा.

मेरा मुझ में कुछ नहीं, सब ही कुछ है तेरा ।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागे है मेरा ॥ १ ॥

---

२. सोरठ. (तर्ज—तेरी शरण में.)

प्रभु दुख में जो तुं मिले, तो सुख ना चाहिये हरि ।
तेरा मुखड़ा देखने हि, जावे सब व्याधी टरी ॥ टेक ॥
तेरे होते रोग कहां है, कहां विपद क्लेशाता ।
तेराहि नाम लेने से, होवे आनंद प्रफुल्लता ॥ १ ॥
निर्धनियोंका धन तुहिं, निराधारों का आसरा ।
शोक भय रहत कहां जब, बने तेरे दासरा ॥ २ ॥
प्राण मन है तेरा दिया, तन भी तेरा है दिया ।
जो कुछ तुमहीं करत है, सबही में है हमारा भला ॥ ३ ॥
जिधर जहां तुं जैसा राखे, रहे हम उसमें संतुष्ट हो ।
सुख दुख में तुझको हि, देखें ऐसे जीवन अंत हो ॥ ४ ॥

---

३ भैरवी.

दयाघन तुम बिन को हितकारी ॥ टेक ॥
सुख दुख में दूजा बंधू कौन है शोक ताप भय हारी ॥ १ ॥
तुमरे प्रसाद से दूर हो संकट, देख करुणा तुम्हारी ॥ २ ॥
मम चित्त और दग्ध हृदय को, तुंहि देत है शीतल वारी ॥ ३ ॥
आपत काल जब सब कोइ त्यागे, तू लेवत गोद पसारी ॥ ४ ॥

४ सोरठ. (तर्ज—भज मन प्राणा)

राम ज्यों राखे त्यों रहिये ॥ टेक ॥
जो प्रभु करे भला सो मानो, दुख ते बुरा न कहिये ।
हरि अनहोनी होनी कर दे, सो सब सिरपे सहिये ॥ १ ॥
करे कृपा निज नाम जपावे, सो अंतर लै गहिये ।
मेहरदार हरि आज्ञा माने, यह सेवक को चाहिये ॥ २ ॥

५. सिंधु भैरवी—पोस्त.

याकबे ना आर ए पापराज्ये, ब्रह्म लोके जाबे च'ले ।
सुखे वास करिबे सदाय, ब्रह्मकल्पतरु मूले ॥ टेक ॥
प्रेमेर बीज करिये रोपण, भक्तिनीर उपकूले ।
हृदय-भांडार पूर्ण, करिबे पुण्य-संबले ॥ १ ॥
अमर हबे अमृत, पान करिबे कुतूहले ।
भक्त-वृंदेर संगे सदा, भासिबे प्रेम हिल्लोले ॥ २ ॥
असार नीच वासना, सकलई जाईबे भुले ।
ए ये अनुरागी प्रेम बेरागी, बिलाबे प्रेम हृदय खुले ॥ ३ ॥

६. रेखता—दादरा. (तर्ज़—ईश्वर तेरी दयालुता.)

मां सफ़र मेरा अब ख़तम हुआ, मैं अपने घर को आता हूं ।
जहां रोग नहीं और शोक नहीं, जहां तव दर्शन मे रोक नहीं ॥टेक॥
तुम प्रेम पलक से बुलाती हो, मैं आज्ञा पाकर आता हूं ।
कुछ सम्बल मेरे साथ नहीं, तेरे चरनों शीस निवाता हूं ॥ १ ॥
मुख बन्द हुआ कुछ कह न सकूं, पर हृदय के स्वर से नाम जपूं ।
तेरा नाम बड़ा मुझे प्यारा है, अब तुझ बिन कौन सहारा है ॥ २ ॥
तेरी इच्छा पूरनहो जिस से, मैं आखर तक निष्काम रहूं ।
मां बहुत थका हूं दुनिया से, तेरी गोद में अब विश्राम करूं ॥ ३ ॥
तेरी गोद में है ईसा मूसा, नानक चैतन और रविदासा ।
तेरी गोद बहुत विस्तीर्ण है, एक कौने की है मुझे आशा ॥ ४ ॥
मैं भूलूं अपने को तुझ में, और डूबूं अमृत सागर में ।
सब मोह माया से विहीन करो, और निज ज्योति में लीन करो ॥ ५ ॥

७. पहाड़ी. (तर्ज़—नाम निरंजन गाओ.)

तुम ही हो जीवन की गति, इस लोक और परलोक में ।
तुम ही हो जीवन आश्रय, मंगल विपद भयशोक में ॥ टेक ॥
हो विश्वप्रकाशक तुमही, जगदाधार और जग आश्रय ।
तुमही हो हृदय ज्योति प्रभु अंधकार और आलोक में ॥ १ ॥
तुमही प्रेममय प्रभु प्यारे हो, तुमही हृदय उज्यारे हो ।
तुमही एक मात्र सहारे हो, संताप में संतोष में ॥ २ ॥
तुमही एक जीवनदाता हो, तुमही एक विश्व विधाता हो ।
विश्वासी की तुमही आशा हो, इस लोक और परलोक में ॥ ३ ॥

८. राग कल्याण. (तर्ज—आनन्द दाता.)

जहां से आये अमर वह देसवा, ना वहां धरती न पवन आकासवा ॥टेक॥
ना वहां चांद सुरज परगसवा, ना वहां ब्राह्मण सुद्र न सेखवा ॥ १ ॥
ना वहां ब्रह्मा ना विष्णु महेसवा, ना जोगी जंगम ना दरवेसवा ॥ २ ॥
कहे कबीर जो आवन संदेसवा, सार सब्द गहि चलो वहीं देसवा ॥ ३ ॥

९. अर्दास.

तुम ठाकुर तुम पै अर्दास, जीवपिण्ड सब तुमरी रास ।
तुम मात पिता हम बालक तेरे, तुमरी कृपा में सुख घनेरे ॥
कोई न जाने तुमरा अन्त, ऊंचे से ऊंचे भगवन्त ।
सकल समिग्री तुमरे सूत्र धारी, तुम से होए सो आज्ञाकारी ॥
तुमरी गत मति तुम ही जाने, नानक दास सदा कुर्बाने ॥

१०. दोहे.

चिंता तां की कीजिये, जो अन होनी होय ।
यह मारग संसार को, नानक थिर नहीं कोय ॥ १ ॥
(कबीर) जिस मरने से जग डरे, मेरे मन आनंद ।
मरने ही से पाईये, पूरण परमानंद ॥ २ ॥
धैर्य नशावे शोक को, धैर्य उन्नति मूल ।
जो सुख चाहो सर्वदा, धैर्य धर्म न भूल ॥ ३ ॥
राखण हारा एक तूं, मारण हारा अनेक ।
दादू के दूजा नहीं, तूं आपे ही देख ॥ ४ ॥

नवां अध्याय समाप्तम.

दसवाँ अध्याय.

अनुभव और आदेश के भजन.

(१) अनुभव के भजन.

१. काफी. (तर्ज—एक भरोसा प्रभु.)

बिसर गई सब तात पराई, जब ते साधु संगत पाई ॥ टेक ॥
नहीं कोई बैरी नाहीं बिगाना, सकल संग हमरी बन आई ॥ १ ॥
जो प्रभु कीनो सो भला कर मान्यो, यह सुमति साधु ते पाई॥२॥
सब म रम रहा है प्रभु एको, देख देख नानक बिगसाई ॥ ३ ॥

---

२. बाहार—एकताल.

दखिल तुमार सेई, अतुल प्रेम-आनने ।
कि भय संसार-शाक, घार बिपद शासने ॥ टेक ॥
अरुण उदये आधार जेमन, जाय जगत छाडिये ।
ममानि दव तुमार ज्याति, मंगलमय बिराजिले ।
भक्त-हृदय वात-शोक, तुमार मधुर सान्त्वने ॥ १ ॥
तुमार करुणा तुमार प्रम, हृदये प्रभु नाविले ।
उथले हृदय, नयन-वारि, राखे के निवारिये ।
जय करुणामय, जय करुणामय, तमार गुण गाईये ।
जाय यदि जाक प्राण, तुमार कर्म साधने ॥ २ ॥

---

३. रामप्रसादी सुर.

क्या आसरा मिलता है, हरि नाम लेते लेते ।
मिलती अजब ज्योति, नाम हरि गाते गाते ॥ टेक ॥
निश्चा आता है अजब, काज सब बन आते ।
होना फ़लित हृदा, ध्यान में ही रहते रहते ॥ १ ॥
रक्खूं भरिभार तभी, चलूं उसी के पीछे ।
मिलूं उस नाथ से अब, प्रेम ही में बहते बहते ॥ २ ॥
हुवा हूं मतवाला, हरि हरि जप्ते जप्ते ।
करता हूं क़ुरबान सिर, अब तो मैं हंसते हंसते ॥ ३ ॥

४. सोरठ. (तर्ज़—तेरी शरण में.)

जहां देखुं वहां तुहि, तुहि तुहि भगवान है ॥ टेक ॥
महिमा तेरी अजब रंगीली, कैसे करें हम गान है ॥ १ ॥
जिसने दिल से तुझे पुकारा, हुई मुश्किल उस की आसान है ॥२॥
ना कोई मेरा संगी साथी, तुझ बिन भगवान है ॥ ३ ॥
भक्तनकी तुम रक्षा करते, रखते हैं जो ईमान है ॥ ४ ॥
दास मैं अब शरणे आयो, दीजे दया का दान है ॥ ५ ॥

५. कीर्त्तन—खयरा.

हरिपद भजे, हरिप्रेमे मॅजे, हॅबे आमि नरहरि ।
आमारॅ आमित्व, असार स्वामित्व, मनुष्यत्व परिहरि ।
हरिबोल बॅले, आबॅ स्वर्गे चॅले, भागवती तनु धरि ॥ टेक ॥
भेदाभेद ज्ञान, आत्म अभिमान, महायोगे सब हॅबे अंतर्धान ।

देहे देंहाकार, मिलन विहार, किया शोभा मरि मरि ॥ १ ॥
श्रीहरिदर्पणे रूप नरहरि, निरखि आनंदे दुनयन भरि ।
निज पदधूलि, निजमाथे तुलि, लइबे भकति करि (हरि हरि बॅल) ॥२॥

६. बाउले सुर—आडख्यामटा.

मानुषे ठाकुर बिहार करे, नरहरि रूप धरि ।
देखें दिव्यज्ञाने, प्रेमनयने, अभिमान परिहरि ॥ टेक ॥
कि भावे काहार सने, आछेन तिनि संगोपने ।
के ताहा जाने, कत युगधर्म प्रकाशिलेन नरहदे अवतरि ॥ १ ॥
न्याय सत्य साधुगुणे, दया धर्म प्रेम पुण्ये ।
देखें से धने, से ये हरि श्रेय हरिरुप, हरिधने अधिकारी ॥ २ ॥

७. आसा.

माई री मैं आतम दर्शन पाया ॥ टेक ॥
सहिज आनद कुशल भयो मेरे, घर घर मंगल गाया ॥ १ ॥
विषयानंद न भावे मनकों, ब्रह्मानंद समाया ॥ २ ॥
वैर विरोध निवारे मन तें, ताप कलेश मिटाया ॥ ३ ॥
देह अभिमान फुरे नहीं कबहु, अपना आप गंवाया ॥ ४ ॥
दोड़ मिटी तृष्णा सभ चूकी, ज्ञान भानु प्रगटाया ॥ ५ ॥

८ कीर्त्तन आलेया—जत.

आमार माके कि देखेछिस तोरा बॅल सत्य करे ।
जार नव नव रूपे नाना रूपे मन हरे ॥ टेक ॥

१२. विभास—एकताल. (तर्ज़—यह विश्व में.)

संसार मंदिर के सभी परिवार में, करती हो विराज ओहे मां जननी ।
परम जतनसे पुत्रकन्यागणको, पालत हो आदरसे दिन और रजनी ॥टेक॥
महाशक्तिरूप से नारीके हृदयमें, कोमल मातृभावको प्रकाश किया हय ।
छाया मोहित मानुषका चित्त, दिखाके अपनी मूरति जगतमोहिनी ॥१॥
हो माधुरी प्रकृतिरस का आधार, स्नेहकी हो मूरति और प्रेमका अवतार ।
तुमहि माता हो सबका मूलाधार शिशुभक्तसंतानकी हो हृदयविलासिनी ॥२॥

---

१३. कीर्त्तन.

मो लागन सिऊं अब प्रीत बनी ।
तोड़ी न टूटे छोरि न छूटे, ऐसी माधव खेंचतनी ॥ टेक ॥
दीनस रैन मन माहिं बसत है, तूं कर कृपा प्रभु अपनी ॥ १ ॥
बल बल जाऊं श्याम सुंदर किऊं, अकथ कथा जांकी बात सुनी ॥२॥
जन नानक दासन दास कहत है मोहे कर कृपा प्रभु अपनी ॥ ३ ॥

---

१४. छायानट—एकताल.

हे सखा मेरे हृदय रहत हो ।
संसार के सब कार्ज में, ध्यान ज्ञान में तुम्हि रहत हो ॥ टेक ॥
नाथ, तुमहो सुख दुख में, हासिमुख और अश्रु नयन में ।
(रहते हो हमारे जीवन को घेरे) ॥ १ ॥

---

१५. काफी. (तर्ज़—क्यों होता है.)

जिधर देखुं जहां देखुं, एक तूंही दिखा रहा है ॥ टेक ॥

आगे उसके प्रणाम करके, भक्ति पुष्पांजलि देके ।
जागके आनंद से बोलो, जय प्राणाराम ।
(जय प्राणाराम जय प्राणाराम बोलो जय प्राणाराम ॥ २ ॥

१०. आसा.

असा नूं साहिब लगदा प्यारा ॥ टेक ॥
घट ही में गंगा घट ही में जमना, घट ही में ठाकुर द्वारा ॥ १ ॥
घट ही में ब्रह्मा घट ही में विष्णु, घट ही में शिव का पसारा ॥ २ ॥
घट ही में चंद्रमा घट ही में सूरज, घट ही में नव लख तारा ॥ ३ ॥
कहे कलंदर सन मन अंदर, ढूंढ लधा मेरा प्यारा ॥ ४ ॥

११. कीर्त्तन—एकताल.

जागो जागो जागो रे भाई, अब तुम नींद करो ना ।
सघ शंखबजाहा, देवीवरोना (चलो चलो जल्दी करो) ॥संघ शंख ॥टेक॥
भगवती गाद में सब ही भक्त, संग में लेके देव देवी ।
अपरूपमाकारूप, देखतकयोंना (चिन्मयी आनंदमयी रूप) ॥ अपरूप॥१॥
रहो ना तुम अचेतन, होओ रे भाई अब चेतन ।
विश्वमाता नाम काहे मिल्के गाओ ना (सुर में सुर मिलाके) ॥ विश्व। २॥
कीचड़ काटे पथ में कितने, और विघ्न दुख है शत शत ।
यह सब देखके रे भाई, भय करो ना ॥
वैकुंठ भंडार अब देखो है खुला, "आओ अब आवो" मा रही बुला ।
पुकारत है मा स्नेह से, काहे सुनो ना (ब्रह्मानंद संगमिले) ॥ पुकारत ॥३॥

१२. विभास—एकताल. (तर्ज—यह विश्व में.)

संसार मंदिर के सभी परिवार में, करती हो विराज ओढे मा जननी ।
परमजतनसे पुत्रकन्यागणका, पालनहो आदर्श से दिन और रजनी ॥टेक॥
महाशान्ति रूप से नारीके हृदयमें, कोमल मातृभावका प्रकाश किया हय ।
कीया मोहित मानुषका चित्त, दिखाके अपनी मूरति जगतमोहिनी ॥१॥
हो माधुरी प्रकृतिरस का आधार, स्नेहकी हो मूरति और प्रेमका अवतार ।
तुम हैमातादो सभका मूलाधार शिशुभक्तसंतानकीहो हृदयविलासिनी ।२।

१३. कीर्त्तन.

मो लालन सिऊं अब प्रीत बनी ।
तोड़ी न तूटे छोडी न छूटे, ऐसी माधव खिचतनी ॥ टेक ॥
दीनस रैन मन माहिं बसत है, तु कर कृपा प्रभु अपनी ॥ १ ॥
बल बल जाऊं शाम सुंदर कीऊं, अकथ कथा जाकी बात सुनी ॥२॥
जन नानक दासन दास कहत है मोहे कर कृपा प्रभु अपनी ॥ ३ ॥

१४. छायानट—एकताल.

हे सखा मेरे हृदय रहा हो ।
संसार के सब काज में, ध्यान ज्ञान में तुम्हिं रहत हो ॥ टेक ॥
नाथ, तुमहो सुख दु ख मे, हासिमुख और अश्रु नयन मे ।
(रहते हो हमारे जीवन को घेरे) ॥ १ ॥

१५. काफी. (तर्ज—क्यों होता है.)

जिधर देखुं जहा देखुं, एक तूही दिखा रहा है ॥ टेक ॥

जिमी पे तूं गगन मे तूं, पानी मे तूं अगन में तूं।
चाद सूरज में है एक तूं, बिजली में तूं समा रहा है ॥ १ ॥
समुंद नदी जंगल में तूं, सबही जगा मे व्यापी तूं।
चराचर नरनारी मे तूं, स्वरूप तेरा सुहा रहा है ॥ २ ॥
कुरान पुरान वेद में तूं, मूरपी मुनी ओलीओ में तूं।
परम आनंद जगत म तूं अनंतकाल तूं छा रहा है ॥ ३ ॥

१६. दोलन. (तर्ज—तुमारे नित्यधामें.)

मा मा बोले पाषाण गले दोमयनों भरे जले, उठेगे हृदय में प्रेम लहर।
निराशअंधकारे मांमांबोलि तुम्हेपुकारे, होगा अंत करण आशाका संचार॥
विपदमें संपदमें जननी अभयपद में, एकांत में जोडि लेव उसकी शरण।
रहता वो सदानंद निरापद निर्भयमें, सुखसागर में करते वह तरण॥
मातृप्रेम सहज यह साधन सहस्र करोजोजन, जावे वो सहजही शांतीधामे।
कर्म्मज्ञान जोगयग्रमे नाहोवे शांतिप्राणमे मांकानामही भरोसापरिनामे॥

१७. भैरवी.

ईश्वर माझा न्याय करणें, ऐक तूं करों ॥ टेक ॥
सत्वपणे मी वर्त्तत आहें, हे मनीं तूं धरणें ॥ १ ॥
देवावर म्यां ठेवुनि भावा, भिजविली ही करणे ॥ २ ॥
झाणुनि माझा तोल न जाई, या शुद्धाचरणे ॥ ३ ॥
भावासह हें मन गालूनियां, शोध तूं मन पारखणें ॥ ४ ॥
तुझी दया मम नेत्रा पुढेंचीं, आहे पूर्णपणे ॥ ५ ॥
सत्या माजी वर्त्तलो तुझिया, देवा मज वर्त्तवणे ॥ ६ ॥

१८. दोहे.

जो तेरे घट प्रेम हैं, सो कहि कहि न सुनाय।
अंतर्यामी जानिहै, अंतर गत को भाव ॥ १ ॥
गुप्त प्रगट जती कहि, मेरे मन की खुम।
अंतर्यामी रामजी, सब तुमको मालुम ॥ २ ॥

---

(२) आदेश के भजन.

१. दोहे.

हरि दयामय कहत है, हू मैं सब का तात।
ध्यान लगाय सभी सुनो, कहता हू जा बात ॥ १ ॥

गजल (तर्ज—ईश्वर तेरी दयालुता)

मैं दिल के द्वारे आया हूं, तुम प्रसन होगे क्या?।
म मुक्ति ले के आया हू, तुम बढ के लोगे क्या? ॥ टेक ॥
मैं जीवन शक्ति लाया हूं, तुम दिल का दोगे क्या?।
मैं मरा मेरा कहता हू, तुम मेरे होगे क्या? ॥ १ ॥

---

२. बजारा.

तुम सकल सुना नर नारी, मैं सब में हू हितकारी ॥ टेक ॥
सुभ सब भक्तों के पुत्त हो, मेरे सब ही तुम बच्चे हो।

यदि हृदय मेन तुम खोलो, तुम भक्तों सा देखओ ॥ १ ॥
क्यों झूंठ बहाने बनाते, जनम अपना दुःखी बिताते ।
अब करो तुम शास्त्र तयारी, मुझ पाओ हृदय बिहारी ॥ २ ॥

३. जिल्हा पिलू.

माहे कहां तू ढूंढे बंदे, मैं तो तो पास में ॥ टेक ॥
म ही रहता रामेश्वर मे, मैं काशी कैलास में ।
मैं ही रहता मक्के मदीने, मैं ही हू अलमान में ॥ १ ॥
मैं ही सब क्रिया करम में, मैं ही योग सन्यास में ।
मैं ही सब मसजिद मंदर में, अधिक कर विश्वास में ॥ २ ॥
मैं रहता सब जीव जंत में, सब श्वासों के श्वास में ।
जो खोजो तुम सरल भाव से, पा लो अपने पास में ॥ ३ ॥

४. गजल. (तर्ज़—कैसी मधुर बंसरी.)

साफ दिल होके जो करता है मुहब्बत मेरी ।
रात दिन रहती है उस दिल में सकूनत मेरी ॥ टेक ॥
चश्मे दिल खोल के जो लोग मुझे देखत हैं ।
दिल में रखकर के शबो रोज मुहब्बत मेरी ॥ १ ॥
उनको हर शैमें नजर आता है जलवा मेरा ।
जर्रे जर्रे से नजर आती है क़ुदरत मेरी ॥ २ ॥
मुझ पे जो मरते हैं मैं उन पे फिदा होता हूं ।
मेरे आशक़ नहीं करते हैं शिकायत मेरी ॥ ३ ॥
खुद फना होके न मिल जाये तो मुझ में ख़ातिर ।
जान सकता नहीं जिनहार हक़ीक़त मेरी ॥ ४ ॥

५. आसा. (तर्ज—अंतर्यामी प्रभु)

भटकत भय्कत बिपन के बनमें, आया मधुर यह सुर श्रवन में ॥टेक॥
"मेरे पुत्र उदास न हो तूं, मर न अभु निज मैनन में ।
धर मस्तक मेरे उर पर, आके बैठ मेरे गोदासन में ॥ १ ॥
हृद निद्रा का करले भोजन, लग रही है जो क्षुधा मनमें ।
है जो प्यासा तू यह पील, अमृत जल जो है शुभ जीवन में ॥ २ ॥
भय कपोत मन है जो तेरा, आ लग जा तूं मेरे गल में ।
चल अब तूं आनंद बाग में, नृत्य कराउं आदि देवगण में" ॥ ३ ॥

६. भैरवी—पोस्त.

जे भविर भावुक, पथेर पथिक, सबे तो आपनार ।
देहेर संबंध जत क्षणिक असार ॥ टेक ॥
परलोकेर संगी जा'रा, आत्मार आत्मिय ता'रा ।
ना चिने सकाले मिछे केहँ नहे क'र ॥ १ ॥
विविध विषय कर्मे, एकमत एक धर्मे ।
मिशिनु जादेर संगे हवे ना आमार, (ताराओ) ॥ २ ॥
हाय तबे कोथा जाबे, मनेर मानुष का'रे पाबे ।
जे हवे मायेर सता आमि हवे जा'र ।
ता'र संगे प्राणे प्राणे, मिले एक लय ताने ।
हरिगुणगाने तिने हवे एकाकार ॥ ३ ॥

७. रेखता. दादरा. (तर्ज—ईश्वर तेरी दयालुता.)

जिस दिल को खुदा याद, वह आबाद हमेशा ।
आबाद हमेशा है, वह दिलशाद हमेशा ॥ टेक ॥

जिस दिल खुदा के नाम में, तन मन धन दिया ।
उस दिलका इलाही मिले, इमदाद हमेशा ॥ १ ॥
जिस दिलको गम अलाह के, मिलने का दम बदम ।
उस दिल के गम अलम सभी बरबाद हमेशा ॥ २ ॥
जिस दिल अपने काम सब, हरनाम पे रखे ।
उस दिलको सरजाम है, हरदाद हमेशा ॥ ३ ॥
सुरन बिहारी लाल में, चाहे सो लो ज्ञान ।
एतमाद जिसका पूरा है, एतकाद हमेशा ॥ ४ ॥

---

८. आलेया. कवालि.

भक्ति भावे डाकले आमि, रइते पारिक ।
आरे, जे डाके आमारे, आमि तारि ह'ये रइ ॥ टेक ॥
ज जन विश्वास करे, जीवन सँपेछे मोर ।
के आछे तार ए ससारे, बॅले आमि बॅइ ॥ १ ॥
आमि भक्तेर अधीन, आमाय जाने सब चिर दिन ।
भक्तके देखिले आमि आनंदित हॅइ ॥ २ ॥
दारा सुतधन प्राण, जे करे आमाय अर्पण ।
ताहार राकज भार, मायाय करे बॅइ ॥ ३ ॥
भजित चैतन्य मोरे, बॅधेछिल प्रेमडोरे ।
भजिर जोरे ध्रुव प्रल्हाद, ह लॅ अमनजयो ॥ ४ ॥

दसवां अध्याय समाप्त

विविध और साधु वचन के भजन.

१ झिंझि', एकताल (तर्ज—दयामय हरि दयामय)

ध्यान ज्ञान नवीन वस्त्र, प्रेम के हो पहिरिये ।
देव देव महादेव, महाराज पूजिये ॥ टेक ॥
परम भक्ति योग साय, प्रभु गुण आज गाय ।
बार बार नमस्कार, वही चरण कीजिये ॥ १ ॥
गाओ गाओ सभी गाओ, आज नव हृदय पाओ ।
प्राण मोहिं जांसे जावें, वाही हृदय धारिये ॥ २ ॥
धन्य धन्य दयाधार, दया तव है अपार ।
प्रेमराज्य भेज आज, भ्रातृभाव दीजिये ॥ ३ ॥
दूर होय चिंता भय, होय सब पाप क्षय ।
पाय नव प्रेम लव, प्रेमरस भींजिये ॥ ४ ॥

---

२ धमार्थी, तिताल (तर्ज—जननी जननी अविराम)

सब का करो कल्याण, (दयालु प्रभु) सब का करो कल्याण । टेक॥
नर नारी पखी पशु के साथे, जीव जंतु का तमान ॥ दया ॥१॥
जग के वासी सब सुख भोगे, आनंद रहे आठों जाम ॥ दया ॥२॥
सर्व जगत सुख शांति बढे नित, और बढे धन धाम ॥ दया ॥३॥
आपो अपन मति अनुसरे, सब कोई भजे भगवान ॥ दया ॥४॥

---

३. झिंझिट—दादरा (तर्ज हरि समान दाता.)

देखके तिहारो रंग, ढंग आज प्यारा ।
होत है हमारो दुरा, भंग अज सारा ॥ टेक ॥
आय आय तेरे धाम, नाम ले तिहारा ।
पाय मुक्ति मेरे स्वामी, काम ही हमारा ॥ १ ॥
काम क्रोध हिंसा द्वेष, पाप ताप सारा ।
भागके न पायों लेश, आप मानहारा ॥ २ ॥
ज्योति है प्रकाशी, दूर भागे अंधकारा ।
धन्य धन्य है संसार, लागे शांतिधारा ॥ ३ ॥

---

४. टोडी (तर्ज—प्रीति प्रभु से जोड.)

संतो ऐसा धुंध पसारा ॥ टेक ॥
इस घट अंदर बाग बगीचा, इसीमें सृजन हारा ।
इस घट अतर सात समुंदर, इसीमें बारा पारा ॥ १ ॥
इस घट अंतर हीरा मोती, इसीमें परखण हारा ।
इस घट अंतर चांद सूर्ज है, इसीमें बेहद तारा ॥ २ ॥
इस घट अतर अनहद गर्जे, इसीमें ऊठत फुआरा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधु, याही में गुरु हमारा ॥ ३ ॥

---

५. काफी (तर्ज—तूंहै तूंहै तूंहै तेरा)

जो विश्वास प्रभु पर लावे, शुद्धि शक्ति शांति पावे ॥टेक॥

वो सब अपनी चाल सुधारे, तन मन चित लगावे ।
श्रेष्ठ वचन निज मुख से भाखे, प्रभुको शीश नवावे ॥ १ ॥
जो विश्वास प्रभु पर लावे, नया जनम सो पावे ।
मन में प्रेम सभन से राखे, प्रभुका दास कहावे ॥ २ ॥
अपने स्वार्थ की इच्छा टारे, पर हित भार उठावे ।
जगत सुखों की आशा छोडे, हर्ष सहित यश गावे ॥ ३ ॥
निशदिन टेक धरे प्रभु ऊपर, शांति रस वह पावे ।
प्रभु बनेंगे ताके नेता, भव निधी पार लधावें ॥ ४ ॥

---

६ भैरवी (तर्ज रुकमणी ब्रज) (सुकृन करले)

राम रस मीठा कहे सब कोई ।
नाम रस मीठा, मुखसे कहे क्या होई ॥ टेक ॥
मीठा रस यह जाने जोई, भर कर प्याला पिया जिन होई ।
दूजा जाने मिठास न कोई, मुखसें मीठा कहे क्या होई ॥ १ ॥
अन्न कहेसे सुधा किन खोई, सीत न मिटत कहत मुख लोइ ।
फूल कहे न आवे खुशबोई, मुखसें मीठा कहे क्या होई ॥ २ ॥
बिना मनन जो सुरत रहे सोई, रस नहीं पीवत मूर्ख चोई ।
मिले माखन छाछ बिलोई, मुखसें मीठा कहे क्या होई ॥ ३ ॥
जनक वृति जिस रस में भिगोई,
जिस माहीं सुखदेव आतमा डुबोई ।
रस को पी हो अमर पाप धोई, मुखसें मीठा कहे क्या होइ ॥ ४ ॥

धर्म बेली चित्त भूमी में होई, वामें रामरस सींचे सोई ।
जीना इहलोक परलोक दोई, मुरद में मीठा कहे क्या होई ॥ ५ ॥

७. झिंझिट—एकताल.

पकजदल गत जल मिव, चचलमीह जीवनम् ।
सश्यति नाहीं, वारयति कील, कुरु हरिपद चिंतनम् ॥टेक॥
कुसुमोपम मीह सीदति, तव सुदर यौवनम् ।
गर्व जही सर्व कुरु, सर्व ही भव बंधनम् ॥ १ ॥
स्वप्नोपम धन जन गेहे, दारादिक बांधवम् ।
संग त्यज रे भज रे, भज हरिप्राण वलभम् ॥ २ ॥
परिहर रे पाप जनक, भोगवच रोगास्पद ।
जोग पुरु जोगेन ही, प्राप्स्यसि चिर सम्पदम् ॥ ३ ॥

८ पीलू ताल पोस्त (तर्ज—हमें उद्धार करने का)

है दिल सो एक और उसकी खरीदारी कहीं चहाते ।
सुभु से शाम तक कितने ही, ग्राहक आके फुसलाते ॥टेक॥
एक तरफ से आये दौलत, अपना दास करने को ।
बना हाव भाव बहुतेरे, करे मीठीसी वह बातें ॥ १ ॥

फिर इजन उठ आय कहती अरे तुं चल आ मेरे साथ ।
बना दु खान साहेब के खुशामद सब करें आते ॥ २ ॥
कबीला कहना हम तुमको सदा वास्ते खरीदा है ।
बस अब तुम किसी औरके कभी होने नहीं पाते ॥ ३ ॥
चौतरफ यु घेरा दुनिया ने अब दिल दीजे किसे अपना ।
सुख की नींद छुरवाके वह दुख में मारने चहाते ॥ ४ ॥
मगर इन सब में बचके दिल क्यों न बेचें प्रभु जी के हाथ ।
जिनका नाम हृदय आराम, शांति धाम सब मुनि गाते ॥ ५ ॥

---

६. पीलू

आऊगा न जाऊगा, मरंगा न जिऊगा,
गुरुके शब्द का प्रेम रस पिऊंगा ॥ टेक ॥
कोई फेरे माला, कोई फेरे तसबी,
देखो यह लोको, दोनो है कसबी ॥ १ ॥
कोई जावे मक्के, कोई जावे काशी,
देखो यह लोको, दोनो गलफासी ॥ २ ॥
कोई पूजे मदर कोई पूजे गोरां,
देखो यह लोको, लुट गये चोरां ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो री लोई,
ना हम किसीके ना हमारा कोई ॥ ४ ॥

---

१० भैरवी—त्रिताल (तर्ज—आज है धन्य भाग)

सगत संतन की करले, जनम का सार्थक कुछ करले ॥टेक॥
उत्तम नर देह पाया प्राणी, इसका हित कुछ करले ।
हरि के शरण जायके वागा, पाप ताप दूर करले ॥ १ ॥
कहां से आया कहां जावेगा, यह कुछ मालुम करले ।
दो दिन की जिंदगानी बदे, हुशीयार हो तु चल रे ॥ २ ॥
कौन किसी के जोरू लडके, कौन किसीके साले ।
जब लग अपनी ठीक बनी है, तब लग मीठा बोले ॥ ३ ॥
कहत कबीरा सुन भाई साधु, हरदम प्रभु गुण गाना ।
अपना हित कुछ करले प्यारे, आखर अकेला जाना ॥ ४ ॥

---

११. काफी. (तर्ज—सकल है विश्व)

क्यों होता है तु घबरा, क्यों डरता है तु ससारा ।
करना पर्योन जरा विचारा, नयन खोलके तुं हो खडा ॥
देख ब्रह्मांड विस्तारा, हरि कृपा का है सारा ॥ टेक ॥
यह विश्व है ऐसी सुदर, अति मनोहर शांती सुखकर ।
प्रकाशे करुणा सागर, असंदेह आत्मा है भरा ॥ १ ॥
बाबा करो स्थिर मानसा, धरो अब दृढ भरोसा ।
त्यागेगा वो तुझे कैसा, मानव पशु पक्षी ऐसा ॥
पालत है सभीको जैसा, विविध योजना में ऐसा ।
पालन है वो तुझे ऐसा, प्रभु अनत भडारा ॥ ३ ॥

तु कैसा परम जड़मति, न जाने उसकी कृति ।
न है जिसकी परिमिती, शरण में जा परात्परा ॥ ४ ॥

---

१२ सिंधु खांवाज—जत.

केनें रे मन भाविस एत, दीन हीन कांगालेर मत ।
आमि जे पेयेछि मायेर अक्षय धन अभयपद ॥ टेक ॥
एक वार यदि मा बॅले, डाकि तरि हृदय खुले ।
तखनि मा ल'ये कोले, मुखे तुले देय अमृत ॥ १ ॥
आमार मा ब्रह्मांडेश्वरी, दयामयी क्षेमंकरी ।
सुदर्शनचक्रधरि;(धनधान्य हाते करि) आछेन काछे नियत।२।
शोनरे मन तोरे बॅलि, आमि मायेर बले बॅली ।
देह मन प्राण सकलि; तांहारि अंघ्रे पालित ॥ ३ ॥
अन्य धने कि प्रयोजन, परशमणि मायेर चरण ।
हृदये राखिये से धन, करॅ सुखे काल गत ॥ ४ ॥

---

१३. गजल—धमाल.

मुझे है काम ईश्वरसे जगत रूठेतो रूठनदे ॥ टेक ॥
कुटुंबपरिवार सुतदारा मालधन लाजलोकनकी ।
हरिके भजन करनेमें अगर छूटे तो छूटनदे ॥ १ ॥
बैठ सगतमें संतनकी करू कल्याण मैं अपना ।
लोक दुनियाके भोगोंमें मौज लूटे तो लूटनदे ॥ २ ॥

प्रभुके ध्यान करनेकी लगी दिलमें लगन मेरे ।
प्रीत संसार विशयोंसे अगर टूटे तो टूटनदे ॥ ३ ॥
धरी सिर पापकी मटकी मेरे गुरुदेवने झटकी ।
वो ब्रह्मानंदने पटकी अगर फूटे तो फूटनदे ॥ ४ ॥

---

१४. तिलंग (तर्ज—करो ध्यान सदा शुभ)

चल चल प्यारे हरि गुण गावें, चल चल प्यारे हरि गुण गावें।टे।
जो हरि भव पाप का हरता, वाको जाय मनावें ।
सांझ भई अब छोड़े ये धंधे, प्रभु चरणों में सिर नावें ॥ १ ॥
यह विरीया हरि नाम जपन की, कबहुं न व्यर्था गमावें ।
हरि स्तुति ओ प्रार्थना करके, सुधानंद फल पावें ॥ २ ॥
मन मंदिर में वासा करके, भजन अखंड जगावें ।
प्रभु की विनती ऐसी निर्मल, कूर कपट भग जावें ॥ ३ ॥
प्रार्थना आदिक कार्य करके, घर अपने सब आवें ।
हरि पद प्रेम युक्त हो प्यारे, निशि वासर हरि ध्यावें ॥४॥

---

१५. मंगल—त्रिताल (तर्ज—मैंनें प्रभु से)

नाम निरंजन गावो रे साधो, नाम निरंजन गावो रे ॥टेक॥
नाम जहाज बैठकर दुस्तर भवसागर तर जावो रे ।
मानुष देह मिली है दुर्लभ, काहे व्यार्था गमावो रे ॥ १ ॥

रसकी जीभ नामबिनदासा, फिर क्यों देर लगावो रे ।
ऊठत बैठत सोवत जागत, मन से नहीं विसरावो रे ॥ २ ॥
ध्रुव प्रल्हाद बिभीषण नारद, सनकादि मन भावो रे ।
अजामेल गज गणिका तारे, दृढ निश्चय मन लावो रे ॥ ३ ॥
कलि केवल इक नामआधारा, दूजा भरम भुलावो रे ।
ब्रह्मानंद नाम बिन हरिके, कबहु न मोक्ष पावो रे ॥ ४ ॥

---

१६. आशागौरी (तर्ज—तुम पर तन मन)

चित चुनरिया रंगदो प्रभु मेरे, तुमरे नामके रंग (रे प्यारे)॥टेक॥
नाम रंग रहो नैनन छाए सदा, और वृथा सब ढंग ।
चटक चार दिन धन जोबन की, सो क्या करू रंग पतंग ॥ १ ॥
ऐसा रंग दो रंगरेजा मेरे, जो हो रहे सदा अभंग ।
उतरे न कबहु लगें यदि सहस्त्र आ, भव भय सिंधु तरंग ॥२॥
नाम रंग रंगि चुनरिआ, मैं पैहेनके पूर्ण उमंग ।
नाचु तुम संग ऐसे भाग्य कहां, बजावत प्रेम मृदंग ॥ ३ ॥
प्रेम मृदंग बजाऊ ऐसी, तन मन शुद्ध बुद्ध रहे न वैसी ।
बजाई ध्रुव, मुनि नारद जैसी, ईशा मूसा चैतन्य तसी ।
करके दया सोहे कर अब दोगे, हे हरि ऐसा प्रसंग ॥ ४ ॥

---

१७. बिहाग, गजल (तर्ज़—प्रभु प्रेममानद धारा)

तुं चातक क्यों समझे, प्रभु दूर है मनां ।
उससें समस्त जग है भरपूर है मनां ॥ टेक ॥
क्या अग्नि, पवन विद्युत, शशि सूर्य सितारे ।
उससे ही है सभोंका भनूर है मनां ॥ १ ॥
उनके संशोधन में क्यों तुं, दूर दूर भटकता ।
है छा रहा उसीका सब नूर है मनां ॥ २ ॥
कर वास सुधा सागर में तुं प्यास से मरे ।
मिसाल यह तुम्हारी है, मशहूर है मनां ॥ ३ ॥
वो तो नयनों का नयन है, श्रवणोंका श्रवन है ।
हृदय का हृदय करलो, मज़ुर है मनां ॥ ४ ॥

---

१८ हर्मी—छंद. (तर्ज़—करता हूँ वेनती.)

आहा आहा, सब जग तज प्रभु मन लाया ।
खाना पीना आना जाना, प्रभु बिन नहीं भाया ॥ टेक ॥
पाप ताप स्यापा छूटा, फिर निकट न आया ।
जागा मांगा पाया खाया, अब हरिरस मन भाया ॥ १ ॥
माता भ्राता भार्या जाया, प्रभु बिन न सुख पाया ।
पाके शोभा आत्मा मेरा, हरख हरख गुन गाया ॥ २ ॥

१९. पीलू. दीपचंदी. (जत.)

जिनका जगमें ना कोई सहारा, केवल तेराही नाम आधारा ॥टे॥
ध्रुवको पिता जब घरसें निकारा, वहांतेरा नाम हुआ रखवारा ॥१
राज्यपाट खोया हरिश्चंद्र, सो फिर मिला सत्त नाम के द्वारा॥२॥
यही नाम हुआ मीरांका संगी, गोपी चंद के हृदय का हारा ॥३॥
यह नाम वह मंसुर मसीहने, सूली चढ़ते तक न विसारा ॥४॥

२०. रेख्ता. दादरा (नर्ज़—ईश्वर तेरी दयालुता.)

वह झमक तेरे नाम की क्या कया दिखा रही ।
मुझ को सदा तेरी ही लीला बता रही ॥ टेक ॥
पड़ा जो आनंदके दरिया में जाकर ।
कृपा की धारा रात दिन मुझे मचा रही ॥ १ ॥
मिलते जहां फ़िरस्ते वह साधुओं का संग ।
सदा तेरे नाम की वह धुम मचा रही ॥ २ ॥
मिलाओ हमें सग वह जहां नाम तुम्हारा ।
सदा करे हम गान महिमा वह तुम्हारी ॥ ३ ॥

२१. बाउले सुर—एकताल.

प्रेमिकलोकेरस्वभाव स्वतंतर ओ तार थाकेनाभाइ आत्मपराटे॥
प्रेम एमनि रत्न धन, किछु नाइको तार मैतन ।
इंद्र-पद्के तुच्छ करे प्रेमिक हेय ये जन ।
ओ से हास्यमुखे सदाइ थाके हृदय जुडे सुधाकर ॥ १ ॥

प्रेमिक चायनाको जानि, चाय ना सुख्याति ।
भावे हृदय पूर्ण, हय ना लुब्ध रटले ग्रख्याति ।
ओ तार हस्तगत सुखेर चाबि, थाक्बे केन अन्य डर ॥ २ ॥
प्रेमिकेर चालूटे बेआड़ा, वेद विधि छाडा ।
आंधार कोणे चांद गेले तार मुखे नाइ साडा ।
ओ से चौद्द भुवन ध्यरा हतेयो आसमानेते बनाय घर ॥३॥

२२. कीर्त्तन. (तर्ज़—कैसे दयाल हो.)

अमृत निहार नाम, दीन शरण है,
शांतमन होय पाय प्राणरमण है ॥टेक॥
हो अमर नाम पाय, नाहिं मरण है,
होय तन नाम जाप, शान्ति भवन है ॥ १ ॥
नाम सर धाम पाय, जोई सुजन है,
अमृत सुधार न्हाय जाय तपन है ॥ २ ॥
नाम बल शीघ्र होय इन्द्रि दमन है,
साधु बन जाय पाय नाम जपन है ॥ ३ ॥
होय हरि नाम गान शुद्ध जीवन है,
नाम तव जाप पाय अमृत धन है ॥ ४ ॥
उस्तव हमार नाथ होय सुफल है,
भक्ति नव पाय जाय, दुःख मरण है ॥ ५ ॥

२३. धनाश्री. (तर्ज—जननी जननी अभिराम.)
क्या मधुर तेरा नाम, (दयामय) ॥ टेक ॥
सुन के दयामय नाम तुम्हारा, शांत भयो है प्राण ॥ १ ॥
दयामय दयामय नाम गान से, करे हैं अमृत पान ॥ २ ॥
सुखे तरू को ताजा बनावे, जीव को दे सुखधाम ॥ ३ ॥
जान पड़े न्हीं कहां से आयो, ऐसो मधुर तेरो नाम ॥४॥
नाम की महिमा सुन के प्रभूजी, प्राण हुआ मस्तान ॥५॥

२४. टोडी.
प्रभू तेरी लीला है अपरपार ॥ टेक ॥
तेरी लीला का पार न पाया, जो हैं अगम अपार ॥ १ ॥
पीर पैगम्बर और रिषी मुनि, कर न सके हैं विचार ॥२॥
घट घट वासी हृदय प्रकाशी, सतो ने कहो यह पुकार॥३॥
जो जा जिन्होंने उन्होंने पाया, ऐसे हो तुम दातार ॥ ४ ॥
लेवें सुध तू एकहि पुकार सें, जावें तुझ पर वलिहार ॥५॥

२५ टोडी. (तर्ज—प्रीति प्रभुसे)
मेरो सुंदर कहां मिले कत गलीजी ।
हर के संत बतावे मार्ग, हम पीछे लाग चली जी ॥टेक॥
प्रिय के वचन सुरते हियरी, इह चाल वनी है भली जी।
लहरी माधुरी ठाकुर भाई, ओ सुंदर हर दल मिली जी॥१॥
एको प्रिय सिख्या सब प्रियके, जो भावे परमा भली जी।
नानक गरीब क्या करें बिचारा, हर भाने तन राह चली जी॥२॥

२६. विलू.

तू मेरे स्वामी मैं हूं तेरी दासी, तुम हो प्रेम मैं प्रेम पियासी।टेक।
तव चरणन चित्त सदा आनंदित,
जीवन तुम्हारे निकट निवासी ॥ १ ॥
मेरे तो सब कुछ तुम ही हो प्रीतम,
पाया तुम्हें बन कर विश्वासी ॥ २ ॥

२७. होरी. (तर्ज—मेरे तो तुमही एक)

प्रभु सुनो विनय हमारी, कृपा वारी ॥ टेक ॥
इस जग में सुख सम्पति तुमहीं, मोको कभी न बिसारी ॥ १ ॥
धर्म कर्म अब मोसे होवें, रहो सदा सहकारी ॥ २ ॥
मन मेरो उपकार में लागे, दे सब-पाप निकारी ॥ ३ ॥
भक्ति प्रेम अटल मैं पाऊं, गाऊं महिमा तुम्हारी ॥ ४ ॥
तन मन धन तेरे अर्पण होवे, जीवन हो फलकारी ॥ ५ ॥

२८. खमाच, दादरा. (तर्ज—जय जय जगदीश्वर)

जय जय भगवंत दयासिंधु उपकारी ॥ टेक ॥
जय जय जगबंधु कृपासिंधु शांतिकारी ।
तुहीं प्रभु पूर्ण दयारुप विश्वधारी ॥ १ ॥
तेरी जग शक्ति करे निसदो प्रचारी ।
श्रद्धा अरु भक्ति तुम्हें नाथ है स्विकारी ॥ २ ॥
पापी हम होय सभी शर्णाली तिहारी ।
तुम्हीं अब आय हृदि देओहे सुधारी ॥ ३ ॥

पावे अब शांति दयासे सभी निहारी ।
लागे तब कार्य प्रभु ज़िंदगी हमारी ॥ ४ ॥

२९. भैरवी. (तर्ज़—प्रभु हम आय.)

माई मेरे मन की है यह प्यास ॥ टेक ॥
इकछण रह नसकू बिनप्रीतम दर्शन देखनको धारी मनआस ॥१॥
सिमरो नाम निरञ्जन करते, मन तन से सब कुल दुःख नाश ॥२॥
पूर्ण पार ब्रह्म सुख दाता, अविनाशी विमल जाको जास ॥३॥
सन्त प्रसाद मेरे पूर मनोरथ, कर कृपा भय गुण तास ॥४॥
शान्त सहिज सुख मन उपज्यो, कोट सूर नानक प्रकाश ॥५॥

३०. मुलतानी. (तर्ज़—प्रेम पदार्थ.)

अब मोहे प्रेम की भूख विधाता, प्रेम पदार्थ दीजे ॥ टेक ॥
जब लग जीऊं तब गुण गाऊं, येही कृपा मो पै कीजे ॥१॥
निश दिन मेरो मन अब यों लोचत, प्रेम पियाला पीजे ॥२॥
यह विश्वासी कर जोड़ मांगे, दीन विनय सुन लीजे ॥३॥

३१. कसूरी. त्रिताल. (तर्ज़—सुकृत करले.)

आओ भाइयो बहिनो प्यारे, ईश्वर के सब गुन गावें॥टेक॥
प्रभु तूं मेरा परम सखा है, बली बली तेरे ही जावें ।
हे जननी जगत की माता, तुम सग प्रीत लगावें ॥ १ ॥
प्रेम करें हम सत गुनी से, किस विध दरशन पावें ।
गोद में खेले तेरे निर्भय, भक्ति से शीश नवावें ॥ २ ॥

३२. कीर्त्तन. (तर्ज़—कैसे दयाल हो.)

साईंत्रहित मिल तेरे चरणोंमें आये हे पिता करोकृपा हमें ॥टेक॥
गातेहैं सबमिल भक्तिभाव से तेरे मधुरनाम हम दिल भरके॥१॥
तुम्ही मातपिनागुरु ज्ञानदाता मिलेहै तुमसे स्नेहऔरममता॥२॥
देओज्ञान हमें प्रीतिऔरभक्ति सेवाकी इच्छा औरकर्ममेंमति॥३॥
यहीकरो प्रभु सुखदुःखमें कभी नभूलेंतुमको हम क्षण भरभी॥४॥

---

३३. होरी. (तर्ज़—मेरे तो तुमही)

प्रेम नगर की राह बनादो हे साधो ॥ टेक ॥
प्रेम नगर हीमें जाना मोको, सीधी राह दिखादो हे साधो ॥१॥
प्रेम नगर का औघट रस्ता, उसमें वने पहुंचादो हे साधो ॥२॥
प्रेमकेजलसेतनमनकनडोलूं, अवमेरीप्यास बुझादो हे साधो॥३॥
यह विश्राम प्रेम का चौरा, प्रेम ही में भरमादो हे साधो ॥४॥

---

३४. दोहे.

अति सुंदर कुलिन चतुर सुत्र ज्ञानी धनवंत ।
नरक कहेईं नानक, जिन मनि नहीं भगवंत ॥ १ ॥

तुलसी संतन ने सुनी, सत यही विचार ।
तन धन चंचल अचल जग, जग जग पर उपकार ॥ २ ॥

माला फेरे क्या भया, मन फाटी कर वार ।
दरिया मन को फेरे, जामें बसे विकार ॥ ३ ॥

जीऊ तील माहिं तेल है, जीऊं चकमक में आग ।
तेरा सांई तुझ में, जाग सके तो जाग ॥ ४ ॥

विनय करूं कर जोर के, सुनिये कृपानिधान ।
भक्ति भाव मोहिं दीजिये, दया गरीबी दान ॥ ५ ॥

संगत कीजे भले की, जो हरी करावे याद ।
ओछी संगत नीच की, आठों पहर उपाद ॥ ६ ॥

सत्य सदा जय करन है, झूठ पराजय होत ।
सत्य बढ़ावे कान्ति को, झूठ निरावे जोत ॥ ७ ॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे बड़ी खजूर ।
पन्छी को छाया ना मिले, फल लागे अति दूर ॥ ८ ॥

करत करत अभ्यास के, दुर्मति होत सुजान ।
रस्सी आवत जात हैं, सिल पर पड़त निशान ॥ ९ ॥

बार बार कर जोर के, विनय करें जगदीश ।
हम सब की रक्षा करो, तुम्हें निवावें शीस ॥ १० ॥

दया धर्म का मुल है, नरक मूल अभिमान ।
तुलसी दया ना छोड़िये, जब लग घट में प्राण ॥ ११ ॥

चिड़ी चुंज भर लेगई, नदी ना घटयो नीर ।
दान दिये धन ना खुटे, कह गये भगत कबीर ॥ १२ ॥

---

(२) साधुओं के जीवनसंबंधी भजन आदि.

जीवन संबंधी भजन.

१ भैरवी

ऐसी लाल तुझ बिन कौन करे।
गरीब निवाज गुसईया मेरे माथ छत्र धरे ॥ टेक ॥
जाकी छूत जगत् को लागे, ता पर तू ही ढरे ॥ १ ॥
नीचों ऊच करे मेरा गोविंद काहू ते न डरे ॥ २ ॥
नामदेव कबीर त्रिलोचन, सधना सेन तरे ॥ ३ ॥
कहे रविदास सुनो रे संता हरि जी ते सब ही सरे ॥ ४ ॥

२ माड धमाल (तर्ज—करो हरि का भजन)

वैद बुलाया वैदगी, पकड़ ढंढोले बांह।
भोला वैद न जाने, करक कलेजे मांह ॥ टेक ॥
जा रे वैद घर आपने हमरी आह न ले।
हम रूसे साहब आपने तू दवा किसकूं दे ॥ १ ॥
ऐसा वैद सुवैद तू पहिले रोग पछाण।
ऐसा दवा लाय लह जिते सबी रोग पलाण ॥ २ ॥
जावा वैद घर आपने जाने कायम कोय।
जिन करते दुख लाया, नानक लाहे सोय ॥ ३ ॥

३ गजल—धमाल (तर्ज—संगत सतन की)

वैद्य नब्ज क्या देखे, मुझे दिल की बिमारी है ॥ टेक ॥
कब तो तू कफरोग बतावे, कभी तासीर गर्मी की ।
जिगर का हाल तूं जाने नाहीं, तूं तो ही अनारी है ॥ १ ॥
प्रभु की मोहनी मूरत बसी, दिल बीच है मेरे ।
मन में चैन नहीं है तन की, खबर सारी बिसारी है ॥ २ ॥
असर करती कोई नाहीं, दवाई किमिया तेरा ।
बिना दीदार हरि के ही, मिटे नहीं बेकरारी है ॥ ३ ॥
अगर दिलदार को मेरे मिलावे, तूं कभी मुझसें ।
परमानंद गुण गान करुं मैं, सदा यादगारी है ॥ ४ ॥

---

४ भैरवी (तर्ज—प्रार्थना हो मेरी सग)

जिस कूं लागी सोई जाने, दूजा क्या जाने भाई ॥ टेक ॥
एका लागी बेका लागी, लागी सधन कसाई ।
बलख बुखारे कूं ऐसी लागी, छोड़ चले बादशाही ॥ १ ॥
नामा लागी सधन्ना लागी, लागी मीराबाई ।
पीपाजी कूं ऐसी लागी, पड़े समुंदर माई ॥ २ ॥
ध्रुव लागी प्रल्हाद लागी, लागी बिभीखन भाई ।
सुदामा जी कूं ऐसी लागी, कंचन पुरी रचाई ॥ ३ ॥
तीर न लागी तलवार न लागी, घाव नजर न आई ।
दास कबीर कूं ऐसी लागी दिल में राम जमाई ॥ ४ ॥

---

५. गज़ल धमाल.

हमन है प्रेम के माते, हमन सब्ती दिवाने हैं ।
खुशी का राह त्यागा है, कठिन में जा समाने हैं ॥ टेक ॥
नहीं कुछ माल की परवाह, किसी की मित्रता क्या रे ।
हमन जैसे फकीरों को, जगत की नेमता क्या रे ॥ १ ॥
बसें हम प्रेम की नगरी, जहां प्रीतम प्यारा है ।
चढ़े किश्ती सबूरी की, हमारा पंथ न्यारा है ॥ २ ॥
कियो हम दर्द का खाना, लियो हम भस्म का बाना ।
हमें बस प्रेम है भाना, किसी की मसलता क्या रे ॥ ३ ॥
करूंगा एक की पूजा, न जानू और को दूजा ।
वली का यो ही प्यारा है, कि जिस का यह पसारा है ॥ ४ ॥

६. भैरवी.

रुकमिणी बृज मोहे विसरत नईयां ॥ टेक ॥
शीतल जल यमुना के अचवन, और कदंम की छईयां छईयां ॥१॥
सकल सुवर्ण की बनी है द्वारिका, गोकुल समान बसईयां बसईयां॥२॥
एक बेर बृज फेर बसावो, सूरदास बल जईया जईया ॥ ३ ॥ ✓

७ खेमटा (तर्ज़—पुड़ी उड़ाके प्यारे मेरे.)

जिन के हृदय हरि नाम बसे, तिन और का नाम लिया न लिया ॥टेक॥
जिनके घर एक सुपुत भयो, तिन लाख कुपुत हुवा न हुवा ॥ १ ॥
जिनके द्वार पर गंग बहे, तिन कूपका नीर पिया न पिया ॥ २ ॥
तुलसी जिन परण गंह हरिके, तिन और की देव सिया न सिया ॥३॥

८. झिंझोटी—कव्वाली.

मने चाकर राखो जी ॥ टेक ॥
चाकर रहसुं बाग बनासुं, नित उठ दर्शन पासुं ।
बिंद्रावन की कुंज गली में, तेरी लीला गासुं ॥ १ ॥
चाकरी में दर्शन पाऊं, सुमिरण पाऊं खरची ।
भाव भगति जागीरी पाऊं, तिनो बाता सरसी ॥ २ ॥
हरे हरे सब बन बनासुं, बिच बिच राखुं बारी ।
प्रभुजी के दर्शन पाऊं, पहिर कुसुमित सारी ॥ ३ ॥
जोगी आया जोग करन को, तप करने सन्यासी ।
हरि भजन को साधू आयो, बिंद्राबन के बासी ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गहिर गंभीरा, हृदये रहोजी धीरा ।
आधी रात प्रभु दर्शन दीनो, प्रेम नदी की तीरा ॥ ५ ॥

९. भैरवी—त्रिताल. (तर्ज—सगत सतन की.)

बड़ी है राम नाम की ओट ॥ टेक ॥
शरण गये प्रभु काटी देत है, करत कृपा के ओट ॥ १ ॥
बैठत सभी सभा हरि जूं की, कोन बड़ो कौन छोट ॥ २ ॥
सुरदास पारस के परसे, मिटत लोह के खोट ॥ ३ ॥

१०. कीर्त्तन.

नाम महारस पियोनि सखियो, नाम महारस पीव ॥ टेक ॥
बिन रस चाखे बुड गई सगल, सुखी न होवे जीव ॥ १ ॥

मान महत न सरूत है कादि, साधा दासी यीन ॥ २ ॥
नानक से जन शोभावेंते, जिन मभु अपनों कीव ॥ ३ ॥

---

११. झिंझिट—एकताल. (तर्ज—दयामय हरि)

दीन बन्धु दिना नाथ मेरी सन हेरीये ॥ टेक ॥
भाई नाई बंधु नाहीं, कुटुम्ब परिवार नाहीं ।
ऐसा कोई मित्र नाहीं, जाके दिग जाईये ॥ १ ॥
सोने की सलैया नाहिं, रुपे का रुपैया नाहीं ।
कौड़ी पैसा गांठ नाहीं, जासे कछु लीजिये ॥ २ ॥
खेती नाहीं बारि नाहीं, बनिज ब्योपार नाहीं ।
ऐसा कोई सही नाहीं, जासो कुछ मांगिये ॥ ३ ॥
कहत मलुक दास, छोड़ दे पराई आस ।
राम धनी पायके, अब का की शरन जाईये ॥ ४ ॥

तुम भये तरुवर, मैं भई पंखिया ।
तुम भये सरवर, मैं तेरी मछीया ॥ १ ॥
तुम भये गिरिवर, मैं भई चारा ।
तुम भये चंदा, हम भये चकोरा ॥ २ ॥
तुम भये मोती प्रभु, हम भये धागा ।
तुम भये सोना, हम भये सुहागा ॥ ३ ॥
बाई मीरा के प्रभु, ब्रज के वासी ।
तुम मेरे ठाकुर, मैं तेरी दासी ॥ ४ ॥

---

१४. पिलू.

कैसी मधुर बांसरी, बजाई मोरे श्याम ने ।
तन की गत मोहे भूल गई, धुन आई मोरे काम में ॥ टेक ॥
गृह काज सब भूल गई, सुध ना रही मोरी ।
प्राण को मेरे खेंच गई, उसही की प्यारी छबी ॥ १ ॥
मीरांदासी वर मांगती, हे प्रभु कृष्ण चंद्र जी ।
हृदय धरो सभी सज्जनों के, छबी अपनी गोपाल जी ॥ २ ॥

---

१५. आसा. (तर्ज—असा नूं साहिब.)

प्रभु को पावे केवल प्रेम में ।
नां है ज्ञान में नां है ध्यान में, नाहीं कर्म कुल नेम में ॥ टेक ॥
नां है भारत नां है रामायण, नाहीं मनु ना है वेद में ।
नां है बाद मे नां है विवाद में, नाहीं मतन के भेद में ॥ १ ॥

नां है मंदिर मे नां है पूजा में, नाहीं घंटा की घोर में ।
हरिचंद प्रभु बांध डाले, एक प्रेम की डोर में ॥ २ ॥

१६. गजल.

प्रम में तेरे कोहे गम, शिरपे लिया जो हो सो हो ।
ऐसो निशात जिंदगी, छोड़ दिया जो हो सो हो ॥ टेक ॥
लाग की आग लग उठी, पुंबे तरहां से जलगया ।
रखते वजुदे जानो तन, कुछ न बचा जो हो सो हो ॥ १ ॥
अकुल के मद्रसे से उठ, इश्क के मैकदे में आ ।
जामे फना व बेखुदी, अब तो पिया जो हो सो हो ॥ २ ॥
इस मरीज को हे तबीब हात, तूं अपना मत लगा ।
राहे रजा पे छोड़ दे बाहिरे खुदा, जो हो सो हो ॥ ३ ॥
दुनिया के नेकी आबदि से काम, नेयाज हम कुं कुछ नहीं ।
जो आप से गुजर गया, फिर उसे क्या जो हो सो हो ॥ ४ ॥

१७. टोड़ी. (तर्ज—प्रीति प्रभु से.)

अब मैं कौन उपाय करूं ॥ टेक ॥
जेहें विध मनकी संशा चुके, भव नदी पार तरूं ॥ १ ॥
जन्म पाय कुछ भलो न किनो, ताते अधिक डरूं ॥ २ ॥
मन बचनसे हरि गुन नहीं गाये, यह जिया सोच धरूं ॥ ३ ॥
गुरुमत सुन कुछ ज्ञान न उपजो, पशुवत उदर भरूं ॥ ४ ॥
कहा नानक प्रभु बीद पछानो, तबहुं पतित तरूं ॥ ५ ॥

१७. टोडी. (तर्ज—प्रीति प्रभु से.)

अब मैं कौन उपाव करूं ॥ टेक ॥
जेहिं बिध मन को संशा चुके, भव नदी पार तरूं ॥ १ ॥
जन्म पाये कुछ भलो न किनो, ताते अधिक डरूं ॥ २ ॥
मन बचन से हरि गुन नहीं गाये, यह जिया सोच धरूं ॥ ३ ॥
गुरुमत सुन कुछ ज्ञान न उपज्यो, पशुवत उदर भरूं ॥ ४ ॥
कहो नानक प्रभु बिरद पछानो, तबहुं पतित तरूं ॥ ५ ॥

१८. पिलू. (तर्ज—बिसर गई सब)

बीत गये दिन भजन बिना रे ॥ टेक ॥
बाल अवस्था खेल गंवाई, जब ज्वानी तब मान किया रे ॥ १ ॥
लाहे कारण मूल गंवायो, अजहूं न मिटी मेरी मन तृष्णा रे ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, पार उतर गये सन्त जना रे ॥ ३ ॥

१९. माड. धमाल. (करो हरि का भजन.)

छिमा हमारी माता कहिये, संतोष हमारा पिता ।
सत्त हमारा चाचा कहिये, जिन संग मनुवा जीता ॥ टेक ॥
सुन लालू गुण ऐसा ।
समझे लोक बंधन के बाधे, सो गुण कहिये कैसा ॥ १ ॥
भाव भाई संग हमारे, प्रेम प्रीति सों बेटा ।
धीय हमारी धीर्ज बनाये, ऐसा संग हमारा ॥ २ ॥
बाल हमारी संग सहेली, मत्त हमारी चेली ।
यह कुटुंब मेरा कहिये, श्वास श्वास हमारे सेली ॥ ३ ॥

नाच हो के अरपन में, मग्न मगन हो नृत करें ॥ ३ ॥
कहे नन्ददास, सुनले प्यारे, जान भगवन्की युक्त यूं के ।
पहावें ऐसी अवस्था में हि, सदाहि हम दूर रहें ॥ ४ ॥

---

२२. अभंग.

कैसे करूं ध्यान, करूं कैसे दर्शन ।
देवो मर्म दान, तूं ही देवा ॥ टेक ॥
कैसे करूं भक्ति, कैसे करूं सेवा ।
कौन भाव से हम, पावें तुम्हें ॥ १ ॥
कैसी कीर्ति वर्णू, कैसा ध्यान करूं ।
हे प्रभु कैसे, जानें तुझे ॥ २ ॥
कैसे गावें गीत, कैसे ध्यावें चित्त ।
कौन स्थिति मति, बता देवो मुझे ॥ ॥ ३
तुका कहे जैसे, दास किये देवा ।
अनुभव करावो मुझे हे देवा ॥ ४ ॥

---

२३. काफी—धमाल. (तर्ज—प्रभु मैं तुम पर.)

फागुण के दिन चार रे, होलि खेल मना रे ।
बिन करताल पखावज बाजे, अनहद की झनकार रे ॥ टेक ॥
बिन सुर राग छत्तीसों गावै, रोम रोम रंग सार रे ।
शील संतोष की केशर घोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे ॥ १ ॥
उड़त गुलाल लाल भये बदरन, बरसत रंग अपार रे ।
घट के सब पट खोलो भाई, लोक लाज सब डार रे ॥ २ ॥

होली खेल प्यारी पिया घर आये, सोई प्यारी पिय प्यार रे ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल बलिहार रे ॥ ३ ॥

२४. गज़ल धमाल. (तर्ज़—अगर है प्रेम)

हमन आशक दिवाने हैं हमन को होशदारी क्या ।
रहे आजाद ए जग में, हमें दुनिया से यारी क्या ॥ टेक ॥
न पल बिछुड़े पिया हमसे, न हम बिछुड प्यारे से ।
हमारा प्यारा है हम में, हमन को बेकरारी क्या ॥ १ ॥
जहांमें नाम अपने को, बहुत सब सिर पटकते हैं ।
में हूं गुरुज्ञान में शामिल, मुझे फिर नामदारी क्या ॥ २ ॥
जो पीवे प्रेम का प्याला, जिकर ओर फिकर क्या चाहिये ।
जो जानत है सकल पद की, उसे जाहिर पुकारा क्या ॥ ३ ॥
कबीरा जात का टुकड़ा, गहीं डार दी सिर से ।
क चलना राह नाजुक है, हमें सिर बोझ भारी क्या ॥ ४ ॥

२५. कीर्त्तन. (तर्ज़—तूंहै तूंहै तूंहै रे.)

राम हे राम है राम हे रे, मेरे हृदे कमल में राम है रे ॥ टेक ॥
इस पासे गंगा उस पासे जमना, बिचमें गोकल एक गाम है रे ॥१॥
हृदय वन में रास रचायत, खेले पखेले एक शाम है रे ॥ मेरे ॥ २ ॥
मीराबाई कहे प्रभु गिरधर नागर, अमृत पीने की मुझे आश है रे ॥३॥

२६. भैरवी. (तर्ज—रुकमिणी ब्रज मोहे.)

पतितन को पावन कीजे, तुम बिन कछुहु न सूझे हो ॥ टेक ॥
जो जो आय शरण तिहारे, ताहे प्रेम सुख दीजे हो ॥ १ ॥
राखो लाज बिरदबाने की, मोहे अपनो कर लीजे हो ॥ २ ॥
मानपुरी प्रभु अधम उधारन, पलपल यह तन छीजे हो ॥ ३ ॥

---

२७ काफी. (तर्ज—एक भरोसा.)

मन तन तेरा धन भी तेरा, तूं स्वामी ठाकुर प्रभु मेरा ।
जीव पिण्ड सब रास तुम्हारी, तेरा जोर गोपाल जी ॥ टेक ॥
सदा सदा तू है सुखदाई, निवों निवों लागा तेरी पाई ।
कार कमावा जे तुध भावे, जो तूं दे दयाला जी ॥ १ ॥
प्रभु तुम ते लीना तू मेरा गहना, जो तूं दे सो सुख सहना जी ।
जिथे रखे बैकुण्ठ तियाई, तू सबना के प्रतिपाला जी ॥ २ ॥
सिमर सिमर नानक सुख पाया, आठ पहर तेरे गुण गाया ।
सकल मनोरथ पूरे होए, कदे न होय दुखाला जी ॥ ३ ॥

२८. दोहे.

चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय ।
दो पाटन के बीच में, साबत रहा न कोय ॥ १ ॥
सुनो कबीर लोई कहे, किले सो लिव लाय ।
दो पाटन के बीच में, तो सारा बच जाय ॥ २ ॥
साईं सत सतोष दे, भाव भगत तहिं दास ।
सिधक सबूरी साध दो मांगे दादू दास ॥ ३ ॥

प्रेम दिवाने जो भये, नेम धर्म गयो खोय ।
सहजु नरनारी हंसे, वा मन आनंद होय ॥ ४ ॥
नामा कहे तिलोचना, मुख से राम समाल ।
हाथ पाउं कर काम सब, चित निरंजन नाल ॥ ५ ॥
जो आवे संत संग में, जाति वर्ण कुल खोय ।
सहजु मैल कुचल, जल मिले सुगंगा होय ॥ ६ ॥
सहजु दर्शन साध का, दो नयनों भरि लेह ।
तहं ताप मिटि जायंगे, शीतल होगी देह ॥ ७ ॥

---

(२) विशेष भजन.

१. गजल—त्रिताल. (तर्ज—जगदीश ईश.)

धन्य दीनानाथ, प्रभु स्वामी हो हमारे ।
करके आकर्षण लिया, मुझे खेंच अपने द्वारे ॥ टेक ॥
पाप सागर के निकट में, खड़ा था गिरने को अब ।
दया पकड़ मेरी ले गये, निज धाम में उबारे ॥ १ ॥
पाप से घेरा था मैं, दिन रात इस संसार ।
अब तो आशा हो गई मेरी, बेडूंगा शरण तुम्हारे ॥ २ ॥
अब तो कुछ भी कहना नाहीं, धन्यवाद बिना तुम्हारे ।
धन्य धन्य स्वामी जी! मेरे, तुमहीं मुझ को उद्धारे ॥ ३ ॥

---

२. कसूरी. (तर्ज—सुकृत करले राम.)

हरि पर राखो भरोसा भाई ।
काहे सोच करे दिन राती, रहौ चरण लो लाई ॥ टेक ॥
गर्भ मे जी सुध अबलु ले है, जब नहीं दांत सो अब भी नहीं है ।
दांत दिये जिन अन भी देहै, कब सुध है बिसराई ॥ १ ॥
सुख कहा सोच से लेगा, और ताप संताप सहेगा ।
तन जिन दिया वह पर धन देगा, रीत सदा चलि आई ॥ २ ॥
तोहे सोच बस अपने एक का, हरि रक्षक ब्रह्मांड अनेक का ।
बिरला चले मारगही विवेक का, धीरज मेहर उपजाई ॥ ३ ॥

३. वनजारा. त्रिताल. (तर्ज—प्रभु कैसा है अपरंपारा.)

प्रभु तुम कैसे दीन दयाल,,तुम कैसे दीन दयाल ॥ टेक ॥
मीन रहे पानी के भीतर, पशु फिरे धरती के ऊपर ।
पक्षी उड़े हवा के अंदर, सब के तुम रखवाल ॥ १ ॥
अजगर नहीं किसी के पाकर,, पंछी काम कर नहीं मिलकर ।
मनुज आश का तुम पर निरभर,, सब के तुम रखवाल.॥ २.॥
चार पदारथ के तुम दायक, प्रतिपालक सब भांति सहायक ।
हे स्वामी नायकन के नायक, तुम सम कौन कृपाल ॥ ३ ॥
दया दृष्टि कृपा निधि कीजे, माया मोह कपट हर लीजै ।
भक्ति दान मेहर को दीजे,.हों अत्यंत निहाल ॥ ४ ॥

४. गजल.

मुझे दास चरणों का, अपने बनाओ ।
छवि सुंदर सुघड़ई की, अपनी दिखाओ ॥ टेक ॥

कोई और श्रय हो न, दिलदार मेरी ।
मुझे नाथ अपना ही, सेवक बनाओ ॥ १ ॥
तुझ से हो मेरी प्रीति, गहरी दिनों दिन ।
प्रेम की प्रभु अपनी, धारा बहाओ ॥ २ ॥
बढ़ाओ मेरी अपने, चरणों से प्रीति ।
तुम्हि ऊंच भावों में, मुझ को बिठाओ ॥ ३ ॥

---

५. जोगी. एकताल. (तर्ज प्रभु बिना में.)

मेरे दिलका मालिक तुहीं हो तुहीं हो, तुहीं एक रहत तुहीं जिन्दगी हो ॥टेक॥
मेरा जिस्म दुनियामें रहता कहीं हो, हो बिमार या के सलामत सही हो ॥१॥
पर हरजा मेरी आस तुझसे लगी हो, तेरे बिन न कोई मेरा दिलदार हो ॥२॥
हो गरमी या सरदी या बारिश झड़ी हो, हो पर्वत समुंदर या नाला नदी हो॥३॥
शहर जंगल महल या झोंपड़ी हो, लगन एकही तुझसे मेरी लगी हो ॥४॥
दौलत मेरे पास हो या मुफलसी हो, रखता कोई बैर या दोस्ती हो ॥५॥
हो उमदा खाना या फाकाकशी हो, तुझी एक में रूह मेरी रम रही हो ॥६॥
हो इज्जत या के बेइज्जती हो, खुशी हो मुसीबत या आकन्दगी हो ॥७॥
न तुजसे मेरी बेवफाई कभी हो, वही हो खुदा जिसमें तेरी खुशी हो ॥८॥

---

६ गजल—धमाल (तर्ज—करो हरि का)

फकीरी में मजा जिसको, अमीरी क्या बिचारी है ॥ टेक ॥
फिकर सब तजे दुनिया के, भय सब दुःख के छुटे ।
सदा ही एक में वासा, याद प्रभु की पियारी है ॥ १ ॥

नहीं नोकर किसी जन के, न दिल मे लालसा धनकी ।
सबूरी धारकर मन में, गृहवासी, विहारी है ॥ २ ॥
मिला सत्संग संतन का, चले निजज्ञान की चरचा ।
पिछाना रूप अपने को, दुर्गति दूर टारी है ॥ ३ ॥
सभी जग जीवसें प्रीति, बराबर मान अपमाना ।
परमानंद पुरण में, मगन दिन रैन सारी है ॥ ४ ॥

---

७. आसा.

मेरो मन रम रह्यो राम संग, रम रह्यो राम संग ॥ टेक ॥
कैसे मधुर रस पी रह्यो है, उछत आनंद तरंग ॥ १ ॥
विविध लीला की लहिरें लगत है, बरखूं कैसे रस रंग ॥ २ ॥
रोम रोम मेरे तन मन अदर, नाचत गावत उमंग ॥ ३ ॥
अपरूप भावों से भर कर मेरा, प्राण भयो अब दंग ॥ ४ ॥
रमत हुं राम मे राम मुझी में, धन्य धन्य यह प्रसंग ॥ ५ ॥

---

८. बरहस धमाल. (तर्ज—चलो मन हरि.)

संदेशा केशव इक लाया, जिसने नवविधान बताया ॥ टेक ॥
चार खंड के महा पुरुषों का, ज्ञान विविध है गाया ।
ब्राह्मधर्म को नूतन करके, एक ईश ब्रह्म जपाया ॥ १ ॥
भेदाभेद छुडा के सब का, हरि रस प्याला पिलाया ।
बलिहार जाऊं उन के ऊपर, जो सीधा रस्ता बताया ॥ २ ॥

---

९. गजल (तर्ज—हृदय में बस रहा.)

या रब तेरी ज्नाब में हर्गिज कमी नहीं ।
तुझसा जहान के बीच तो, कोई धनी नहीं ॥ टेक ॥
जो कुछ की खूबीया है, सो तेरी जात में ।
तेरे सिवाय ओर तो, कोई धनी नहीं ॥ १ ॥
आसी की अर्ज तुझसे है, तुं सुन ले ऐ गनी ।
अपने फज़्ल के गंज से, तूं कर मुझे धनी ॥ २ ॥

१०. कीर्त्तन.

किसने मुझे यह देही दीई है, जिसके भीतर प्रिय प्राण रख्या है ।
सभ तरह की शक्ति दीई है, वह जग की जननी ॥ टेक ॥
सदा मेरी वो रक्षा करत है, पल पल में मेरी सुध लेवत है ।
सभ तरह से सुखी करत है, वह मेरी जननी ॥ १ ॥
आनंद से मुझे खेल करावे, लीला दिखाकर मन हर्षावे ।
माता पिता से प्यार करावे, मेरी वोही जननी ॥ २ ॥
दिखावे सुपथ अंदर रही, कुपथ चलुं तो होता दुःख ही ।
आज्ञा मानुं तो होता सुखहीं, हे मेरी जननी ॥ ३ ॥
दया तेरी का कैसे हो वर्णन, उपकार करती हो तूंही छिन छिन ।
करूं धन्यवाद तेरा मैं निशदिन, हे मेरी जननी ॥ ४ ॥

११. झिंझिट. तर्ज—संगत संतन की.)

मेरी तो लगन लगी हर से, प्रीत एक जादूगर से ॥ टेक ॥
मन मोहन ने मन मोह लीना, मन मोहनी मन्तर से ।

प्रेम का पानी पच कर पुष्प पर, डार दिया ऊपर से ।
(ज्यों अमृत धारा तर से,) (मेरी तो लगन लगी हर से) ॥ १ ॥
मेरी तो लगन लगी एक हर से, वृक्ष लता फुलों से ।
रंग बरङ्गी मनोहर लीला में, एकोऽहं हरि दरसे ।
(देखुं मैं चाहे जिधर से,) (बाहर भीतर की नजर से ॥ मेरी ॥ २ ॥
मेरी तो लगन लगी एक हर से, सखी आखूं मैं प्रेम से ।
मैं तो पिया की प्रेम दिवानी लजवाँ हुं मैं दिल से ।
(प्रेम जीवन के पथ से,) (मिलूं अपने परमेश्वर से) ॥ मेरी ॥ ३ ॥
मेरी तो लगन लगी एक हर से, सखी चलो अमर हो वांह से ।
पाप को त्याग पवित्रता पकड़ो, मिल के अजर अमर से ।
(चूकें नहीं अब इस अवसर से,) (लोटें नहीं प्रेमनगर से) ॥ मेरी ॥४॥

---

१२. वरहंस—धमाल. (तर्ज—चलो मन.)

देखो रे प्यारे संभल संभल पग धरियो ॥ टेक ॥
साथी खोटे कपट करेंगे, इनका साथ न करीयो ।
लोभ मोहादि कांटे नोकीले, जन इन बीच मे न फसीयो ॥ १ ॥
विषय वासना आंधी सी आवे, वाको पीठ दे रहीयो ।
माया धन बहु सर्प है भाई, देख देख डग चलियो ॥ २ ॥
परम पिता की सेवा करलो, इस बिन नाहीं उबरीयो ।
भवभय भजन पाप निकंदन, प्रभु को साथी करीयो ॥ ३ ॥
इष्ट देव अरु मुख्य वही है, वाही चरण चित लिजीयो ।
अतुल प्रेम रस मस्त हो यारो, ब्रम्हानंद में रहीयो ॥ ४ ॥

---

१३ कीर्त्तन—खयरा

केशव चरित्र, परम पवित्र, मूर्त्तिमान् नूतन विधान ।
नव वृंदावन, प्रेमर मिलन, यथाय ईश्वर विराजमान ॥ टेक ॥
सक्रेटिश ईशा मूशा ओर भक्त प्रधान ।
जनक गौतम आदि नरोत्तम सबाकार मिलनेर स्थान (केशव जीवनेर) ॥१॥
महायोग महाज्ञान एकाधारे वर्तमान ।
उदारहृदय, सर्वतीर्थमय, धर्म्म समन्वय समाधान ॥ २ ॥
जार संगे कत लीला, करिलेन भगवान् ।
सेई साधुसंग, निगूढ़ कथन, ह'ये थाकि जेन एकप्राण (हे दयामय हरि ॥३॥

---

१४. आलेया झांपताल. (तर्ज—तुमको हीं किया.)

हरि के भक्त जन प्यारी बड़ी मुश्किल से मिलते हैं ।
न कहते हैं न सुनते हैं नहीं दिल जिनके हिलते हैं ॥ टेक ॥
कहीं प्रल्हाद ने भक्ति तनोमन धन को वारा है ।
नहीं विश्वास को छोड़ा असुर सब देख जलते हैं ॥ १ ॥
न खाने से न पीने से नहीं कुछ नींद से हासल ।
नहीं है शोक दुनिया का तेरी भक्ति से पलते हैं ॥ २ ॥
दुखाते हैं न उनको भी जो आते जाय पासे मे ।
भरे प्रेम से दिल जिनके वह चाँद समान चलते हैं ॥ ३ ॥
प्यारी कर साफ दिल अपना तभी प्रीतम मिलते हैं ।
सफाई बिन नहीं मिलती यह रहते दिल के दिल पे हैं ॥ ४ ॥

---

१५. कालंगड़ा. (तर्ज़—मन तृप्त हो तूं.)

साफ दिल होके जो करता है मुहब्बत मेरी ।
रात दिन रहता है उस दिल में, स्थितता मेरी ॥ टेक ॥
आंख दिल की खोल के जो, लोग मुझे देखते हैं ।
दिल में रखकर रात दिन मुहब्बत मेरी ॥
उनको हर शैमें मज़र, आती है ज्योति मेरी ।
जरें जरें से नज़र आती है, क़ुदरत मेरी ॥ १ ॥
क़ुर्बान हो जो मुझ पे, मैं उन पे क़ुर्बान हूं ।
सदा सुखी रहते हैं वो गोद में मेरी ॥
खुद फ़ना होके जो मिल जाये मुझ से कभी ।
जान सकता है वही, सच्ची हकीक़त मेरी ॥ २ ॥

---

१६. काफी. (तर्ज़—सफल यह विश्व है.)

प्रेम ने रास्ता मेरे, जीवन का ही पलटा दिया ।
क्या मैं बनना चाहता था, मुझे अब क्या बना दिया ॥ टेक ॥
इच्छा थी दिल में दुनिया की, दौलत ही मैं जोड़ रहूं ।
जो दुख है दौलतमंदों का, मुझे उसने दिखा दिया ॥ १ ॥
नेक नामी का था भूखा, देखकर उसने मुझे ।
प्रेम की एक घूट से इस, भूक को भी मिटा दिया ॥ २ ॥
खुद पसंदी खुदरवी, खुदबीनी से मुझे निकाल ।
नम्रता अधीनता की, खाक पर बिठला दिया ॥ ३ ॥
पहले था बेयकीनी की, गली में रहना मेरा ।
मन ने विश्वास के, कूचेमें ला बसा दिया ॥ ४ ॥

उड़ती थी स्वार्थ की आ खाक, दिल के खेत में मों।
शान्त के जल का छींटा, प्रेम ने है बरसा दिया ॥ ५ ॥
जावन का है जीवन वोही, तूं दिल से कर उसी से प्रेम।
प्रेमने विश्वासी को, मूल मंतर सिखा दिया ॥ ६ ॥

१७. टोडी. (तर्ज—प्रीति प्रभु से.)

पार नहीं तेरा प्रभुजी पार नहीं तेरा।
कितनी दया करा जीवन में, करो हृदय डेरा ॥ टेक ॥
मरने पर भी छाडत नाहीं, साथ देत मेरा।
धर्म ज्ञान बलदके करत, आनंद बहुतेरा ॥ १ ॥
जीवन आशा पूर्ण किया प्रभु, दया दृस्त फेरा।
नवविधान में लाया किया प्रभु, धन्य जीवन मेरा ॥ २ ॥

१८. जोग.

अंदर है अखुट भंडार, ढूंढ तूं अपने हृदय में।
सहज भाव से मिले भंडार, देख तूं अपने हृदय में ॥ टेक ॥
मागेशा आश जो है, अंदर में, रख आश उस दिल दर्पण में।
मिला है अब यह कर, विश्वास, करो शुकराना वारंवार ॥ १ ॥
है रखा सब सुख-तेरे अंदर में, मग्न रह तूं, मनमंदर में।
दे रहा है प्रभु सुख भंडार, लेलो दिल के हाथ पसार ॥ २ ॥
ब्रह्म कल्पतरु तेरे, अंदर में, काम है तेरा लेना अंदर में।
शांतिसे कर पलपल नमस्कार, सफल जीवन होगा यह बार ॥३॥

१९. छोटा दशकुशी. (तर्ज—ब्रह्मध्यान ब्रह्मज्ञान.)

शुद्ध सत्य चिद्घन निरंजन निरंजन, निष्कलंक पुण्यका आधार ॥टेक ।
पतितजन पावन, पाप संताप नाशन, अधम तारण निर्विकार ।
(हम जितने नरनारि,—तुमरे शरणार्थ में) अधम ॥ १ ॥
विनाश करन पाप भार, करने को और उद्धार, जगमें भेजे हो साधुगण
करें सिमरण अपरास, व्याकुलता से करें नाद, लेटें पड़े तव चरण ॥
(गाते करो, करो बोले) लेटेपड़े ॥ २ ॥

---

२०. आसा.

तुमही दया का भंडार स्वामी, कृपा करी तूं बलिहार स्वामी ॥ टेक ॥
शरण आये की लज्जा रखें तूं, दीनन दुखीयन की सुध लेवे तूं ।
निरधनियों का तूं सहकारी स्वामी ॥ कृपा ॥ १ ॥
माता गर्भ में रक्षा करे तूं, निद्रा समय में हि हाथ राखें तूं ॥
संकट में तूं ही आधार स्वामी ॥ कृपा ॥ २ ॥
तूंही सभी को रोज़ी खवावे, मेघ दया का सब पे बरसावे ।
दाता सभी का तूं हितकर स्वामी ॥ कृपा ॥ ३ ॥
महिमा पिता है तेरी अपारा, पाय सकें नहीं भेद तुम्हारा ।
सारी सृष्टि तेरा परिवार स्वामी ॥ कृपा ॥ ४ ॥
देवा दयालु सिर हम झुकावें, नित नित पिताजी तुमको ही ध्यावें ।
करुणा नयन से निहारो हे स्वामी ॥ कृपा ॥ ५ ॥

---

२१. आलेया. झापताल. (तर्ज—ब्रह्मानंद केशवचंद्र.)

यह ब्राह्मधर्म मेरे जीवन में, प्रभु होय सदाही मूर्तिमान ।
अब योगभक्ति सेही ज्ञान मिले, अरु कर्म्म मिलाके हों समान ॥ टेक ॥

यह विश्व सर्व तेरा मन्दिर है, प्रभु होय यहांही दर्शपान ।
अब ब्रह्म ध्यान तेरा तीरथ हो, अरु नित्य सत्यको शास्त्रज्ञान ॥ १ ॥
अब धर्ममूलही विश्वास गिनो, अरु साधन प्रीतिकाही आन ।
अब स्वार्थ त्याग हो बैराग यहों, प्रभु दास बनो हो सावधान । २ ॥

२२. काफी.

तेरा तुझमें है अंदर राम, क्यों देश देशांतर भटके ॥ टेक ॥
अंदर काबा किबला अंदर, अंदर मसिजिद मंदर अंदर ।
अंदर तुझ में रमत है राम, इधर उधर क्यों बाहर भटके ॥ १ ॥
अंदर ब्रह्मा विष्णु अंदर, अंदर शंकर शशिधर अंदर ।
अंदर मे है राबहि खान, क्यों नहीं मन की वृति मोड़े ॥ २ ॥
अंदर सूरज चंदर अंदर, अंदर जमना गंगा अंदर ।
अंदर तेरे अड्सठ धाम, तीर्थको और कहां तूं ढूंढे ॥ ३ ॥
अंदर योगी जोग लगावत, अंदर दिल में धुनी दुखावत ।
"अलच" बुलाके सुबह और शाम, क्यों नहीं मन की माला फेरे ॥४॥

२३. काफी.

आत्मा पखी प्रभु देश का, अपना आप तूं जान ॥ टेक ॥
प्रभु जब सर्वव्यापी है रे, जीव उस बिन कोई खाली नहिं रे ।
सब संतान उसीका है रे, फिर क्यों होता तूं हैरान ॥ १ ॥
आत्मा पखी तूं अमर है रे, मन तन का प्रभु संबल है रे ।
प्रभु तेरी पल पल रत्ता करे रे, फिर क्यों न धरत ईमान ॥ २ ॥
सच्चे धंधे में कर गुजराना, प्रभुजीका कर नित्त शुकराना ।
न हो गाफिल अरु दिवाना, प्रेम भक्ति से हो मस्तान ॥ ३ ॥

२४ सारंग—एकताल. (तर्ज—जो कोई इस विध)

आओ आओ भाई बहिनो सबही, प्रभु का ही भजन करो हाँ करो ।
नीच मलीन सब ख्याल छोड़के, मन को मस्त करो ही करो ॥ टेक ॥
हरि ही केवल शांति निकेतन, उसकी शरण पड़ो ही पड़ो ।
हरि रस अमृतरूपी बाणी, पल पल पान करो ही करो ॥ १ ॥
प्रभु प्यारे के चरण कमल में मन चित्त प्राण जोड़ो ही जोड़ो ।
प्रेम से सेवा करो प्रभुकी, भ र से हृदय भरो ही भरो ॥ २ ॥

२५ काफ़ी सितार (तर्ज—एक पुरातन पुरुष)

अब ध्यान धरो साक्षात हरि का, जिसका किया हम पूजन है ॥टेक ॥
पवित्र हृदय में परम देव का, निरखा रूप निरंजन है ।
प्रम भाव से गद गद होकर, देखा वो पुरुष सनातन है ॥ १ ॥
दिव्य दृष्टि का भिक्षा मांगो, धन्यवाद करो अर्पण है ।
डूब डूब के उनकी सत्ता में, सफल करो अब जीवन है ॥ २ ॥

२६. तिलंग

जब तक देही में है प्राण, सदा तु राम कह कह कह ॥ टेक ॥
होवें दूर बन्धन परिवारी, सच्चे सत नाम की बाणी ।
पीओ हरिनाम का पानी, सतान जिससे होवे बहु बहु ॥ १ ॥
सच्चे सतनाम बिन प्यारा, सब है अधाई अंधकारा ।
लग जिसे नाम धन प्यारा, होवें उसे दु ख सउ सउ सउ ॥ २ ॥
निशिदिन तुम जपो हरिनाम, उठे बैठे सिमर सत्त नाम ।
जपो तुम राम सुख पाओ, होवे न कोई भउ भउ भउ ॥ ३ ॥

पल पल राम ध्याओ तुम, लगाओ प्रेम हरि से तुम ।
मन का भ्रम मिटाओ तुम शरण प्रभु की तू पड पड पड ॥ ४ ॥

२७ कीर्तन. (तर्ज—मैं तो अच्छी)

कृपाकरो मेरे दीन दयाला ॥ टेक ॥
शर सदा में लिया है तुम ने, अपने पुराय की लगादो ज्वाला ॥ १ ॥
पाप ख्याल सब जल भुन जावे, जग सारा हो जावे निहाला ॥ २ ॥
देवता गण सारे खुश होवें, हम भी नाचें नाच निराला ॥ ३ ॥
तेरे नाम की जय जय करके, अमृत पीकर हावें मतवाला ॥ ४ ॥

२८ लावनी—अजब बनी तेरी जिंदगानी

हे जगत् स्वामी प्रभु जी, भेंदधरू क्या मैं तेरी ॥ टेक ॥
माल नहीं मेरे सपद नाहीं जिसको कहूं मैं मेरी ।
इस जग में हम ऐसे बिचरें, जोगी करें जो फेरी ॥ १ ॥
धनजन यौवन अपने माने, मूरख भूला भारी ।
तुझ बिन और सहाय न मेरा देख लिया मैं विचारी ॥ २ ॥
यह तन मन होय न अपना, है सब माल तुम्हारा ।
अब चाहे सभी तूं लेवे, नहीं कुछ जोर हमारा ॥ ३ ॥
तुमरे दरकी मैं कूकर स्वामी, लाज तुझे है मेरी ।
धर्म शर्म निज अर्पण करके देओ भक्ति मुझ बिन देरी ॥ ४ ॥

२९. आलैया—झांपताल.

ब्रह्मानंद केशवचंद्र, आदर्श भक्त जीवन ।
सन्मुख उनके रहने से, नहिं निराशा न रोदन ॥ टेक ॥
योग भक्ति कर्म ज्ञान, है सम्मिलित वर्तमान ।
जाग्रत अंतर उनके, है सदा आत्मदर्शन ॥ १ ॥
चरित्र उनका है अमर, आनंदमय उदार ।
उत्साह के हैं अवतार, जैसे अनंत अगन ॥ २ ॥
पथ पे हम उन्हींके चलें, विश्वास पै निर्भर करें ।
मोह पाप दूर करें, हम पावें अमर भवन ॥ ३ ॥

३०. बाहार. एकताल.

दीपक तुम्हारा प्रेम, अब लो एक क्षण में ।
रहें कहां संसार शोक, घोर विपद सामने ॥ टेक ॥
सूर्य उदय आधार जैसे, तुरत तमस छोड़ जाय ।
तैसे हि तुम्हारी ज्योति, मंगलमय विराजे हृदय ।
भक्त हृदय जाय शोक, तुम्हारे मुख सामने ॥ १ ॥
तुम्हरी करुणा तुम्हरा प्रेम, हृदय प्रभु भावने ।
बहत प्रेम अश्रु वारि, रोके कौन निवारिये ॥
जय करुणामय जय कल्याणमय, तुम्हारा गुण गाइये ।
जाय यदि हमरा माथ, तुम्हरे चरण सामने ॥ २ ॥

३१. तिलंग. (तर्ज—करो ध्यान सदा.)

कैसी तुम्हरी दया अनुपम ॥ टेक ॥
हम सब के मंगल के कारण, कीनी अद्भुत [illegible]

सब जन मेरे, बन गये पालक ।
हुए प्राण सखा बने रक्षक ॥ ३ ॥
कहे तुकाराम खेलत हूँ मौज मे ।
मिला सुख तेराही अंदर बाहिर में ॥ ४ ॥

३७ पद च्याल साधी.

जीवन सबल तुमहीं, तुमहीं एक प्राणाधार ।
तुम बिना दिल बन्धु, सबही असार ॥ टेक ॥
दैव सम्पद के हो तुमहीं, एक मात्र मूल आधार ।
प्रेम विश्वास पवित्रता, आनंन्द भाव के तुम भण्डार ॥ १ ॥
आत्मा की जिन्दगी के, एक तुमहीं हो आहार ।
तुम्हे छोड़ आत्म नाश, जीवन का नाहीं निस्तार ॥ २ ॥

३८. काफी. (तर्ज—जय जय हरि.)

प्रीत मेरी है अतिही, प्रभु मिलन वास्ते ।
प्रभु मिलन वास्ते, प्रभु दरश वास्ते ॥ टेक ॥
तूं तो मेरा प्राण सखा, कैसे तुम्हे छोड़ रहूं ।
पल पल मेरी दिल है आकुल, तुम्हें देखन वास्ते १ ॥ ॥
दया तेरा है बहुत, हम सभी के वास्ते ।
हर दम तेरा ध्यान धरुँ, आशीश लेने वास्ते ॥ २ ॥
विशाल संसार है तेरा परिवार, कैसे करें इसे धिक्कार ।
लगाऊं मैं प्रीत इसमें, आज्ञा पालन वास्ते ॥ ३ ॥
संसार सुंदर तेराही मंदर, है हमारे वास्ते ।
रहें मगन करे भजन, प्रेमी होन वास्ते ॥ ४ ॥

३९. जिल्हा—कवाली.

सो नर हान छिनमें प्रेमियोंके प्रेम से हरा ॥ टेक ॥
जाकों पाईबेके काज, जपी, तपी, ऋषि राज ।
अविचल समाधी साज, ध्यान रह धरी ॥ १ ॥
माप्त करन जोहि रत्न, ज्ञानवान कर प्रयत्न ।
ज्ञान सिंधु करत मथन, वह बेठ हर घड़ी ॥ २ ॥
पाईबेको परमआतुर, राज्यमान्य राजेश्वर ।
योग साधना रहे कर, राज्य परिहरि ॥ ३ ॥
तत्वज्ञानी तत्व तार, कवि जन जा रवि पार ।
शोधत गए हार, "नेति नेति" उच्चरी ॥ ४ ॥
भ्रम प्रेम मात्र है उपाय, उनको सहायक बनाय ।
जिनसे तर जाय बिकट, भव जल लहरी ॥ ५ ॥

४०. जोग.

एक तूंहि आधार, तुम बिन कोई न दीखें और ॥ टेक ॥
सबका स्वामी अन्तर्यामी, सृष्टि सृजन हार ॥ तुम ॥ १ ॥
माता पिता तुम सबका ही मालिक, प्रभु तूं पालनहार ॥ तुम ॥२॥
तूं चिंता निरंजन भय दु:ख भंजन, करत कृपा हैं करतार ॥ तुम ॥३॥
दया दृष्टि हे तुमरी हे दाता, तूंहि दयालु दातार ॥ तुम ॥ ४ ॥

४१. येमन, त्रिताल. (तर्ज—प्रार्थना हि मेरी.)

भले बुरे ख्याल बेवत हो जेस ।
आवेंगे बन कमकार ही वैसे ॥ टेक ॥

कामों के करत आदत पड़ती, आदतही फिर स्वभाव बनाती ।
फिर भाग है बनता स्वभाव से ही, शुभ ख्याल तुम राखो तबही ॥ १ ॥

४२. रायढ़ा (तर्ज—नित्य नए सुर.)

तुम खंडित भारत में विशाल भारत, स्थाप किये यह मन ।
(है तब तो बुलाओ—सब भाई भाई कर एकही ठाई ॥ है ॥
तभी कर्म के भीतर नुतन सजाकर, किया नवधर्म स्थापन ।
(आपही ने किया) नवधर्म स्थापन ॥ टेक ॥
जहा है पुराना बाद तुम फिरसे, बाधोगे नुतन घर ।
(एसा न हो तो कैसा होगा—महामिल समन्वय ॥ न हो तो ॥
(हम होंगे सबक सब ही हमार, नहीं कोई अन्यतर)
(भेदा भेद भुल जावे) नहीं कोई अन्य तर ॥ १ ॥
बहुतों के जीवन में तुमने गड़ा है, तरा नव देवालय ।
(अपने हाथस है मा (गड़ाहै गोपनमें) गोपनमें मन माफिक ॥ अपने॥
मानव जीवन है नव-जुग-तीर्थ, धर्म कर्म समन्वय ।
(नेह देवालय में) धर्म कम समन्वय ।
(नव-जुग-तीर्थ देह देवालय में
(नव जुग तीर्थ) है मानव जीवन में ।
धर्म कर्म समन्वय है मानव जीवन म ॥ २ ॥
जाहा बनगा यहा मक्का काशीधाम, नुतन जेरुशिलाम ।
(यहीतो है नववृंदावन—प्राण में ही तीर्थ समागम) ॥ यहीतो ॥
सब भेद भाव भूले जय जय बोले, गायेंगे तुम्हारा नाम ।
(समन्वय क्षेत्र में) गायेंगे तुम्हारा नाम ॥ ३ ॥
तबही नव भारत म सुनके शुभ, नुतन यह समाचार ।
(तुम आय हो आप—जाओं की दशा मलीन देखे ॥ तुम ॥

साधु भक्त साथ लेके। क्रिष्ट महम्मद लेके। गाध्य गौरचांद लेके ॥तुम॥
जनक नानक जरथुस्त्र लके—भक्त ब्रह्मानंद लेके ॥ तुम ॥
आओ बजाओ निशंक पंचमुखी शख, नव जुगे अनिवार।
(भारत में) नव जुगे अनिवार ॥ ४ ॥

---

४३. ठोठुकी.

स्वार्थेर प्रबल टान जाति प्रेम अभिमान भेदबुद्धि विद्वेष ज्वालाय।
(धरा ज्वलिया मरे—विद्वेष ज्वालाय आजि)।
(ओई शोनो शोनो गो—दुःखेर रोदन रोल)॥
दयाभक्ति स्नेहप्रीति, दलन दमने निति पथे घाटे धुलिते लुटाय।
(पथ चलिते नारि—धुलि अंध आख आजि—आधारे कातार भये।
लज्जा अपमान क्षोभे, पथ चलिते नारि)।
(कोथा आछो-आछो हे—विपद भयहारी हरि)॥
विनाशिते पापभार दुष्कृतेर अत्याचार धर्मराज्य करिते स्थापन।
(जुगे जुगे करो लीला—जुग अवतार सने)।
(लुकिहो सबे—तोमा हते सुदूर दूरे)।
(तबु हलो ना, होलो ना गो—तोमार इच्छार जय भवे)॥
धरा हबे स्वर्गधाम नव नामे प्राणाराम अशान्ति हबे अवसान।
(से दिन कबे वा हबे—आशा पथ चेये आछि)॥

---

४४. कीर्त्तन

ऊठत बैठत सोवत राम, राम बिना ना कोई रे।
जल थल महिथल राम हि रामा, तन_मन अदर सोइ रे।

तूं तो मन में बसें प्यारा तू है हमरा आधारा ।
तूहि है करतारा, तेरा देखुं यह पसारा ।
आहा ! तूं सुंदर अपारा, तुझ प जाय बलिहारा ॥ तू तो ॥

४५. कालंगड़ा (तर्ज—अब हरि की धूम)

अब खुली है हीर बहारी रे ॥ टेक ॥
सूर्ज चढ़े जोर भरे, थाड़ा देर में ।
राभ नाला नदि, तार भय अब आब में ।
होतो होती है पक्षी ललकारी रे ॥ १ ॥
फूल फुटे शोभा भरे, शाख शाख में ।
मेवा मिठा खूब अच्छा, भाड़ भाड़ में ।
आती आती चमन खुशबूदारी रे ॥ २ ॥
मालदार खुश बहार, मौज रंग में ।
कैसे घास पड़ा सब्ज अच्छा, सारे फैंस में ।
शोभा बनी है सब संसारी रे ॥ ३ ॥
शाह गदा रंगी सदा, भक्ति रंग में ।
मस्त होवो तुम भी जगके, भले काज में ।
भडे भडे दया दातारी रे ॥ ४ ॥

४६. जोग. (तर्ज—अब हरि की धूम)

पवित्र बोली उच्चार, प्यारे पवित्र बोली उच्चार ॥ टेक ॥
पवित्र राम है पवित्र माया है, पवित्र जग से हीं व्यवहार ॥ १ ॥
पवित्र तन है पवित्र मन है, पवित्र जीवन है हमार ॥ २ ॥
पवित्र काम पवित्र धाम है, पवित्रता से तूं दीन गुजार ॥ ३ ॥

पवित्र संग हो पवित्र प्रसंग हो, पवित्र हृ येहो ससार ॥ ४ ॥
पवित्र ध्यान हो पवित्र गान हो, पवित्र शांति हो मन में धार ॥ ५ ॥

४७. दोहे.

बहु शास्त्र बहु सिमृति, पेखे सर्व ढंढोल ।
पूजस नाहिं हरि हरि, नानक नाम अमोल ॥ १ ॥

पढ़ पढ़ थाके पंडिता, किनहूं न पाया पार ।
कथ कथ थाके मुनी जना, दादू नाद आधार ॥ २ ॥

दादू कुल हमारे केशवा, संगात सिरजन हार ।
जाति हमारी जगत, गुरु, परमेश्वर परिवार ॥ ३ ॥

रूप वरण याके नहिं, सहज़ु रंग न देह ।
मीत इष्ट याके नहीं, जात पात नहिं गेह ॥ ४ ॥

बैठे लेटे चालते, खान पान व्यवहार ।
जहां तहां सुमिरन करै, सहजू हिये निहार ॥ ५ ॥

पंथ पथ सब जगत के, बात बतावत तीन ।
राम हृदय मन में दिया, जन सेवा में लीन ॥ ६ ॥

क्या जीवे में जीवना, दर्शन बिन बेहाल ।
दादू सोई जीवना, प्रगट प्रसन्न लाल ॥ ७ ॥

दादु सम करि देखिये, कुंजर कीट समान ।
दादु दुविधा दुर करि, तजि आपा अभिमान ॥ ८ ॥

उत्सव कीर्तन.

१. पीलु.

क्या सुधा है नाम में तेरो, ऐ मेरो प्रीतम प्यारे ।
मेरा चित्त चकोरा होय मतवारा, नाम सुधा अब पान करे ॥ टेक ॥
परस रतन जो नाम है तेरो, लोहे को कांचन करे ।
मेरा चित्त चकोरा होय मतवारा, अब बोले मन हरे हरे ॥ १ ॥
अमृत सरोवर नाम है तेरो, भूख पियासा दूर करे ।
मेरा चित्त चकोरा होय मतवारा, अब बोले मन हरे हरे ॥ २ ॥

२. बाउल सुर—एकताल.

हमरा सकल तुम्हीं, सकल तुम्हीं,
सकल ही तो हो तुम्हीं,
जैसा काया छोड़के छाया नहीं नाथ, तैसा हम और तुम्हीं ॥ टेक ॥
हमरा बल तुम्हीं, हमरी बुद्धि तुम्हीं,
हो तुमहीं प्राण, हम प्राणी, तुम हो हृदय स्वामी ॥ १ ॥
जैसा चलाओ तुम्हीं, चलूं वैसा हम हीं,
चलावे जवी जैसा अत्र तैसा, हाथ में तुमरे हम हीं ॥ २ ॥
जैसा बोलाओ तुम्हीं, बोलूं वैसा हम हीं,
हे नाथ तुमहीं ज्ञान हम ज्ञानी, तुम हो अंतर्यामी ॥ ३ ॥

कबीर बास बड़ाई बुड़िया, इव मत डुबह कोय।
चंदन के निकट बसीये, बांस सुगंध न होय ॥ ९ ॥

कबीर सेवा को दुइ भले, एक संत एक राम।
राम जु दाता मुक्त को, संत जपावे नाम ॥ १० ॥

कबीर सभ ते हम बुरे, हम तज भलो सभ कोय।
जिन ऐसा कर बुझिया, मीत हमारा सोय ॥ ११ ॥

कबीर हमरा को नहीं, हम किसहुं की नाह।
जिन यह रचन चाईया, तिसे माह समाह ॥ १२ ॥

बिना भक्ति धोखे सभी, जोग यही आधार।
राम नाम हृदय धरो, सहजु यही विचार ॥ १३ ॥

सहजु दर्शन साध का, देखूं मारूं माथ।
जिन की कृपा पाईये, निर्भय पद निर्वान ॥ १४ ॥

कबीर जो मय चितौवना करे, क्या मेरे चित्तये होय।
अपना चित्तविया हर करे, जो मेरे चित्त न होय ॥ १

उत्सव कीर्त्तन.

१. पीलु.

क्या सुधा है नाम में तेरो, ऐ मेरो प्रीतम प्यारे ।
मेरा चित्त चकोरा होय मतवारा, नाम सुधा जब पान करे ॥ टेक॥
पारस रतन जो नाम है तेरो, लाहे को कांचन करे ।
मेरा चित्त चकोरा होय मतवारा, जब बोले मन हरे हरे ॥ १ ॥
अमृत सरोवर नाम है तेरो, भूख पियासा दूर करे ।
मेरा चित्त चकोरा होय मतवारा, जब बोले मन हरे हरे ॥ २ ॥

---

२. बाउल सुर—एकताल.

हमरा सकल तुम्हीं, सकल तुम्हीं,
सकल ही तो हो तुम्हीं;
जैसा काया छोड़के छाया नहीं नाथ, तैसा हम और तुम्हीं ॥ टेक॥
हमरा बल तुम्हीं, हमरी बुद्धि तुम्हीं;
हो तुमहीं प्राण, हम प्राणी, तुम ही हृदय स्वामी ॥ १ ॥
जैसा चलाओ तुम्हीं, चलूं वैसा हम ही;
चलावे जंत्री जैसा जन्त्र तैसा, हाथ में तुमरे हम ही ॥ २ ॥
जैसा बोलावो तुम्हीं, बोलूं वैसा हम ही;
हे नाथ तुमहीं ज्ञान हम ज्ञानी, तुम हो अंतर्यामी ॥ ३ ॥